Published by
K. Mittra,
at The Indian Press, Ltd
Allahabad

Printed by
A. Bose,
at The Indian Press, Ltd.,
Benares-Branch

भूमिका

इस छोटी सी पुस्तक में लडकियो को—कहानियो के रूप मे—शिष्टाचार, मितव्ययिता, स्वच्छता, आरोग्य, गृह-प्रबन्ध, देश-प्रेम इत्यादि अनेक उपयोगी विषयो की शिक्षा देने का प्रयत्न किया गया है। सूखे ढङ्ग से कही हुई कोई बात बच्चो पर उतना असर नहीं करती जितनी कि मनोरञ्जक कहानी के रूप में कही हुई। इसी लिए इस पुस्तक में सभी पाठ कहानी के ढङ्ग पर लिखे गये हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक पाठ के अन्त में उसके विषय पर थोड़े थोडे प्रश्न भी दे दिये गये हैं। इससे, मुझे आशा है, यह पुस्तक कन्या-पाठशालाओं के लिए, सरस पाठावली (Rapid Reader) के रूप मे, बड़ी उपयोगी सिद्ध होगी।

पुस्तक की सब कहानियाँ मेरी मौलिक नही हैं। इनमे से अनेक छायानुवाद मात्र हैं।

कृष्णनगर, लाहौर — सन्तराम

विषय-सूची

सुशील कन्या

१—मातृ-भूमि

(गीत)

ऐ मातृ-भूमि, तेरे चरणों में सिर नवाऊँ,
　　मैं भक्ति भेंट अपनी सेवा में तेरी लाऊँ।
माथे पै तू हो चन्दन, छाती पै तू हो माला,
　　जिह्वा पै गीत तू हो मैं तेरा नाम गाऊँ।
जिससे सपूत उपजे श्रीराम, कृष्ण जैसे,
　　उस तेरी धूलि को मैं निज शीश पै चढ़ाऊँ।
मानी समुद्र जिसकी धूली का पान करके,
　　करता है मान—तेरे उस पैर को मनाऊँ।
वह देश मानवाले चढ़कर उतर गये सब,
　　गोरे रहे न काले, तुझको ही एक पाऊँ।
सेवा में तेरी सारे भेदों को भूल जाऊँ,
　　वह पुण्य नाम तेरा निशि-दिन सुनूँ-सुनाऊँ।

तेरे ही काम आऊँ, तेरा ही मन्त्र गाऊँ,
मन और देह तुझ पर बलिदान मैं चढ़ाऊँ।

शब्दार्थ—शीश—सिर। पुण्य—पवित्र। निशि—रात।

प्रश्न—इस कविता को कण्ठस्थ करो।

२—सुशीला का शिष्टाचार

सेठानी प्रेमवती के यहाँ धनदेवी को किसी आवश्यक काम से जाना पड़ा। वहाँ पहुँचकर उसने द्वार खटखटाया। सुशीला ने 'कौन' कहकर दरवाज़ा खोला। उसने पहले कभी धनदेवी को न देखा था। फिर भी उसने कहा—आइए माताजी।

धनदेवी ने पूछा—क्यों बेटी, सेठानीजी घर पर हैं?

सुशीला ने नम्रता से उत्तर दिया—नहीं माताजी, मेरी माँ बाहर गई हैं। अभी आ जायँगी। उनको बुलाने को मैं नौकर भेजे देती हूँ। आपको देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी। भीतर आकर थोड़ी देर विश्राम कीजिए।

घर में जाते समय धनदेवी के पाँव में दहलीज़ की ठोकर लग गई। उससे उसकी उँगली में से रक्त निकलने

लगा। यह देख सुशीला को बहुत दुःख हुआ। वह दौड़ती हुई भीतर जाकर पानी ले आई और धार बाँधकर उँगली पर डालने लगी। इससे रक्त निकलना बन्द हो गया। अब उसने बैठने के लिए धनदेवी को पीढ़ी देकर साफ़ कपड़े का टुकड़ा लाकर पानी में भिगो दिया।

धनदेवी ने कहा—बेटी, कपड़े की कोई आवश्यकता नहीं। रुधिर बन्द हो गया है।

सुशीला—माताजी, रुधिर बन्द हो गया है तो भी भीगा कपड़ा बाँधना अच्छा होगा।

अब उसने हलके हाथ से उँगली पर कपड़ा लपेटकर डोरे से बाँध दिया। पहले वह एक साफ़ उजले गिलास में धनदेवी के लिए पानी लाई और फिर पान का डिब्बा ले आई।

धनदेवी ने कहा—बेटी, मैं पान नहीं खाती।

सुशीला—आप पान नहीं खातीं, तो सुपारी लीजिएगा ?

धनदेवी—सुपारी खाने की भी मुझे टेव नहीं।

सुशीला—तो इलायची लीजिए।

इलायची देकर सुशीला बोली—माताजी, आपकी और क्या ख़ातिर करूँ ? माँ अभी तक आई नहीं। आपको यहाँ बैठना पड़ा है, इससे मुझे चिन्ता होती है।

धनदेवी—इसकी कोई चिन्ता नहीं। मैंने पहले से सूचना दे रक्खी होती तो मुझे बाट न जोहनी पड़ती। बेटी, तेरा शिष्टाचार देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है।

सुशीला—माताजी, हमारा अहोभाग्य है जो आपके चरणों की रज हमारे घर पड़ी!

धनदेवी—इतनी छोटी आयु में आदर-सत्कार का इतना भाव और शिष्टाचार का ऐसा व्यवहार मैंने तुममें ही देखा है।

सुशीला—(लजाकर) माताजी, आपका हृदय विशाल है। इसी लिए आप प्रशंसा करती हैं। मैंने तो आपके लिए कुछ भी नहीं किया।

धनदेवी—बेटी, तू किस पाठशाला में पढ़ती है?

सुशीला—मैं आर्य कन्या-पाठशाला में, छठी कक्षा में, पढ़ती हूँ।

धनदेवी—तुम्हारी अध्यापिकाजी बहुत अच्छी है। तभी तो वे कन्याओं को सिखाती है कि कैसे बैठना-उठना चाहिए, कैसे बोलना चाहिए और आदर-सत्कार आदि कैसे करना चाहिए। मेरे पड़ोस में प्रतिभा रहती है। वह भी तेरे जैसी सयानी है।

सुशीला—हमारी अध्यापिकाजी बहुत सभ्य है। प्रतिभा हमारी ही कक्षा में है। पहले जब हमें कोई

बुलाता था तो हमें 'ओ' या 'हाँ' कहने की बान थी। उसकी जगह अध्यापिकाजी ने हमें 'हाँजी' और तू की जगह 'आप' कहने का स्वभाव डाला है। उन्होंने हमें पधारिए, विराजिए इत्यादि कहना भी सिखाया है।

ऐसी ही बातचीत हो रही थी कि सेठानी प्रेमवती आ गई। धनदेवी को इतनी देर बैठना पड़ा, इसके लिए उसने क्षमा माँगी।

धनदेवी ने सुशीला के शिष्टाचार की बहुत प्रशंसा की। फिर आवश्यक बातें करके उसने जाने की आज्ञा ली।

शब्दार्थ—आवश्यक—जरूरी। नम्रता—विनय। प्रतीक्षा करना—बाट जोहना। रज—धूल, गर्द। शिष्टाचार—सज्जनों के योग्य आचरण।

प्रश्न—सुशीला ने धनदेवी के साथ कैसा बर्ताव किया?

२—छोटी ननँद

शैल और विजया ननँद-भौजाई थीं। शैल आठ वर्ष की थी और विजया सत्रह वर्ष की। शैल माँ की बहुत लाड़ली थी। उसे सच-झूठ कहने और निन्दा-चुगली करने की कुटेव थी। वह ईर्ष्या भी बहुत करती थी।

विजया किसी से बात करती तो शैल झट माँ से कह देती। वह अपनी ओर से नमक-मिर्च भी लगाती। विजया को बैठी देखती तो जाकर माँ से कहती कि भाभी तो सारे दिन बैठी रहती हैं। विजया जो काम करती उसमें वह दोष निकालने को तैयार रहती।

शैल जो कुछ कहती उसे माँ सच मान लेती और विजया को डाँटने-डपटने के लिए तैयार हो जाती। एक दिन शैल ने कहा कि बसन्ती चाची के पास विजया भाभी अपने घर की निन्दा कर रही थी। 'बसन्ती मेरी शरीक है; वह किसी दिन ताना देगी' इस विचार से माँ का मिज़ाज चढ़ गया। उसने विजया को बुलाकर ख़ूब धमकाया।

विजया ने कहा—मैंने बसन्ती चाची से घर की एक भी बात नहीं कही। मैं इतनी मूर्ख नहीं कि बाहर जाकर घर की बातें करूँ। मैं अच्छी तरह समझती हूँ कि ऐसा करने से अपने घर की लाज जाती है। गली के सिरे पर बनिये का लड़का प्लेग से मर गया है। उसकी विधवा पत्नी निरी बारह वर्ष की लड़की है। यही बात बसन्ती चाची मुझसे कह रही थी। आप बुलाकर उनसे पूछ लीजिए।

शैल—इसमें पूछने की क्या बात है? तुम कहती न थीं कि कल हमारे घर एक चूहा मर गया था?

विजया—हाँ बहन, यह बात मैंने उससे ज़रूर कही थी, पर इससे अपने घर की निन्दा कैसे हुई ? चूहा मरने की बात झूठ नहीं थी। पिताजी ने भी म्युनिसिपैलिटी में ख़बर कर दी है। इसलिए यह बात छिपा रखने की भी नहीं है।

माँ—शैल, विजया ने चूहा मरने की बात कहने में कुछ बुरा नहीं किया। इसने बसन्ती चाची से और क्या कहा था ?

शैल—और तो कुछ नहीं कहा।

माँ—तब तो तूने अकारण ही अपनी भाभी को धमकवाया। यह बुरा किया। तुझे इसका दण्ड मिलना चाहिए।

विजया—माताजी, शैल अभी बच्ची है। इससे भूल हुई। इसे क्षमा कीजिए।

शैल का मुँह उतर गया। उसकी आँखों में आँसू भर आये। अपनी करतूत पर वह पछताने लगी। भाभी ने क्रोध करने के स्थान में उलटा उसे बचाया, इसका उस पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

एक बार शैल ने चुराकर बर्फ़ी का टुकड़ा उठा लिया। कोठे पर जाकर वह उसे खाने लगी। विजया भी वहाँ दाल सुखाने के लिए अचानक जा निकली। शैल

का मुँह बर्फ़ी से भरा हुआ था। आधी बर्फ़ी उसके हाथ में थी। भाभी को देखते ही वह घबरा गई। बर्फ़ी चुरा लाने से उसका मुँह फीका पड़ गया।

विजया ने कहा—बहन, तुम ऐसे ही काम किया करती हो! माताजी की आज्ञा बिना मैंने तुम्हें छिक्के में से बर्फ़ी उठाते देखा था। मैं यह बात माँजी से कह दूँ तो तुम्हारी कैसी दशा हो?

शैल ने गिड़गिड़ाकर कहा—भाभी, मेरी सौगन्ध है, माँजी से न कहना। मैं आज से ऐसा काम न करूँगी।

शैल ने जब देखा कि भाभी ने मेरी चोरी माता को नहीं बताई तो वह बहुत प्रसन्न हुई। भाभी पर उसका प्रेम धीरे-धीरे बढ़ने लगा।

कुछ दिन बाद शैल की माता को कुछ दिन के लिए किसी गाँव में जाना पड़ा। अपनी प्यारी शैल को वह साथ न ले जा सकी। चलते समय उसने कहा—विजया बहू, शायद मुझे दूसरे गाँव में बहुत दिन ठहरना पड़े। तुम चतुर और सयानी हो। इसलिए घर की तो मुझे कुछ चिन्ता नहीं, पर शैल को सँभालना। शैल, तू भाभी की आज्ञा में रहना। उसे शिकायत का मौक़ा न देना।

माँ के जाने के बाद शैल भाभी के अधिकार में आ गई। उसे डर था कि भाभी को मैंने बहुत सताया है,

इसलिए वह मुझे हैरान करेगी। परन्तु विजया ने माताजी के चले जाने के बाद शैल को सुधारने का निश्चय किया। वह उसको अपने पास बैठाकर नई-नई बातें सिखाती और अच्छी-अच्छी शिक्षाएँ देती थी; रोचक कहानियाँ सुनाकर और मनोरञ्जक खेल खेलाकर उसे प्रसन्न रखती थी। खाने-पीने के विषय में तो वह माँ से भी अधिक ध्यान रखती थी।

इस प्रकार कुछ दिन बीतने पर शैल के स्वभाव में बहुत अन्तर पड़ गया। उसकी कुटेव छूट गई। पहले उसे काम करना बिलकुल न भाता था, पर अब वह प्रत्येक काम चाव से करने लगी। समय पर अच्छा भोजन मिलने से उसका शरीर भी सुधर गया। वह भाभी को बहुत चाहने लगी। भाभी को बिना देखे उसे चैन न पड़ता था।

एक दिन शैल को कड़ा ज्वर हो आया। दो दिन तक वह ज़रा भी हलका न हुआ। तीसरे दिन उसे सरसाम हो गया। यह देख विजया बहुत घबराई। उसने डाक्टर को बुलाया। डाक्टर ने शैल के शरीर की जाँच करके कहा—यह ज्वर चौदह दिन में उतरेगा। तुम घबराओ मत। मैं दवा देता हूँ। वह समय पर पिलाती रहना। इसे समझा-बुझाकर दूध या चने का पानी पिला देना।

डाक्टर की बात सुनकर विजया को बड़ा दुःख हुआ। वह दिन-रात शैल के पास बैठी रहती और बड़े ध्यान से उसकी सेवा करती थी। दवा और भोजन समय पर देती। विजया ने अच्छी सेवा की, इससे शैल का शरीर बहुत नहीं सूखा। चौदहवें दिन उसका ज्वर उतर गया। भाभी ने उसकी जैसी सेवा और चिन्ता की थी, उससे शैल माँ से भी बढ़कर उस पर प्रेम करने लगी।
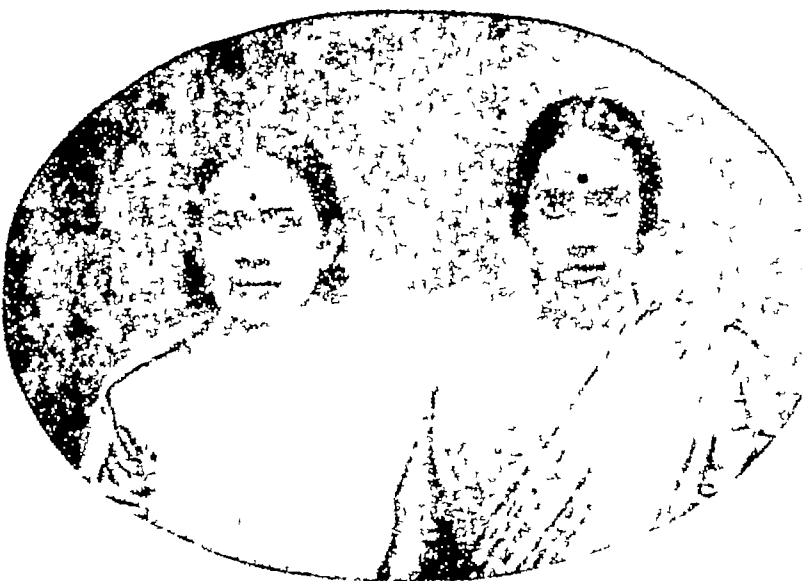
इसके कई दिन बाद माँ भी गाँव से आ गई। उसने घर का सारा प्रबन्ध बहुत अच्छा पाया। उसे डर था

कि लम्बी बीमारी से शैल का शरीर ख़राब हो गया होगा। पर शैल को देख उसे सन्तोष हुआ। माँ की अनुपस्थिति में घर में जो कुछ हुआ था वह सब शैल और विजया ने कह सुनाया। माँ ने विजया से पूछा कि शैल ने तुम्हें हैरान तो नहीं किया। इसके उत्तर में विजया ने शैल की बहुत बड़ाई की।

थोड़े दिन बाद माँ को मालूम हो गया कि शैल बहुत सुधर गई है और विजया पर बहुत प्रेम रखती है। विजया के सम्बन्ध में शैल से जब कभी माँ पूछती तब वह उसको अच्छा ही कहती। यह देख माँ ने पूछा—अरी शैल, पहले तो तू भाभी को बुरा ही कहा करती थी और मुझसे उसकी चुग़ली किया करती थी; अब तू उसी प्रकार निन्दा क्यों नहीं करती?

शैल बोली—माँ, पिछली बातों को जाने दे। अपने पिछले बर्ताव और लड़कपन के लिए अब मुझे पश्चात्ताप होता है।

शब्दार्थ—लाड़ली—प्यारी। ईर्ष्या—द्वेष, डाह। नमक-मिर्च लगाना—बढ़ा-चढ़ाकर कहना। अकारण—व्यर्थ। मनोरञ्जक—चित्त को लुभानेवाले।

प्रश्न—इस पाठ से क्या शिक्षा मिलती है? विजया और शैल की कथा सङ्क्षेप में लिखो।

४—कमला की सहेली

अध्यापिका ने क्लास में पैर रक्खा ही था कि सरोज ने उठकर कहा—अध्यापिकाजी ! मेरी जगह बदल दीजिए। मैं कमला के पास नहीं बैठूँगी। इसके सिर में जूँ रेंग रही हैं। मेरे भी पड़ जायँगी तो माता मुझ पर ग़ुस्सा होगी।

पद्मा—अध्यापिकाजी, सरोज ठीक कहती है। मैंने भी कमला के सिर में जूँ देखी हैं। इसके केशों से दुर्गन्ध आती है। पास बैठा नहीं जाता। यह हर वक़्त सिर खुजलाया करती है।

अध्यापिका ने कहा—कमला, तू इतनी मैली क्यों रहती है ? छुट्टी के दिन सिर क्यों नहीं धो लिया करती ? तेरी माता घर में क्या किया करती है ? उसे इतना भी शऊर नहीं कि तीसरे-चौथे या पाँचवें-छठे दिन तेरे बाल धो दिया करे ? जूँओं के मारे सिर को हर वक़्त खुजलाते रहने से तुझे चैन कैसे पड़ता होगा ? तू तो पाठ को भी ध्यान से न सुन सकती होगी।

आँखों में आँसू भरकर कमला बोली—अध्यापिकाजी, मेरे माता नहीं है। उसे मरे आज दो वर्ष हुए। माँ होती तो मेरी ऐसी ही दशा होती ? जूँओं के कारण

सब लड़कियाँ मुझसे दूर भागती हैं। मैं बालों को बहुतेरा साफ़ करती हूँ फिर भी जूँएँ नहीं जातीं।

यह सुनकर अध्यापिकाजी को बड़ी दया आई। उनके मुख से अपने आप ये शब्द निकल पड़े—"अपनी माँ ठण्डी छाँह।" फिर वे कमला से कहने लगीं—बेटी, तू घबरा मत। मैं तुझे एक उपाय बताती हूँ। तेरी सब जूँएँ दूर हो जायँगी। तेरे सिर की रूसी भी जाती रहेगी।

यह सुनकर कमला बहुत प्रसन्न हुई। वह बड़ी नम्रता के साथ अध्यापिकाजी से जूँएँ दूर करने का उपाय पूछने लगी।

अध्यापिका ने कहा—देखो, जूँएँ पड़ने का कारण मैल होता है। यदि तुम अपने केशों को रोज़ सवेरे कंघी करके साफ रखा करो तो फिर जूँएँ न पड़ें। परसों रविवार है। पाठशाला में छुट्टी है। अपने पिता से कहकर तुम बाज़ार से दो पैसे का चिरायता मँगा लेना। उसे पानी में उबाल लेना। उबल जाने पर चूल्हे पर से उतारकर उसे ठण्डा कर लेना जब ठण्डा हो जाय तो उसमें केशों को ख़ूब भिगो लेना। चिरायते के पानी को खोपड़ी पर भी ख़ूब मलना। बालों को इसी पानी में थोड़ी देर भीगे रहने देना। फिर गुनगुने पानी से धो डालना। सब जूँ मरकर निकल जायँगी।

प्रियंवदा—अध्यापिकाजी, एक बार मेरे सिर में भी जूँएं पड़ गई थीं। मेरी माँ ने तो यों किया था कि थोड़ी सी नसवार और तुलसी के पत्ते लेकर उनको ताँबे के कटोरे में ख़ूब रगड़ा। फिर उसमें नींबू का रस मिलाकर रात को, सोते समय, मेरे केशों में अच्छी तरह से लगा दिया। कपड़ों को ख़राब न होने देने के लिए उसने मेरे सिर पर एक कपड़ा बाँध दिया। दूसरे दिन सवेरे उसने गुनगुने पानी और कार्बोलिक साबुन से मेरा सिर धो दिया। इससे सब जूँएँ और लीखें तक दूर हो गई। मेरी माँ कहती थी कि लीखें जूँओं के अंडे होती हैं। जब तक इनको नष्ट नहीं किया जाता तब तक जूँएँ फिर पैदा होती रहती हैं। इसलिए लीखे ज़रूर निकाल देनी चाहिएं। मेरी माता ने एक तेल भी बना रक्खा है। उसने नमोली की गुठली और मीठे तेल को उबालकर उसे तैयार किया है। मैं दूसरे-तीसरे उसे लगाती रहती हूँ। तब से मेरे कभी जूँ नहीं पड़ी।

अध्यापिका—प्रियंवदा, तुम्हारी माता का उपाय भी बहुत अच्छा है। उससे भी जूँएँ नष्ट हो जाती हैं। पर इस बेचारी के क्या माँ है जो इसके लिए इतना कष्ट उठावे?

प्रियंवदा—अध्यापिकाजी, इसमें कष्ट क्या है? नसवार, तुलसी के पत्ते और नींबू का रस रगड़कर मैं ला

दूँगी। इसका घर मेरे घर के निकट ही है। मैं इसके सिर में लगा भी दूँगी।

प्रियंवदा की बात सुन अध्यापिकाजी बहुत प्रसन्न हुईं। कमला ने भी उठकर प्रियंवदा को धन्यवाद दिया।

छुट्टी होने पर प्रियंवदा ने घर जाकर अपनी माता से वे सब बातें कह दीं जो पाठशाला में कमला के विषय मे हुई थीं। उसकी माता ने झट तमाकू और तुलसी के पत्तों में नीबू का रस मिलाकर ताँबे के बर्तन में रगड़ डाला। रात को प्रियंवदा को साथ लेकर वह कमला के घर गई। उसने अपने हाथ से उसके केशों में उसे लगा दिया। सबेरे उठकर कमला ने कार्बोलिक साबुन से सिर धो डाला। कुछ देर बाद प्रियंवदा भी घर से तेल लेकर आ गई। अब कमला के बाल गीले नहीं थे। प्रियंवदा ने बड़े प्रेम से उसके केशों में तेल चुपड़ दिया और कंघी करके बाल सँवार दिये।

सोमवार को जब कमला पाठशाला गई तो उसके साफ़-सुथरे और चमकते हुए बाल देखकर सभी लड़कियाँ दङ्ग रह गईं।

कमला का शरीर सुन्दर था। मैला रहने के कारण ही लड़कियाँ उससे दूर भागती थीं। सिर और मुँह धुल जाने से उसका रूप निखर आया। तब तो

सभी लड़कियाँ उसको सहेली बनाने का यत्न करने लगीं। कमला पढ़ने में भी पहले से बहुत तेज़ हो गई। अब वह सात दिन बाद इसी तरह सिर धो लेती है। उसने भी नमोली का तेल बना लिया है। अब कभी किसी ने उसके सिर में जूँएँ नहीं देखीं।

शब्दार्थ—दुर्गन्ध—बदबू। अपनी माँ ठण्डी छांह—लडकियो को माता ही एकमात्र सहारा है। दङ्ग रह गई—अचम्भे मे आ गई।

प्रश्न—पाठशाला की लडकियाँ कमला के पास क्यो नही बैठना चाहती थीं? जूँएँ कैसे नष्ट की जा सकती हैं?

५—लड़ाकी पड़ोसिन

एक स्त्री बड़ी लड़ाकी थी। उसे बिना लड़े रोटी न पचती थी। वह बहाना निकालकर, बिना कारण ही, लड़ने को तैयार हो जाती थी। मुहल्ले के लोग उससे तङ्ग आ गये थे। इससे उन्होंने, उस स्त्री के साथ लड़ने के लिए, बारियाँ बाँध रक्खी थीं। प्रत्येक घर की स्त्री को, अपनी बारी पर, उस स्त्री से लड़ना पड़ता था।

एक दिन सुशीला नाम की एक भली स्त्री की बारी आई। उस बेचारी को लड़ना पसन्द न था। बारी

आ गई थी, इसलिए लड़े बिना छुटकारा न था। पिछली रात को उसके घर एक महात्मा साधु आ गया था। उसके लिए रसोई जल्दी बनानी थी। इससे वह घबराई हुई जान पड़ती थी। साधु ने पूछा—'बहन, तुम आज उदास क्यों दीखती हो?' सुशीला ने कहा—महाराज, आज आपके लिए जल्दी रसोई बनानी है। पर अभी एक लड़ाकी स्त्री यहाँ आवेगी। उसके साथ लड़ने की आज मेरी बारी है। लड़ाई में लग जाऊँगी तो रसोई में देर हो जायगी। इसी से मुझे चिन्ता हो रही है।

लड़ाकी स्त्री का सब हाल जानकर साधु बोला—सुशीला बहन, तुम चिन्ता न करो। आराम से रसोई-घर में जाकर काम करो। उस स्त्री के आने पर, तुम्हारे बदले, मैं निपट लूँगा।

सुशीला रसोई-घर में चली गई। इतने में वह स्त्री, गालियाँ देती हुई, दरवाज़े के सामने आ गई। वह सुशीला से कहने लगी—'आ, लड़ने के लिए मेरे सामने निकल आ।' साधु ने कहा—'बहन, आज सुशीला का काम मैं करूँगा। उसकी ओर से मैं तुम्हारे साथ लड़ूँगा।' स्त्री ने कहा—'तुझमें बल है तो तू ही सामने आ।' साधु ने कहा—'मैं तैयार हूँ।' अब उसने मौन व्रत धारण कर लिया। स्त्री ने गालियों की झड़ी लगा दी,

पर साधु कुछ न बोला। इससे स्त्री चिढ़ गई और गला फाड़-फाड़कर लड़ने लगी। उसने हज़ारों गालियाँ दीं, पर साधु ने उसकी ओर आँख उठाकर देखा भी नहीं।

अन्त में स्त्री थककर बड़बड़ाती हुई चली गई। उसके चले जाने पर सुशीला बाहर आई और सिर पर आये हुए संकट के टल जाने से प्रसन्न हुई।

साधु ने कहा—बहन, लड़ाई से बचने का मार्ग मैंने तुझे बता दिया है। लड़नेवाले के साथ यदि हम भी लड़ने लग जायँ तो वह भड़क उठता है। हम न बोलें तो वह थककर चला जाता है। मैंने यही तो किया। तुम्हारे मुहल्ले की स्त्रियाँ ऐसा ही करने लगें तो यह स्त्री लड़ना भूल जाय।

जो लड़ने के लिए बहाना ढूँढ़े उसे इसके लिए कोई अवसर ही न दे। जो बिना कारण लड़ने के लिए तैयार हो उससे दूर रहे। बहुत मर्तबा छोटी सी बात पर लड़ाई हो जाती है। अपना दोष हो तो हमें क्षमा माँग लेनी चाहिए। इससे लड़नेवाले का क्रोध शान्त हो जायगा। कोई हमारा अपराध करे तो उसे क्षमा कर देना चाहिए, क्योंकि सभी से कभी न कभी दोष हो ही जाता है। किसी से भूल हो जाय तो धीमे से उसे समझा देना चाहिए। किसी से कोई नुक़सान हो जाय तो

लड़ने से वह पूरा नहीं हो जाता। इकट्ठे रहनेवालों की, आपस में, थोड़ी-बहुत मुठभेड़ हो ही जाती है। किसी का हाथ छू जाता है तो किसी का पाँव। बार-बार लड़ने से मनुष्य का मान नहीं रहता।

शब्दार्थ—मौन व्रत—चुप रहने का पक्का इरादा, चुप्पी।

प्रश्न—मुहल्ले की स्त्रियाँ उस लड़ाकी स्त्री से किस प्रकार लड़ती थीं? सुशीला को साधु ने क्या उपदेश दिया?

६—मीठे बोल

मीठा होता ख़स्ता खाजा,
मीठा होता हलुवा ताज़ा,
मीठे होते गट्टे गोल,
सब से मीठे मीठे बोल।

मीठे होते आम निराले,
मीठे होते जामुन काले,
मीठे होते गन्ने गोल,
सब से मीठे मीठे बोल।

मीठा होता दाख-छुहारा,
मीठा होता शक्करपारा,

मीठा होता रस का घोल,
सब से मीठे मीठे बोल।

मीठी होती पुआ-सुहारी,
मीठी होती कुसली न्यारी,
मीठे रसगुल्ले अनमोल,
सब से मीठे मीठे बोल।

शब्दार्थ—शक्करपारा—एक प्रकार की मिठाई।
प्रश्न—इस कविता से क्या शिक्षा मिलती है?

७—गहनों की चाह

ललिता जब ससुराल गई तब उसकी उम्र छोटी थी। पीहर में उसने अपना समय खेल-कूद में बिताया था। इसलिए उसमें बालक-बुद्धि बहुत थी। उसको गहने पहनने का बड़ा शौक़ था। एक बार दादा-ससुर ने, स्नान कर चुकने पर, ललिता से चन्दन घिसने का हुरसा लाने को कहा। ललिता बोली—'दादाजी, यह हुरसा मुझसे नहीं उठता।' इस पर दादा-ससुर आप जाकर हुरसा उठा लाया और काम चला लिया।

कुछ महीने बीत जाने पर ससुरजी वही हुरसा लेकर सुनार के यहाँ गये। उन्होंने वह हुरसा चाँदी में मढ़ा

दिया और उसके चारों ओर छोटे-छोटे घुँघुरू लगवा दिये। घर आकर उन्होंने ललिता से कहा—'बेटी, मैं तुम्हारे लिए एक बड़ा गहना बनवा लाया हूँ।' वे उसे कपड़े में से निकालकर बोले—'देखो तो, यह तुम्हें अच्छा लगता है?' चाँदी का चमकता हुआ कण्ठा सा देखकर ललिता फूली न समाई। चारों ओर घुँघुरू लगे हुए थे। ये बहुत पसन्द आये। उसने उसे लेकर गले में डाल लिया। यह हार उसे भारी तो बहुत लगा पर इस विचार से कि दादाजी ने मेरे लिए बड़ा गहना बनवाया है, वह .खुश हुई। वह दिन-रात उसे गले में पहने रहती।

एक दिन ललिता पीसने बैठी थी। पीसते समय जब वह हिलती तो वह पत्थर उसकी छाती में लगता। इतने पर भी वह उसको उतारना न चाहती थी। एक दिन वह पीस रही थी, कि दादाजी घर आये। हार की आवाज़ सुनकर बोले—'बेटी ललिता, तुम इस हार को उतार दो।' ललिता बोली—'नहीं दादाजी, यह मुझे बहुत प्यारा है।' दादाजी बोले—'पर यह तो तुम्हारी छाती में टकराता है। इससे तुम्हें छयी रोग हो जायगा।' उन्होंने बड़ा आग्रह करके वह गहना उतरवाया।

हार को हाथ में लेकर बुड्ढे ने एक ओर से उसका पत्तर उखाड़ा, तो उसके भीतर का पत्थर दीखने लगा।

वे ललिता को दिखलाकर बोले—बेटी, उस दिन तुमसे वह हुरसा नहीं उठता था। पर उसी को चाँदी में मढ़ा दिया तो यह गहना बन गया। इस भारी पत्थर को अब तू दिन-रात गले में कैसे बाँधे रहती है?

गहने में पत्थर देखकर ललिता दङ्ग रह गई। कुछ भी न कहकर वह आँखें नीची किये भूमि की ओर देखने लगी।

दादाजी ने कहा—स्त्रियों को गहने बहुत भाते हैं। उँगलियाँ गल जायँ, चलने में कष्ट हो, तो भी वे अँगूठड़े, पायज़ेब आदि पहने ही रहती हैं। कोई-कोई तो पाँव में तीन-तीन चार-चार सेर की कड़ियाँ पहनती हैं। इतने पर भी कुछ और पहनना चाहती हैं। क़ैदियों की बेड़ियों से भी इनका भार अधिक होता है तो भी वे उन्हें गहना ही समझती हैं। कानों को कई जगह से छिदवाती हैं। उनमें टटके, फूल, बालियाँ आदि डालती हैं। नाक में नथुनी और कील पहनती हैं। गले में चन्दन-हार, हीरा-कण्ठी, तुलसीपाटी आदि पहनती हैं। हाथ में मोटी-मोटी चूड़ियाँ, कड़े और कङ्गन आदि बहुत से गहने पहनती हैं। सिर में फूल, चौक, नाग-फणी आदि गहने पहनती हैं। स्त्रियों का सारा शरीर गहनों से लदा हो तो भी वे और गहने लेने से इन्कार न करेंगी।

बड़ी विचित्र बात है कि बहुत से और भारी-भारी गहनों से वे घबरातीं नहीं। हलका और थोड़ा गहना हो तो शोभा देता है। उसे पहनने में भी कष्ट नहीं होता।

ललिता—दादाजी, आपका कहना बहुत ठीक है। अब मैं बहुत गहने नहीं माँगूँगी।

शब्दार्थ—पीहर—मा-बाप का घर। क्षयी रोग—तपेदिक, क्षय रोग।

प्रश्न—दादा-ससुर ने जब ललिता से चन्दन घिसने का हुरसा लाने को कहा तो उसने क्या उत्तर दिया? दादा ने ललिता को कैसे लज्जित किया? गहना पहनना हो तो कैसा पहनना चाहिए?

८—वनस्पति की कथा

गरमी के मारे पसीना निकल रहा था। इसलिए भोजन करके लक्ष्मीदेवी के सभी बच्चे चाँदनी रात में छत पर आ बैठे थे। छोटी लड़की सविता ने कहा—बहन रामदेवी, यदि आज तुम एक कहानी सुनाओ तो कैसा आनन्द हो।

यह सुनकर सब बच्चे एक साथ बोल उठे—दीदी, आज तुम कहानी ज़रूर सुनाओ।

रामदेवी ने कहा—तुम्हारी इच्छा है, तो मैं एक मनोहर और शिक्षादायक कहानी सुनाती हूँ। परन्तु याद रक्खो, बहुत सी कहानियाँ बनावटी होती हैं। लो, सुनो—

एक बार राजा इन्द्र ने सभा की। इन्द्राणी भी सिर पर मुकुट रखकर सभा में आ विराजी। सभा में देवों और देवियों का जमघट हो गया। सब के शान्त हो जाने पर इन्द्राणी ने पूछा—महाराज, आप पृथ्वी पर वर्षा करके धरती माता की सहायता से बड़ी-बड़ी और सुन्दर वनस्पतियाँ उत्पन्न करते हैं। ये वनस्पतियाँ अपने-अपने कर्तव्य का पालन किस प्रकार करती हैं?

इन्द्र—देवि, इस बात की याद दिलाकर तुमने बहुत अच्छा किया। वनस्पतियों के विषय में मैंने भी बहुत दिन से कुछ प्रबन्ध नहीं किया। चोबदार!

चोबदार—जी महाराज, सेवक को क्या आज्ञा है?

इन्द्र—तुम गर्जना देवी से कहो कि ज़ोर से नौबत बजाकर सब वनस्पतियों को तैयार कर दे। बिजली देवी से कह दो कि अपनी एक चमक से सब वनस्पतियों को यहीं आने की आज्ञा दे दे। हर जाति की वनस्पति की ओर से एक-एक का आना काफ़ी है। जो यहाँ आयेंगे उन्हें मैं बोलने की शक्ति दूँगा। इससे वे अपनी कहानी आप सुना सकेंगे।

गर्जना और बिजली ने तुरन्त राजा की आज्ञा का पालन किया। इसलिए प्रत्येक जाति की एक-एक वनस्पति सभा के सामने आकर खड़ी हो गई। तरह-तरह की वनस्पतियाँ देखकर इन्द्राणी को बहुत आनन्द हुआ। राजा इन्द्र ने आज्ञा दी कि तुम लोग बारी-बारी से आकर बताओ कि तुम अपना काम किस प्रकार करती हो।

यह आज्ञा पाकर पहले ताड़ जाति के ऊँचे पेड़ों में से नारियल आगे आकर बोला—महाराज, मैं अपने कर्त्तव्य का पालन भली भाँति करता हूँ। मेरे फलों की इच्छा सभी करते हैं। मैं फल में इतना अच्छा, साफ़ और मीठा पानी भर रखता हूँ कि उसे पीकर लोग अपनी प्यास बुझाते हैं। फल में से तेल निकालकर उसे कई तरह से काम में लाते हैं। मेरे पत्ते भी कुछ कम काम की चीज़ नहीं। मेरे शरीर को चीरकर लोग परनाले बनाते हैं। हममें से कोई खजूर, कोई क़हवा और कोई साबूदाना देता है। लोग हमें छेदकर बहुत-सा रस निकाल लेते हैं। तुरन्त पीने से वह गुण देता है। परन्तु बेसमझ लोग यदि उसे बहुत देर रखकर, खट्टा हो जाने पर, पीवें और बदमस्त हो जायँ तो इसमें हमारा क्या दोष? बुद्धिमान् लोग इसी रस से खाँड़ और चीनी बनाते हैं।

इन्द्राणी—तुम तो लोगों की अच्छी सेवा करते हो, इसलिए तुम दाहनी पंक्ति में आकर पहले नम्बर पर बैठो।

अब बड़े पेड़ों में से आम आगे आकर बोला—महाराज, हम ऐसा अमृत-फल लोगों को देते हैं जिसे खाने की इच्छा देवता भी करते हैं। हमारे फल से कई काम लिये जाते हैं। बौर आते ही लोग हमें चैन नहीं लेने देते। कच्चे या सड़े गले फल बहुत खाकर लोग बीमार हो जायँ तो हमारा कोई चारा नहीं। पक जाने पर हम रङ्ग बदलकर लोगों को सूचना देते हैं कि अब हमारा फल खाने लायक़ हो गया। फिर भी लोग परवा नहीं करते। हममें से कोई खिरनी, कोई महुआ, कोई सेव, कोई नाशपाती, कोई संतरा और कोई कटहल देता है। जो पेड़ मनुष्य के खाने लायक़ फल नहीं देता, उससे दूसरे लाखों प्राणियों का निर्वाह होता है।

इन्द्राणी ने प्रसन्न होकर आम को दूसरे नम्बर पर जगह दी। वन के पेड़ों में से सागू ने आकर प्रणाम किया और कहा—महाराज, हम वन में रहनेवाले पेड़ दूसरे पेड़ों जैसे खाने लायक़ फल बहुत नहीं देते। फल देनेवाले अच्छे पेड़ असल में हमारे देश के ही रहनेवाले हैं। हम न हों तो मनुष्य को ईंधन और इमारत की लकड़ी के लिए कितनी कठिनाई हो। दवा-दारू में काम आनेवाली

बहुत सी वस्तुएँ हमीं देते हैं। हमारे यहाँ लाखों पशु-पक्षियों का निर्वाह होता है। हम वर्षा को खींच लाते और पानी इकट्ठा कर रखते हैं। जो लोग हमें छुटपन में ही काट डालने या जङ्गल को उजाड़ देने की मूर्खता करते हैं इससे उन्हीं को कष्ट उठाना पड़ता है।

इन्द्राणी——ओहो! तुम भी बड़े उपयोगी काम करते हो। इसलिए तुम आम के निकट जाकर वैठो।

पेड़ों की बारी पूरी हो गई। इतने में घास की जाति में से गन्ना आगे आया। उसने कहा——मुझमें मनुष्य-मात्र का मुँह मीठा करने की शक्ति है। मेरा रस अमृत जैसा मीठा है। गुड़, शक्कर और खाँड़ मेरे ही रस से बनती है।

इन्द्राणी——यह कौन सी बड़ी बात है। जिसमें मिठास हो उसमें से गुड़, शक्कर और खाँड़ निकल सकती है। ज्वार और मकई के डंठल में से भी खाँड़ निकलती है।

गन्ना——देवि, क्षमा माँगकर कहता हूँ कि ज्वार और मकई मेरी ही बहनें तो हैं। दूसरे जो पेड़-पौदे मीठे हैं या जिनमें से गुड़-शक्कर निकल सकती है, उनके साथ मिठास के नाते मेरा बाप-दादा का सम्बन्ध है। हमारे वर्ग में काम आनेवाले पौदों की कमी नहीं। मनुष्य जाति का सबसे अधिक ताक़त देनेवाला भोजन—गेहूँ—भी घास

ही देती है। मनुष्य-जाति के एक बड़े भाग का स्वादिष्ठ भोजन चावल भी घास देती है। मकई, जुआर, बाजरा आदि अनेक प्रकार के नाज हमारे वर्ग में हैं।

इन्द्राणी—तुम तो सबसे अधिक लाभदायक जान पड़ते हो। इसलिए तुम्हें नारियल से भी ऊपर बैठने की आज्ञा दी जाती है।

प्रणाम करके गन्ना अपनी जगह पर जा बैठा। इतने में चिकना और गोलगप्पा सा फूला हुआ कद्दू, लुढ़कता-लुढ़कता, आगे आया। उसे देख सभा की हँसी न रुकी। वह बोला—हमारी उत्पत्ति बेल से होती है। बड़े-बड़े पेड़ तो छोटे-छोटे फल पैदा करते हैं, पर पतली बेलें बीस-बीस सेर या मन-मन भर का फल दे सकती हैं। मनुष्य को हम परवल, लौकी, पेठा, रामतुरई, करेला, सेम, परोल इत्यादि बहुत तरह की तरकारियाँ देती हैं। हममें से कितनी बेलें तो सुगन्धित फूल देकर मनुष्य को प्रसन्न करती हैं।

इन्द्राणी—ठीक है। तुम भी मनुष्य की उपयोगी सेवा करते हो। पर तुम्हें घास से ऊँचा स्थान नहीं मिल सकता।

कद्दू अपनी जगह गया। इतने में प्याज़ देवी आ गई। उसकी लाल साड़ी देखकर सभा प्रसन्न हुई। वह बोली—मुझे छोटे पौदों ने भेजा है। बेलों से हमारा

मूल्य अधिक है। मेरा उपयोग सारे संसार में होता है। हममें से कितने ही पौदे दाल देते हैं। वे गेहूँ से भी अधिक पुष्टिकारक हैं। मटर, अरहर, गवॉरफली, मोठ, मूँग, रुऑह आदि के सामने कद्दू और तुरई किसी गिनती में नहीं। कितने ही पौदे कन्द देते हैं। आलू चावल की ज़रूरत को पूरा करता है। ज़मींक़न्द, रतालू, शकर-क़न्द और गाजर आदि को लोग चाव से खाते हैं।

इन्द्राणी—तुम्हें हम गन्ने के पीछे बैठने की आज्ञा देती हैं।

अब राजा इन्द्र ने सब वनस्पतियों को शाबाशी देकर सभा विसर्जित कर दी।

सविता ने कहा—दीदी, तुमने आज बड़े मज़े की कहानी सुनाई। मैं सारी याद कर लूँगी।

शब्दार्थ—इन्द्र—देवताओं का राजा। इन्द्राणी—राजा इन्द्र की रानी। वनस्पति—पेड़-पौदे। सुगन्धित—खुशबूदार।

प्रश्न—ताड़ जाति के पेड़ हमारे किस काम आते हैं? गन्ना किस जाति में से है? बेलों से मनुष्यों का कौन सा उपकार होता है? पशुओं के बारे में भी ऐसी ही एक कहानी लिखो।

६—सङ्गीत

राय रणजीत गोपालजी के यहाँ आज ख़ूब धूम-धाम है। उनके छोटे बेटे का विवाह हुआ है। नई दुलहिन आई है। घर भर में आनन्द-मङ्गल हो रहा है। बिरादरी की सभी स्त्रियाँ इकट्ठी हुई हैं। अभी सङ्गीत होगा। नई बहू भी आयगी। उसका सङ्गीत सुनने के लिए सभी उत्सुक हैं। बड़े घर की बेटी है। देखें, मायके में कुछ सीखा भी है या योंही इतनी बड़ी हो गई है।

राय साहब की बेटी व्रजरानी ने अपनी सखी अमृतलता को भी इस उत्सव पर बुलाया है। अमृतलता के घर इस प्रकार गाने-बजाने की रीति नहीं है। उसकी बिरादरी में नई बहू, गाना तो दूर रहा, घूँघट उठाकर बात तक नहीं करती। हाँ, दूसरी स्त्रियाँ सिठनी आदि गन्दे गीत ज़रूर गाती हैं। इसी लिए उसे यह अनोखा ठाठ-बाट देखकर आश्चर्य हो रहा है। वह भी यह शुद्ध सङ्गीत सुनने के लिए अधीर हो रही है।

इतने में व्रजरानी ने आकर कहा—चलो बहन, सङ्गीत होने लगा।

अमृतलता उसके साथ चल पड़ी। आगे जाकर क्या देखती है कि आँगन में एक ऊँची वेदी बनी है।

उस पर सुन्दर ग़लीचे बिछे हैं। ऊपर एक बढ़िया आसन है। आसन के दोनों ओर गुलदस्ते रक्खे हैं। आसन पर नई बहू हाथ में सितार लिये बैठी है। वेदी के नीचे, फ़र्श पर, बहुत-सी युवतियाँ सुन्दर वस्त्र पहने बैठी हैं। व्रजरानी वेदी के पास जाकर बैठ गई। उसने अपनी सखी को भी निकट ही बैठा लिया।

व्रजरानी की माता ने कहा कि छोटी बहू गायगी तो तबला कौन बजायगी? सब स्त्रियाँ बोल उठीं—आज व्रजरानी तबला बजावे। वही सबसे अच्छा बजाती है।

पहले तो व्रजरानी ने कुछ नाँहीं-नूँहीं की, परन्तु वह जल्दी ही मान गई। उसने तबला लेकर उस पर उड़द का आटा लगाया और हथौड़ी से ठोक-ठोककर उसकी रस्सियों को कस करके आवाज़ ठीक की। उधर नई दुलहिन ने भी सितार की खूँटियों को मरोड़कर तारों का स्वर बाँधा।

जब तबला और सितार ठीक हो गया तो संगीत आरम्भ हुआ।

नई बहू ने ननँद से पूछा—बहन, क्या सुनाऊँ ?

इस पर ब्रजरानी की बड़ी बहन चन्द्रकला बोली—बसन्त है। फाग के दिन हैं। होली ख़ूब रहेगी।

अब नई बहू कान्ता गाने लगी—"कलियां ख़ूब खिलीं, यह तो आई बसन्त बहार।"

उसका ताल-स्वर इतना शुद्ध और उसकी आवाज़ इतनी सुरीली थी कि सुनकर सभी मुग्ध हो गई। बलिहार, बलिहार की ध्वनि से सारा भवन गूँज उठा। ब्रजरानी तबला बजाने में बड़ी निपुण थी। उसने परीक्षा के लिए कई बार नई बहू को बेताल करने का यत्न किया। परन्तु कान्ता ने तनिक भी भूल न की।

थोड़ी देर तक नई दुलहिन के संगीत की बानगी देखने के बाद बाक़ी स्त्रियाँ भी साथ गाने लगीं। 'काफ़ी' के बाक़ी अन्तरे इस प्रकार थे—

"जूही भी फूली, चमेली भी फूली, फूलों से झुक रही डार।
फूली कुंज गली। यह तो आई बसन्त बहार०।
ब्रज के बाल गुलाल उड़ाये, कृष्ण लिये पिचकारी।
रोरी ख़ूब बनी। यह तो आई बसन्त बहार०।

कोकिल-कण्ठ से गान करती हुई पन्द्रह-बीस युवतियाँ जब एक साथ ताल देती थीं तो सुननेवालियों पर अद्भुत प्रभाव पड़ता था। ऐसा जान पड़ता था मानो इन्द्रलोक में देव-बालाएँ उत्सव मना रही हैं।

कोई आध घंटा तक संगीत-रूपी अमृत का प्रवाह बहता रहा। अमृतलता के लिए ऐसा संगीत सुनने का यह पहला अवसर था। वह नई दुलहिन की प्रशंसा करते न थकती थी। उसने ब्रजरानी से कहा—बहन, तुम लोगों में यह बड़ी अच्छी प्रथा है। हमारे यहाँ तो स्त्रियों को गाना ही नहीं आता। गाती भी हैं तो प्रायः गन्दे गीत। आपने यह गाना-बजाना कहाँ सीखा?

ब्रजरानी ने उत्तर दिया—बहन, गाना-बजाना भी एक कला है। जिस प्रकार तुम स्कूल में अध्यापिका से लिखना-पढ़ना सीखती हो उसी प्रकार संगीत सीखने के लिए भी परिश्रम करना पड़ता है। किसी संगीत जाननेवाली स्त्री को गुरु बनाना पड़ता है। पर जिन परिवारों मे दो-एक स्त्रियाँ संगीत सीख लेती हैं वहाँ फिर दूसरी लड़कियों को इसे सीखने में बड़ा सुभीता हो जाता है।

अमृतलता बोली—बहन, सङ्गीत सीखने को तो मेरा भी जी ललचा रहा है। पर हमारे यहाँ यदि कोई

लड़की इस प्रकार तबला और सितार लेकर गाने लगे तो सभी उसे कञ्चनी कहकर लज्जित करने लगें।

व्रजरानी ने कहा—बहन, ये तो मूर्खों की बातें हैं। अब समय बदल गया है। यदि तुम शुद्ध ताल-स्वर के साथ अच्छे-अच्छे भजन गाओगी तो कौन बुद्धिमान् बुरा कहेगा ? देखो, प्राचीन काल में सरस्वती आदि देवियाँ सभा-समाज में बैठकर वेद-मन्त्रों का गान किया करती थीं। सङ्गीत से चित्त प्रसन्न रहता है और स्वास्थ्य सुधरता है। अच्छी गानेवाली का आदर सब कहीं होता है।

अमृतलता बोली—ठीक कहती हो बहन। हमारे शहर में आपटे नाम के एक महाराष्ट्र-सज्जन रहते हैं। उनकी स्त्री बहुत अच्छा गाना जानती है। कुछ मासिक देकर मैं उससे संगीत सीखूँगी।

शब्दार्थ—प्रथा—रवाज। प्रवाह—बहाव, धारा। कुंज—बाग में छायादार स्थान। डार—डाली। गेरी—एक प्रकार का लाल रंग। शुद्ध संगीत—वह संगीत जो ठीक ताल-स्वर के साथ गाया जाय। व्रज—आगरा, मथुरा और वृन्दावन का इलाक़ा व्रजमण्डल कहलाता है।

प्रश्न—संगीत के लाभों पर एक छोटा सा प्रस्ताव लिखो।

१०—रत्नकोर और देवकी

किसी गाँव में करोड़ीमल नाम का एक सेठ रहता था। उसकी पुत्र-वधू का नाम रत्नकोर था। करोड़ीमल के पड़ोस में तीर्थराम और उसकी स्त्री देवकी रहा करती थी। तीर्थराम मज़दूरी करके गुज़र करता था। वह रोज़ जो कुछ कमाता उसे खाने-पीने में खर्च कर देता था। उसे और उसकी स्त्री को रोज़ हलवा और खीर खाने की आदत पड़ गई थी।

देवकी का स्वभाव बहुत अच्छा था। इससे उसका और रत्नकोर का बहनपन हो गया था। अवकाश मिलने पर रत्नकोर उसके घर जाकर बैठती थी। देवकी को रोज़ अच्छी-अच्छी चीज़ें खाते देख एक दिन रत्नकोर ने अपने ससुर से कहा—पिताजी, हमारे घर इतना धन है तो भी हम दाल-रोटी ही खाते हैं। किन्तु तीर्थराम रोज़ मजूरी करके दस-बारह आने लाता है, फिर भी वे दोनों हलवा और खीर खाते हैं! अपने घर क्या कमी है जो रोज़ अच्छी-अच्छी चीज़ें नहीं बनतीं?

करोड़ीमल समझ गया कि देवकी की कुसङ्गति का बुरा असर बहू पर पड़ा है। इससे देवकी की सङ्गति छोड़ने को कहूँगा तो यह बुरा मानेगी। इसलिए कोई

युक्ति करनी चाहिए। कुछ दिन बीतने पर सेठ करोड़ीमल ने रत्नकोर से कहा—तुम्हारी सहेली बहुत ग़रीब है। इसलिए मैं तुम्हें दस रुपये देता हूँ। इन्हें चुपचाप उसके घर में रख देना। देवकी को देने जाओगी तो वह लेगी नहीं।

सहेली को सहायता देने का मौक़ा मिला जानकर रत्नकोर बहुत प्रसन्न हुई। वह दस रुपये की पोटली छिपाकर उसकी चक्की के नीचे रख आई।

सवेरे देवकी चक्की पीसने बैठी तो पैर में वह छोटी सी पोटली लगी। उसने पोटली को उठाकर खोला तो उसमें से दस रुपये निकले। रुपये पाकर वह बहुत प्रसन्न हुई और ईश्वर को धन्यवाद देने लगी। वह सोचने लगी कि इन रुपयों का क्या करूँ।

उसके हाथों में लाख की एक-एक चूड़ी थी। चूड़ी के आगे चाँदी का एक-एक कड़ा पहनने का उसका मन हुआ। सोनार के यहाँ जाकर पूछा तो पता लगा कि कड़े बनवाने के लिए पन्द्रह रुपये लगेंगे। 'परमेश्वर ने मुझे दस रुपये दिये हैं; यदि मैं बचा-बचाकर पाँच रुपये इकट्ठे कर लूँ तो कड़े बन जायँ'। इस विचार से उसने दूसरे दिन खीर के स्थान में खिचड़ी पकाकर दो आने बचाये।

भोजन करते समय खीर की जगह खिचड़ी देखकर तीर्थराज ने पूछा—आज खिचड़ी क्यों बनाई है ?

देवकी ने उसे दस रुपये मिलने का हाल और कड़े बनवाने के लिए पाँच रुपये इकट्ठे करने का उपाय कह सुनाया। अब देवकी रोज़ रोटी या खिचड़ी बनाकर पैसे जमा करने लगी। जो पैसे बचते उन्हें वह उन्हीं दस रुपयों में डाल देती और दो-चार दिन बाद उन्हें गिन लेती। एक महीने में उसने पाँच रुपये बचाकर कड़े बनवा लिये। हाथों में कड़े पहन लेने पर उसे अपनी गर्दन खाली मालूम होने लगी। इसलिए अब गले का गहना बनवाने के लिए वह पैसे जोड़ने लगी। इस प्रकार एक के बाद दूसरा गहना लेने को उसका जी ललचाने लगा। इससे वह हलवा और खीर खाना भूल गई।

करोड़ीमल की युक्ति से देवकी की दशा सुधरी और रत्नकोर की समझ में किफ़ायत के लाभ आ गये।

शब्दार्थ—अवकाश—फ़ुरसत। युक्ति—उपाय, तरकीब। किफ़ायत—अपनी आमदनी से अधिक ख़र्च न करना।

प्रश्न—रत्नकोर ने अपने ससुर से क्या कहा ? उसके ससुर ने देवकी की हलवा खीर कैसे छुड़ाई ? देवकी ने रुपये कैसे बचाये ?

११—चन्दा

पेड़-पेड़ पर जुगनू चमके,
घर-घर चमके दीपक मन्दा।
आसमान में तारों के सँग,
चम-चम चम-चम चमके चन्दा॥
बाग़-बाग़ में फिरें तितलियाँ,
गलियों-गलियों लड़का गन्दा।
आसमान में तारों के सँग,
उजला-उजला फिरता चन्दा॥
हँसते फूले फूल डाल पर,
ख़ुश हो घर में हँसता बन्दा।
आसमान में तारों के सँग,
खिल-खिल, खिल-खिल हँसता चन्दा॥
उस ईश्वर को शीश झुकाओ,
जिसका है सब गोरखधन्दा।
आसमान में तारों के सँग,
जिसने लटकाया यह चन्दा॥

शब्दार्थ—दीपक—दिया। गोरखधन्दा—वह काम जिसमें उलझन हो।

प्रश्न—इस पद्य में जिन-जिन बातों का वर्णन है उन्हें अपनी भाषा में, गद्य में, लिखो।

१२—दया और दान

श्रावण मास में नगर के बाहर मेला लगनेवाला था। पार्वती बहुत दिन से मेले में जाने को कह रही थी। उसका भाई हरनारायण भी मेले में जाने के लिए तरस रहा था। दोनों को उनके पिता रामनारायण ने मेला देखने भेजा। प्रत्येक को आठ-आठ आने देकर उन्होंने कहा—इन पैसों को जैसे खर्च करना चाहो वैसे करना।

भाई-बहन धीमे-धीमे जा रहे थे। इतने में उन्हें ऐसा जान पड़ा कि कोई पास के पेड़ के नीचे रो रहा है। उन्होंने उस ओर देखा तो एक स्त्री, गोदी में बच्चा लिये, फूट-फूटकर रो रही थी। पार्वती दौड़ी हुई उसके पास गई। पीछे-पीछे हरनारायण भी गया।

पार्वती ने स्त्री से पूछा—माताजी, आप क्यों रो रही हैं? स्त्री ने कहा—बेटी, मेरा भाग्य फूट गया है। दो मास हुए, मेरा पति पागल कुत्ते के काटने से बड़ा कष्ट भोगकर मर गया है। बहुत वर्षा होने से हमारी झोंपड़ी गिर पड़ी है। आजकल मज़दूरी मिलती नहीं। हाँड़ी में पकाने के लिए मुट्ठी भर अनाज भी नहीं है। मैं दो दिन से भूखी हूँ। इससे मैंने सोचा कि मेले में जाकर भीख माँगूँगी तो दो पैसे मिल जायँगे। लड़की को उँगली

पकड़ाकर ले जा रही थी। इतने में एक मुये की गाड़ी दौड़ती हुई उससे टकरा गई। गाड़ी का पहिया उसके पैर पर से निकल गया। इससे अब तक लहू निकल रहा है। एक ही चूनरी थी, वह भी फट गई।

स्त्री की बात सुनकर पार्वती को दया आ गई। उसके पास अठन्नी थी। वह उसने उसे देकर कहा—माई, तू इन पैसों से लड़की के लिए भोजन और ओढ़नी ले दे।

स्त्री ने हृदय से पार्वती का उपकार माना। उसने कहा—बीबी, लौटते समय मुझसे ज़रूर मिलकर जाना।

रास्ते में हरनारायण ने कहा—बहन! तूने सारे पैसे उस माई को दे दिये, यह अच्छा नहीं किया। अब मेले में क्या लेगी?

पार्वती धीमे से बोली—'भाई, मेले मे मुझे कुछ नहीं लेना है।' भाई-बहन मेले की जगह पहुँचे तो वहाँ उन्होंने लोगों की भारी भीड़ देखी। जगह-जगह नाना प्रकार की दूकानें लगी हुई थीं। हरनारायण ने रेवड़ी, फल, मिठाई और कई खिलौने लिये। थोड़ी देर इधर-उधर फिरने के बाद वे घर को लौटे।

वह ग़रीब स्त्री रास्ते में, पेड़ के नीचे, उनकी बाट जोह रही थी। पार्वती को देख उसने हज़ारों असीसें दीं। अपनी झोंपड़ी के सामने उसने मोतिया लगा रक्खा

था। वह डलिया भरकर उसके फूल लाई थी। वे उसने पार्वती को आग्रह करके दे दिये।

घर पहुँचकर हरनारायण ने पिता के सामने अपनी गठरी रख दी और वह जो भाँति-भाँति के खिलौने लाया था वे दिखलाने लगा। वह कहने लगा—देखिए पिताजी, मैं आठ आने में कितनी चीज़ें ले आया हूँ। रेवड़ी और फल तो मैंने मेले में खा लिये थे। पार्वती बहन पगली है। इसने अपने सारे पैसे एक माई को दे दिये हैं।

रामनारायण ने पूछा—क्यों बेटी, हरनारायण की बात ठीक है?

पार्वती ने सारा वृत्तान्त कह सुनाया और उस स्त्री के दिये हुए फूल पिता के सामने रख दिये।

पार्वती की बात सुनकर रामनारायण बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कहा—बेटा हरनारायण, पार्वती ने आज बहुत अच्छा काम किया है। तूने बुरा किया जो खिलौने और मिठाई ख़रीदने के लोभ से उस माई को एक पैसा भी नहीं दिया। तूने आना दो आना कम के खिलौने लिये होते तो क्या हो जाता? तू स्वार्थ में फँस गया और तेरी बहन परोपकारी मानी गई। दूसरे का दुःख देखकर हमें दया आनी चाहिए और जहाँ तक हो सके,

उसकी सहायता करनी चाहिए। हमारे इस काम से ईश्वर प्रसन्न होता है; क्योंकि भिखारी और धनाढ्य सब उसी की सन्तान हैं। जो धनी मनुष्य भिखारी पर दया नहीं दिखाता उससे परमेश्वर रुष्ट हो जाता है। तेरे खिलौनों की बनिस्बत उस माई के, शुद्ध हृदय से, दिये हुए फूल हज़ार गुना अच्छे हैं। बेटी, मैं तेरे इस सत्कर्म से प्रसन्न होकर तुझे एक रुपया इनाम देता हूँ।

अपने काम पर पछताकर हरनारायण आँखें नीचे किये धरती खोदने लगा। उस समय पार्वती को कितना हर्ष हुआ होगा।

शब्दार्थ—स्वार्थ—अपना मतलब। परोपकारी—दूसरों की भलाई करनेवाला। सत्कर्म—अच्छा काम।

प्रश्न—पार्वती को कितने पैसे मिले थे? उसने अपने पैसे कैसे ख़र्च किये? हरनारायण ने क्या खरीदा? रामनारायण पार्वती से क्यों प्रसन्न हुआ?

१३—संगति का फल

सविता के हाथ में क़ैंची देखकर माँ ने पूछा—सविता, यह क़ैंची तूने कहाँ से ली है?

सविता ने कहा—माँ, यह तो मुझे रास्ते में पड़ी मिली थी। मैं मामा के घर जा रही थी तब यह सड़क पर पड़ी थी। माँ ने समझा कि सविता सच कह रही है; क्योंकि माँ को मालूम नहीं था कि वह चोरी करना सीख गई है। थोड़े दिन बाद सविता ने माँ के हाथ में एक दुअन्नी देकर कहा—माँ, यह दुअन्नी हमारे आँगन में पड़ी थी। खेलते-खेलते यह मेरे हाथ पड़ गई।

माँ के मन में अब भी कोई सन्देह न हुआ। एक दिन सविता पीतल की छोटी सी घण्टी उठा लाई। माँ के पूछने पर उसने कहा—मेरी एक सहेली ने मुझे यह घण्टी दी है। माँ ने कहा—बेटी, भला कोई सहेली तुम्हें घण्टी दे सकती है! सविता ने कहा—यह मुझे चन्दनदेवी ने दी है।

थोड़ी देर बाद चन्दनदेवी सविता की माँ से दियासलाई माँगने आई। माँ ने दियासलाई देकर उससे पूछा—अरी, आज तूने सविता गौरी को क्या दिया था? चन्दन विचार मे पड़ गई। वह बोली—मैंने तो उसे कुछ नहीं दिया। माँ ने फिर कहा—बेटी, सच-सच बतला। तूने उसे पीतल की घण्टी नहीं दी? चन्दन ने साफ़ इनकार कर दिया और कहा कि हमारे घर में घण्टी ही नहीं है।

अब माता को सविता पर सन्देह हो गया। उसने सविता को बुलाकर अच्छी तरह पूछ-ताछ की तो उसका

झूठ पकड़ा गया। माँ ने धमकाकर पूछा तो वह बोली कि यह घण्टी राधा की माँ के छोटे बच्चे के साथ पड़ी थी। वहाँ से मैं उठा लाई थी। उसकी बातों से यह भी प्रकट हुआ कि वह श्यामा के घर खेलने गई थी तो वहाँ से कैंची और ललिता के घर से दुअन्नी उठा लाई थी। जिसकी जो चीज़ थी वह उसे माँ ने पहुँचा दी।

सविता में कोई अवगुण न था, फिर उसमें चोरी करने और झूठ बोलने की टेव कहाँ से पड़ी, इसकी खोज उसकी माँ ने की। खोज करते-करते मालूम हुआ कि पाठशाला में सविता को रामो की सङ्गति है।

रामो एक हलवाई की लड़की थी। वह चोरी करती हुई कई बार पकड़ी गई थी। सविता बार-बार रामो के घर जाती थी और रामो भी बहुत बार सविता के यहाँ आती थी।

माँ ने सोचकर अध्यापिकाजी को बुलाया और उनसे सारी बातें कह सुनाईं। अध्यापिकाजी ने कहा—यह रामो पाठशाला में बहुत चोरी किया करती थी। अन्त में पकड़ी गई और पाठशाला से निकाल दी गई। मुझे मालूम नहीं था कि सविता को ऐसी बुरी लड़की की सङ्गति हो गई है। सविता का चाल-चलन सदा अच्छा था। आप इससे रामो की संगति छुड़ाइए।

मैं इसको अच्छे चाल-चलनवाली लड़कियों की संगति में रक्खूँगी, और ऐसा प्रबन्ध कर दूँगी जिससे तुम्हारे घर भी वे ही लड़कियाँ आकर इसके साथ उठें-बैठें।

कान्ता और कमला नाम की दो लड़कियाँ सविता की गली मे रहती थीं। अध्यापिकाजी ने ऐसा प्रबन्ध कर दिया जिससे सविता उनकी सङ्गति में बहुत सा समय बिताया करे। वे सब चतुर, सयानी और सच्चरित्रा थीं। वे उसे पढ़ने में सहायता देतीं और अच्छी शिक्षा देती थीं। उनकी संगति से सविता सुधर गई। वह अपनी बुरी टेवों को भूल गई। उसमें विवेक और चतुराई भी बढ़ गई। जैसी संगति वैसा प्रभाव हुए बिना नहीं रहता।

खोटी संगति जो मिले खोटा काम कराये।
अच्छी संगति सर्वदा अच्छी चाल चलाये॥

शब्दार्थ—टेव—आदत। सच्चरित्रा—अच्छे चाल-चलनवाली।

प्रश्न—सविता की चोरी की टेव कैसे पड़ी? इस कुटेव को छुड़ाने के लिए अध्यापिकाजी ने क्या प्रबन्ध किया? इस कथा से क्या शिक्षा मिलती है?

१४—घर की सफ़ाई

अध्यापिकाजी—आज हम घर की स्वच्छता के सम्बन्ध में कुछ बातें कहेंगे। घर को साफ़-सुथरा रखने की आवश्यकता सब कोई जानता है, फिर भी घर पूरा-पूरा साफ़ नहीं रहता। यह बात ठीक है या नहीं ?

सूर्यमुखी—अध्यापिकाजी, किसी फूहड़ का ही घर साफ़ न रहता होगा। हम तो रोज़ देखती हैं कि प्रत्येक स्त्री सवेरे उठते ही झाड़-बुहारकर अपना घर साफ़ करती है।

अध्यापिकाजी—बेटी, जैसा तुम कहती हो वैसी रीति हमारे यहाँ है ज़रूर; परन्तु अकेले झाड़ने-बुहारने से ही घर की पूरी सफ़ाई नहीं होती। यदि झाड़ने-बुहारने का काम पूरे ध्यान से न किया जाय तो घर, जैसा चाहिए वैसा, साफ़ नहीं होता। बुहारने के लिए झाड़ू अच्छी होनी चाहिए और प्रत्येक जगह ख़ूब घिसकर साफ़ की जानी चाहिए। कमरे और बराण्डा साफ़ करते समय कोनों और कुञ्जों पर पूरा-पूरा ध्यान नहीं दिया जाता। सन्दूकों और कोठियों के पीछे कूड़ा-कर्कट जमा हो जाता है।

जगत्प्रभा—सन्दूकों और कोठियों के पीछे रोज़ कैसे साफ़ किया जाय ?

अध्यापिकाजी—सन्दूकों और कोठियों के पीछे इकट्ठे हुए कूड़ा-कर्कट को रोज़ या दो-तीन दिन बाद निकालते रहना चाहिए। यदि उसे निकाला नहीं जायगा तो वहाँ बिच्छू, टिड्डियाँ और कनखजूरे आदि जन्तु पैदा हो जायँगे। वहाँ अनाज गिरने से चूहे आयँगे और वे खोदकर बिल बना लेंगे। जहाँ चूहे बहुत होते हैं वहाँ आने के लिए साँप ललचाने लगता है। जैसे कुंज-कोने साफ़ रखने की आवश्यकता है वैसे ही दीवारों, छत्तों और घर के सारे सामान को भी झाड़ बुहारकर साफ़ रखने की आवश्यकता है।

सूर्यमुखी—जहाँ तक हाथ पहुँचे वहाँ तक तो दीवार साफ़ की जा सकती है, परन्तु ऊपर की छत और छप्पर को कैसे साफ़ कर सकते हैं? उसे न झाड़ा जाय तो क्या हानि है?

अध्यापिकाजी—ऊँची जगहों को बुहारने के लिए बाँस के साथ झाड़ू या कपड़ा बाँध लिया जाता है। ऊँची जगहों पर मकड़ी जाला लगा देती है। जाले में बहुत सा कचरा फँस जाता है। वह पवन से उड़कर नीचे दीवारों पर पड़ता है। कचरेवाली दीवार के साथ शरीर या कपड़ा लग जाने से वे मैले हो जाते हैं। घर की वस्तुओं पर मिट्टी और कूड़ा पड़ा हो तो वह बहुत बुरा

दिखाई देता है। चित्रकारीवाले सन्दूकों और आलमारियों को ख़ूब साफ़ रक्खा नहीं जाता।

रुक्मिणी—चित्रकारी के बेल-बूटे में जो कूड़ा-कर्कट फँस जाता है वह बुहारने से कैसे साफ़ किया जा सकता है ?

अध्यापिकाजी—जो वस्तुएँ बुहारने से साफ़ न हो सके उन्हें कुछ दिन पीछे रीठे या साबुन के गरम पानी से धोकर कपड़े से साफ़ करो। उसके बाद तेल, पानी और ज़रा सा मोम मिलाकर वस्तु को कपड़े से रगड़ना चाहिए। इससे वह चमकने लगती है। अच्छा तो यह है कि वस्तुओं को बहुत मैला होने ही न दिया जाय। यदि उन्हें खुर्दरे कपड़े या ब्रुश से रोज़ पोंछ दिया जाय तो उनमें मैल न जमने पायगा। भूमि पर झाड़ू देते समय ऐसी वस्तुओं को कपड़े से ढक देना चाहिए जिससे उन पर धूल न पड़े या झाड़ू देने के बाद उन्हें कपड़े से दुबारा पोंछ डालना चाहिए।

सूर्यमुखी—रोज़ सफ़ाई होती रहेगी तो कचरा इकट्ठा ही कैसे हो सकता है ?

अध्यापिकाजी—रोज़ झाड़ू देने पर भी कमरे में कूड़ा-कर्कट इकट्ठा हो जाता है। इसका एक उदाहरण देती हूँ। कोने और कुञ्ज रोज़ साफ़ नहीं किये जाते,

यह बात मैं ऊपर कह आई हूँ। जाजम और शतरंजियाँ बिछी रहती हैं। उनको ऊपर से ही साफ़ किया जाता है। उनको उठाकर नीचे से बुहारा नहीं जाता।

हाँ, तो घर की स्वच्छता के विषय में मैं कहाँ तक बता चुकी हूँ?

सूर्यमुखी—बिछी हुई जाजमों और शतरंजियों के नीचे बुहारा नहीं जाता, इतनी बात आपने कही थी।

अध्यापिकाजी—मिट्टी से भरी हुई जाजमों और शतरंजियों को झटकते समय और उनके नीचे का कचरा बुहारते समय बहुत धूल उड़ती है। वह घर के सारे सामान को मैला कर देती है। इसलिए जाजमों और शतरंजियों को बाहर ले जाकर झटकना चाहिए। भूमि पर बहुत गर्द हो तो उस पर पानी छिड़ककर बुहारना चाहिए, जिससे ज़्यादा गर्द न उड़े। अच्छा, सूर्यमुखी! तुम्हारे यहाँ कोई ऐसी जगह है जो रोज़ बुहारी नहीं जाती?

सूर्यमुखी—जी हाँ, मेरे यहाँ तीसरी मंज़िल है। उसे कोई नहीं बुहारता। गोदाम में भी रोज़ झाड़ू नहीं दी जाती।

अध्यापिकाजी—जो जगह रोज़ काम में न आती हो उसे कुछ दिन पीछे बुहारते रहना चाहिए। घर का प्रत्येक भाग साफ़ रहना चाहिए। ग्रहण के दिन लोग

सारा घर-बार साफ़ करते हैं, यह बहुत अच्छी बात है। पर ग्रहण कभी जल्दी आता है और कभी बहुत देर से। तब तक सारे घर को और उसके भीतर के असबाब को साफ़ न करना अच्छा नहीं। सोने, बैठने या दूसरे कामों में आनेवाली जगहों को बुहारते समय बहुत सी बातों का ध्यान रखने की आवश्यकता है। भूमि पर झाड़ू लगाते समय प्रायः खिड़की, दरवाज़ा और कटहरा साफ़ करने से रह जाता है।

रमा—बहुत लोग उनको झाड़ू से साफ़ करते हैं।

अध्यापिकाजी—अकेले झाड़ू से वे ठीक साफ़ नहीं होतीं। उनको कपड़े से झटकारकर पोंछना चाहिए। यदि उन पर दाग़ पड़ गये हों तो साबुन या रीठे के पानी से धोकर फिर पोंछना चाहिए। रोग़नी दीवारें मैली हो रही हों तो उन्हें भी साबुन या रीठे के गरम पानी से ख़ूब धोना चाहिए। सीढ़ियों और निसेनियों को रोज़ साफ़ करना चाहिए। उनके कटहरों को भी झाड़-पोंछकर ख़ूब साफ़ रखना चाहिए। वे मैले हों तो धोकर स्वच्छ कर देना चाहिए। घर की स्वच्छता में अब और कुछ बाक़ी है?

मालिनी—अब तो कोई बात बाक़ी रही जान नहीं पड़ती।

अध्यापिकाजी—अभी तो बहुत कुछ बाक़ी है। घर के आँगन, उसके पास के अड्डे, रविशों और चबूतरे के विषय में हमने कुछ नहीं कहा। आँगन लिपा हुआ न हो तो छोटी झाड़ू के स्थान में बड़ी झाड़ू से साफ़ करना चाहिए। अड्डे और रविशें पत्थर की हों तो उन्हें धो-पोंछकर साफ़ करना चाहिए। गुजरात और महाराष्ट्र में आँगन में पानी छिड़ककर आटे, रोली और हल्दी से बेल-बूटे बनाने का रिवाज है। वह बहुत अच्छा है। इससे घर का अगला भाग स्वच्छ रहता है। लोग न तो वहाँ थूकते हैं और न कचरा बखेरते हैं। वह दीखता भी बहुत सुन्दर है।

भूमि लिपी हुई न हो तो घिस जाने से कचरा बहुत निकलता है। पपड़ी उखड़ जाय तो गड्ढे पड़ जाते हैं, धूल अधिक निकलती है, और ख़राब दीखती है। गाँव की स्त्रियाँ घरों को लीप-पोतकर साफ़ रखती हैं। इसलिए वहाँ के घर नगरों के घरों से अधिक साफ़ रहते हैं। वे गारे की दीवारों को गोलू या सफ़ेद मिट्टी से लीप देती हैं। कभी-कभी तो उसमे अभ्रक भी मिला दिया जाता है। उससे वह चमकने लगता है। बुहारने से जो कचरा निकले उसे एक कोने में, ढेर लगाकर, नहीं रखना चाहिए। इस कूड़ा-कर्कट को, ख़ूब देखकर, कूड़े-कर्कट के लिए रक्खे हुए कनस्टर में डाल देना चाहिए,

जहाँ से भंगी उसे उठा ले जाय। कचरा डालने का कनस्टर न हो तो उसे किसी अलग स्थान में इकट्ठा करके गाँव के बाहर फेंक देना चाहिए।

शब्दार्थ—शतरजी—दरी। गोदाम—वह घर जहाँ माल-असबाब रक्खा जाय।

प्रश्न—घर की सफाई कैसे करनी चाहिए? ऊँची जगहें कैसे साफ की जानी चाहिएँ?

१५—सवेरे उठना

कक्षा की लड़कियों से पूछने पर अध्यापिकाजी को मालूम हुआ कि बहुत सी लड़कियाँ सवेरे आठ-आठ बजे तक सोती रहती हैं। उस दिन साढ़े आठ बजे, उठाई जाने पर, सुभद्रा उठी थी। केवल चपला को उसकी माँ ने पाँच बजे उठने की टेव डाल रक्खी थी। इससे वह रोज़ पाँच बजे उठती थी।

अध्यापिकाजी—सुभद्रा, ऐसा जान पड़ता है कि तू सबसे अधिक सोती है। तुझे कोई न उठाता तो तू कब उठी होती।

सुभद्रा—(लज्जित होकर) अध्यापिकाजी, मुझे नींद बहुत आती है। सवेरे उठने को बहुत जी चाहता है, पर मुझसे जागा नहीं जाता।

अध्यापिकाजी—यह ठीक है कि छोटे बच्चों को नींद बहुत आती है। वैसे उनको सोने की आवश्यकता भी है। अच्छा, तो तू सोई कितने बजे थी ?

सुभद्रा—इसका मुझे पता नहीं। मैं रोटी खाते ही सो गई थी। उसके बाद जो तोप चलती है वह मैंने नहीं सुनी।

अध्यापिकाजी—तोप नौ बजे चलती है। इसलिए जान पड़ता है, तू साढ़े आठ बजे ही सो गई होगी। साढ़े आठ बजे सोकर साढ़े आठ बजे उठी, इसलिए तू बारह घण्टे सोई। तेरी उम्र की लड़कियों को बारह घण्टे सोने की आवश्यकता नहीं। तेरे लिए आठ-नौ घण्टे सोना बहुत हैं।

सुभद्रा—पर जिसे बहुत नींद आये वह क्या करे ?

अध्यापिकाजी—कहावत है कि नींद और सुस्ती जितनी बढ़ाओ उतनी ही बढ़ती हैं। तू धारणा करेगी तो नींद को कम कर सकेगी। क्यों चपला, तुझे पाँच बजे कौन उठाता है ?

चपला—उठायगा कौन ? मैं तो अपने आप उठती हूँ। पाँच बजते ही मेरी नींद खुल जाती है।

अध्यापिकाजी—देखो सुभद्रा, चपला पाँच बजते ही अपने आप जाग उठती है। उसे उठाना नहीं पड़ता। इसका क्या कारण है ?

चमेली—जी, उसे तो टेव पड़ गई है। इसी से पाँच बजे जाग उठती है। मैं सात बजे ही उठ जाती हूँ।

अध्यापिकाजी—टेव जैसी डालो वैसी पड़ जाती है। जल्दी उठने का स्वभाव डालना हो तो जल्दी उठो। देर से उठने का स्वभाव डालना हो तो देर से उठो।

सुभद्रा—जल्दी उठने का स्वभाव कैसे डाला जाता है?

अध्यापिकाजी—रात को सोते समय जल्दी उठने का विचार मन में पक्का करके सोना चाहिए। आरम्भ में उतने बजे उठा देने के लिए किसी से कह रखना चाहिए। थोड़े दिन में आदत पड़ जायगी, तो जितने बजे उठने की इच्छा होगी उतने बजे ही जाग पड़ोगी। क्यों महालक्ष्मी, आज तू कितने बजे उठी थी?

महालक्ष्मी—अध्यापिकाजी, मैं तो आज साढ़े सात बजे जागी थी। पर रोज़ सात बजे के पहले उठती हूँ।

अध्यापिकाजी—तो आज देर कैसे हुई? क्या रात देर से सोई थी?

महालक्ष्मी—जी हाँ! मेरा भाई एक हँसानेवाली कहानी पढ़ रहा था। इसलिए मैं ग्यारह बजे तक जागती रही। यह ललिता भी तब मेरे साथ बैठी रही।

अध्यापिकाजी—कहानी सुनने, कहानी पढ़ने या काम करने के लिए—जहाँ तक बन सके—नहीं जागना

चाहिए। पहली रात के जागने से शरीर की अधिक हानि होती है। आँखें खिँच सी जाती हैं और पढ़ा हुआ भी ठीक याद नहीं रहता। प्रातःकाल मन और तन दोनों ताज़ा होते हैं। इसलिए उस समय पढ़ना-लिखना और दूसरे काम ठीक होते हैं। सवेरे उठने के लाभों के बारे में कहा है—

जल्दी सोवे जल्दी जागे ज़रा नहीं दुख पावे।
बुद्धि और बल बढ़े बहुत धन उसके घर में आवे॥

शब्दार्थ—धारणा—पक्का इरादा। कक्षा—श्रेणी, वर्ग, क्लास, जमाअत। लाभ—फ़ायदा।

प्रश्न—लड़कियो को कितने घण्टे सोना चाहिए? सवेरे उठने की टेव कैसे डाली जा सकती है? रात को देर तक जागने से क्या हानि होती है?

१६—गहने पहननेवाली लड़की

अध्यापिकाजी (गद्गद स्वर से)—लड़कियो! तुम्हें आज एक बुरा समाचार सुनाना पड़ रहा है। इससे मुझे बड़ा खेद होता है। हमारी पाठशाला की तीसरी कक्षा में पढ़नेवाली यमुना नाम की लड़की को तुम जानती होगी।

राधिका—जी हाँ, हम सब उसे अच्छी तरह जानती हैं। दो दिन से उसका पता नहीं चलता, यह बात मेरे पिता ने मुझसे कही थी।

अध्यापिकाजी—वह लड़की परसों पाठशाला आई थी। अँधेरा होने तक वह घर न पहुँची। इससे उसके सम्बन्धियों को चिन्ता हुई। उन्होंने उसे बहुत ढूँढ़ा; पर उसका कुछ पता न लगा। कल भी उसकी बहुत तलाश हो रही थी। आज सवेरे उसकी लाश कुएँ में मिली।

यह समाचार सुनकर सब लड़कियों की आँखों में आँसू आ गये। यमुना बड़ी रूपवती और चतुर थी। इसलिए सब लड़कियाँ उसे चाहती थीं। थोड़ी देर बाद सरस्वती ने पूछा—वह कुएँ में कैसे गिर पड़ी?

अध्यापिकाजी—पता लगाने पर मालूम हुआ है कि पाठशाला में छुट्टी हो जाने के बाद उसे कोई फुसलाकर ले गया। एक मकान में उसको छिपाकर उसके मुँह में कपड़ा ठूँस दिया। उसके शरीर पर से सारे गहने उतार लिये। फिर बड़ी रात में उसे गाँव से बाहर ले जाकर एक पुराने कुएँ में फेंक दिया। तुम जानती ही हो, उसे गहने पहनने का बड़ा चाव था।

शारदा—हाँ अध्यापिकाजी! यमुना रोज़ अच्छे-अच्छे गहने पहनकर पाठशाला में आया करती थी।

अध्यापिकाजी—इन गहनों ने ही उस बेचारी के प्राण लिये। अनसूया! तूने आज रोज़ से ज़्यादा गहने क्यों पहने हैं?

अनसूया—मेरे मामा के यहाँ विवाह है। रोज़ भोजन के लिए हमें बुलाया जाता है। इसलिए मुझे गहने पहनकर जाना पड़ता है। आज जीमने में देर हो गई थी, इसलिए मैं वहाँ से सीधी यहाँ आ गई हूँ।

अध्यापिकाजी—यमुना के उदाहरण से तुम्हें मालूम हो गया होगा कि बहुत गहने पहनकर अकेले बाहर निकलना अच्छा नहीं। मामा के यहाँ विवाह था तो तुमने बहुत गहने किसलिए पहने?

अनसूया—अध्यापिकाजी, ब्याह-शादी मे गहने न पहनें तो फिर कब पहनें?

अध्यापिकाजी—ब्याह-शादी में गहने पहनने से क्या लाभ होता है?

अनसूया—लाभ तो कुछ नहीं होता, पर उनसे शोभा बढ़ती है और लोग बखान करते हैं।

अध्यापिकाजी—कितने गहने पहनने से शोभा बढ़ती है और लोग बखान करते हैं?

अनसूया—इसका क्या कोई नियम है? जितने *अधिक और बहुमूल्य गहने पहने जायँ उतनी ही अधिक* शोभा बढ़ती है।

अध्यापिकाजी—तुम्हारा सारा शरीर गहनों से मढ़ा हुआ हो तो क्या सबसे अधिक शोभा होगी?

अनसूया—(विचार में पड़कर) सारा शरीर भी कहीं गहनों से मढ़ा जाता है?

अध्यापिकाजी—बहुत गहनों से कोई शोभा नहीं बढ़ती। लोगों में प्रथा होने के कारण बहुत गहने पहननेवाली की प्रशंसा की जाती है। जङ्गली लोग अपने शरीर के रँगने और उस पर पेड़ों के पत्ते और पक्षियों के पंख लगाने में सुन्दरता समझते हैं। भील और गोंड़ लोग हाथ-पाँव में पीतल के कड़े बहुत पहनते हैं। कौड़ियों और घोंघों के हार गले में डालते हैं। चूड़ियों से सारी बाँह भर लेते हैं। क्या वे अच्छे लगते हैं?

सुमित्रा—वे तो भोंडे देख पड़ते हैं।

अध्यापिकाजी—तुम्हें भोंडे दीखते हैं पर वे लोग उसमें सुन्दरता समझते हैं। गाँव में मोटे-मोटे कड़े और बड़ी-बड़ी चूड़ियाँ पहनने में लोग शोभा समझते हैं। नगर के लोग उन पर हँसते हैं। जैसी आवश्यकता

कपड़े पहनने की है वैसी गहना पहनने की नहीं। शोभा के लिए गहना पहनना हो तो वह हलका और छोटा होना चाहिए।

शब्दार्थ—प्रथा—रिवाज। प्रशंसा—तारीफ, बड़ाई।

प्रश्न—यमुना की जान क्यों गई? उसकी लाश कहाँ मिली? गहने पहनने से क्या हानि होती है?

१७—वसन्त

नये पात पेड़ों में छाये, लहराती हरियाली है।
शीतल मंद पवन बहती है, हिलती डाली-डाली है॥
फूलों में, वन में, उपवन में, भर दी अनुपम लाली है।
कोयल कुहू-कुहू गाती है, छाई छटा निराली है॥
सुख का सागर उमड़ उठा है, जिसका कहीं न मिलता अन्त।
भारत के आँगन में आया, अहा! मनोहर मधुर वसन्त॥

शब्दार्थ—पवन—हवा। उपवन—बाग। अनुपम—बे-जोड़।

प्रश्न—इस कविता को कण्ठस्थ करके सुनाओ।

१८—भाजी-तरकारी

एक दिन अध्यापिकाजी ने लड़कियों से कहा—मनुष्य कैसा विचित्र प्राणी है। वह पेड़ का मूल अर्थात् जड़ खाता है, कंद खाता है, छाल खाता है, बीज खाता है, पत्ते खाता है, फूल खाता है और फल खाता है। कई बार तो मनुष्य उस वनस्पति को खा जाता है जिसे ढोर तक नहीं सूँघते।

हेमवती—वाह अध्यापिकाजी, ऐसा भी कभी हो सकता है! मनुष्य सब प्राणियों से श्रेष्ठ है। इसलिए जिस वनस्पति को ढोर भी नहीं सूँघते उसे वह कैसे खा सकता है?

अध्यापिकाजी—देखो, घीकुआर को कोई चौपाया नहीं खाता, तो भी लोग उसकी पत्ती की भाजी बनाते हैं। करेले को कोई ढोर नहीं खाता, पर मनुष्य उसे चाव से खाता है।

रूपा—घीकुआर को तो ग़रीब लोग खाते हैं। करेला स्वादु लगता है, इसलिए हम उसे खाते हैं।

अध्यापिकाजी—घीकुआर की भाजी और पकौड़े तो अमीर लोग भी खाते हैं। करेला इतना कड़वा होता है कि वह अकेला खाया नहीं जा सकता। पर वह दूसरे भोजन के साथ अच्छा लगता है।

हेमवती—अध्यापिकाजी, आपने कहा था कि मनुष्य कंद-मूल आदि पेड़ के सब भाग खाता है। क्या आपकी यह बात ठीक है?

अध्यापिकाजी—ज़मींकंद, रतालू, चुक़न्दर और आलू ये सब कन्द हैं। मूली और गाजर मूल हैं। रूआँग और गवार की नरम-नरम फलियाँ हम छिलके-समेत खा जाते हैं। हम दारचीनी का उपयोग भोजन में करते हैं। वह पेड़ की छाल ही तो है। सौंफ़ और धनिया आदि भाजियों के छोटे-छोटे दाने हम बघार में डालते हैं। हम मेथी, बथुआ, पालक आदि जो नाना प्रकार की भुजिया बनाते हैं वे पौधों के पत्ते ही तो होते हैं। हम अगस्त, कचनार और गोभी के फूल खाते हैं। सेम, अरहर, मटर आदि के हरे दानों की हम तरकारी बनाते हैं। वे पौधों के बीज हैं। जामुन, खिरनी, आम, बेर, अमरूद, नारङ्गी आदि फल हम वैसे के वैसे खा जाते हैं।

मंदाकिनी—शाक-भाजी न हो तो हम रोटी किसके साथ खायँ?

अध्यापिकाजी—क्या दाल के साथ नहीं खाई जा सकती?

मंदाकिनी—दाल-रोटी या भात खायँ तो भी उनके साथ भाजी खाने को जी चाहता है।

अध्यापिकाजी—जी चाहने का कारण यह है कि उससे वह अधिक स्वादिष्ठ हो जाती है। ताज़ा शाक-भाजी शरीर को गुण करती है। शाक-भाजी बिलकुल न खाने से शरीर जैसा चाहिए वैसा पुष्ट नहीं होता।

नीरजा—ग़रीब लोग शाक-भाजी कहाँ खाते हैं?

अध्यापिकाजी—ग़रीब लोग शाक-भाजी रोज़ नहीं खा सकते। पर जब खाते हैं तब ख़ूब खाते हैं। वे कभी-कभी कच्चे कन्द-मूल भी खा जाते हैं। वे कच्ची प्याज़ और मूलियाँ ख़ूब खाते हैं। बहुत ग़रीब होने से जो इनमें से कोई भी चीज़ नहीं खा सकते, उनके शरीर निर्बल रहते हैं। शरीर में जितने तत्त्व पहुँचने चाहिएँ उतने तत्त्व केवल अनाज में से पूरे नहीं पहुँचते। खटाई और खार आदि शाक-भाजी में से मिलते हैं। भाजी-तरकारी और उसमें मिले हुए मसालों से मुँह में लार निकलती है और भोजन अधिक खाया जाता है। मुँह में जो लार निकलती है वह पाचन-शक्ति को सहायता देती है। शाक-भाजी मे भोजन के दूसरे तत्त्व भी कुछ कम नहीं होते।

चम्पा—दूसरे तत्त्व कौन से?

अध्यापिकाजी—भोजन में कौन कौन तत्त्व होते हैं और शरीर को किन किन तत्त्वों की आवश्यकता होती

है, यह मैं तुम्हें फिर कभी समझाऊँगी। इस समय तो इतना ही पर्याप्त है कि जो तत्त्व आटा और चावल पूरा करते हैं वही तत्त्व कन्द-मूल में से भी मिल सकते हैं। मूँग, उरद और मटर जैसी दालों का पुष्टिकारक भाग सेम के बीजों में मिलता है, क्योंकि बहुत सी सेमें दालों के वर्ग की हैं। सूखे मटरों से हरे मटर, सूखे चनों से हरे चने अधिक स्वादिष्ठ होते हैं और गुण भी अच्छा करते हैं।

शब्दार्थ—श्रेष्ठ—उत्तम। पुष्ट—मजबूत। तत्त्व—ऐसी चीजें जो किसी दूसरी चीजों के मिलने से न बनी हों, जैसे लोहा, सोना, गंधक। पुष्टिकारक—मज़बूत बनानेवाला। स्वादिष्ट—स्वादु।

प्रश्न—वह कौन सी भाजी है जिसे चौपाये नहीं सूँघते पर मनुष्य खाता है? किस पौधे की छाल खाई जाती है? किन-किन पौधों के पत्ते खाये जाते हैं?

१६—पानी और दूध को साफ़ रखना

रुक्मिणी का एक मेम के साथ बहनपन था। वह मेम डाक्टरी की ऊँची परीक्षा पास थी। एक दिन वह रुक्मिणी के घर मिलने आई। बातें करते-करते उसे

मालूम हुआ कि रुक्मिणी के घर में और गाँव में बहुत से लोग बीमार हैं। कोई ज्वर से और कोई संग्रहणी या मरोड़ से दुःख पा रहा है। किसी को अन्न से अरुचि हो रही है तो किसी के पेट में मीठी-मीठी पीड़ा रहती है। मेम ने सोचा कि इस रोग का कारण पीने का पानी होना चाहिए। इसलिए वह रुक्मिणी को साथ लेकर गाँव के कूएँ पर गई। वहाँ देखा तो चारों ओर बहुत गन्दगी थी। कई स्त्रियाँ कूएँ की मुँडेर पर मैले कपड़े धो रही थीं। यह देखकर मेम ने उन सब स्त्रियों से यों कहा—

तुम्हारे गाँव में इस समय बहुत बीमारी फैल रही है। इसका कारण यह है कि तुम इस कूएँ का पानी पीती हो। यह कूआँ घनी बस्ती के बीच में है। इसके इर्द-गिर्द गन्दगी के ढेर लगे हुए हैं। वहीं लोग टट्टी बैठ जाते हैं। तुम कूएँ की मुँडेर पर मैले कपड़े धोती हो। कूएँ के ऊपर और उसके आस-पास गन्दगी पड़ी हुई है। गन्दगी पर जब पानी गिरता है तो वह उसमें घुल जाती है और वह मैला पानी भूमि में रसकर कूएँ के पानी को खराब कर देता है। इसलिए इसमें छोटे-छोटे जन्तु पैदा हो जाते हैं। पानी हवा को भी चूसता है। इससे इर्द-गिर्द की गन्दी हवा पानी में जाती है। वही गन्दा

पानी तुम रोज़ पीती हो। यदि कूएँ का पानी कम खराब होगा तो पीनेवालों को रोग भी कम होंगे और यदि अधिक खराब होगा तो अधिक रोग होंगे। तुम आसपास की गन्दगी को साफ़ कर दो। मुँडेर पर कपड़े धोना बन्द कर दो और फिर देखो, कितना लाभ होता है।

कितनी ही जगह लोग नदी, सरोवर या छप्पड़ का पानी पीते हैं। इसलिए ऐसा प्रबन्ध करना चाहिए जिससे वह पानी बिगड़े नहीं। हम लोग सदा पानी को साफ़ करके पीते हैं। उसे साफ़ करने की दो रीतियाँ हैं। एक रीति तो यह है कि पानी को रेत और कोयले में से रिसने देते हैं। इसके लिए एक घड़ौंची में एक दूसरे के ऊपर तीन घड़े रक्खे जाते हैं। सबसे ऊपर के घड़े में रेत और कोयला डाल देते हैं और उसकी पेंदी में एक बारीक छेद कर देते हैं। इसके निचले घड़े में ऊपर के घड़े से अधिक बारीक रेत डाली जाती है। इसकी पेंदी में भी एक बारीक छेद रहता है। अब सबसे ऊपर के घड़े में पानी भर दिया जाता है। वह कोयले और रेत में से रिसकर छेद के रास्ते अपने नीचेवाले घड़े में गिरता है। वहाँ से वह दुबारा रेत में साफ़ होकर सबसे निचले घड़े में गिरता है। इस प्रकार पानी का सारा मैल दूर हो जाता है।

दूसरी रीति यह है कि पानी को उबालकर पिया जाय। पानी को उबालने से रोग के जन्तु मर जाते हैं।

इन दोनों में से किसी रीति से पानी को साफ़ करके पिया करोगी तो मैला पानी पीने से जो रोग उत्पन्न होते हैं वे तुम्हारे गाँव में कभी न होंगे।

तुम्हारे गाँव का दूध भी खराब हुआ जान पड़ता है। तुम चौपायों के स्तन गन्दे रखती हो। दूध दुहने के बासनों को भी कूएँ के मैले पानी से धोती होगी। पानी की तरह दूध भी हवा को चूसता है। उसमें वह गन्दी हवा जाने से रोग के जन्तु उत्पन्न हो जाते हैं। कोई कोई चौपाया तो बहुत बीमार देख पड़ता है। उसका दूध भी रोग पैदा करेगा। तुम अपने चौपायों को अच्छा भोजन दो, उनका थान साफ़ रक्खो, दुहने का बासन साफ़ पानी से धोवो, दूध को साफ़ स्थान में रक्खो और ऐसा प्रबन्ध करो जिससे जानवर बीमार न पड़ें।

मेम जब ये बातें कह चुकी तो सब स्त्रियों ने उसका बड़ा उपकार माना। फिर सबसे विदा लेकर वह रुक्मिणी के साथ विदा हुई।

शब्दार्थ—सरोवर—तालाब। स्तन—थन। थान—गाय-भैंस बाँधने की जगह।

प्रश्न—कुएँ के आसपास गन्दगी क्यो नहीं होनी चाहिए? पानी को साफ़ करने की दो रीतियाँ कौन-कौन सी हैं? गाँव की स्त्रियो ने मेम का उपकार क्यो माना?

२०—जो काम करो अच्छी तरह करो

सरोजिनी और उसकी छोटी ननद शारदा को एक-एक लहँगा सीने को मिला। दोनों लहँगे एक ही आकार के थे। लहँगे को चुनट देकर नेफा लगाने का काम बड़ा आसान था। खाना खा चुकने के बाद दोनों एक साथ काम करने बैठीं। शारदा ने अपना लहँगा तैयार करके सरोजिनी से पूछा—क्यों भाभी, अभी तुम्हारा काम पूरा नहीं हुआ?

सरोजिनी—नहीं बहन, लहँगे की चुनट अभी पूरी हो जायगी। इसके बाद मैं नेफा लगाऊँगी।

शारदा—काम करने में तुम्हें बड़ी देर लगती है। भोजन का समय हो आया, इसलिए अब माताजी हमें बुलायँगी।

सरोजिनी—आलस्य करके देर लगाना बुरा होता है। तुम देखती हो कि मैंने एक मिनट के लिए भी सुई नहीं छोड़ी है; जहाँ बैठी हूँ वहाँ से उठी तक नहीं। माताजी भोजन के लिए उतावली करेंगी तो मैं बाक़ी काम पीछे से कर लूँगी।

सरोजिनी बातें करते हुए भी सुई चला रही थी। थोड़ी देर बाद शारदा की माँ पार्वती ने आकर कहा—

बेटियो, तुम्हारा काम पूरा हुआ कि नहीं? भोजन का समय हो गया है।

शारदा—माँ, मैं अपना काम कब से समाप्त कर चुकी हूँ। परन्तु भाभी का काम थोड़ा बाक़ी है।

पार्वती—क्यों सरोजिनी बहू, तुम्हारा काम अभी कितना बाक़ी है?

सरोजिनी—माँजी, चुनट पूरी हो गई है। अब नेफा लगा रही हूँ। समय हो गया है तो बाक़ी काम भोजन के पश्चात् कर लूँगी।

पार्वती—अच्छा। लाओ, तुम दोनों का काम तो देखूँ।

दोनों का काम देखकर पार्वती ने कहा—शारदा, तूने काम में जल्दी ज़रूर की है; परन्तु तेरा काम सरोजिनी के काम से बहुत घटिया है। उसकी दी हुई चुनट एक सी और बारीक है; तू भी देख।

चुनट को देखकर शारदा बोली—हाँ माँ, भाभी की चुनट बढ़िया है। परन्तु आपने मुझे जल्दी करने को कहा था, इसी लिए मैंने झटपट कर डाला।

पार्वती—मैंने जल्दी करने को कहा ज़रूर था, लेकिन उसका अर्थ यह न था कि काम अच्छी तरह न

किया जाय। काम में जल्दी करना चाहिए परन्तु यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वह अच्छा हो। उस दिन तूने बर्तन माँजे थे, परन्तु वे ठीक चमकीले नहीं हुए थे। कोनों में राख लगी रह गई थी। लोटा ऊपर से तो तूने माँजा था परन्तु भीतर वैसा ही मैल लगा रहा।

शारदा—माँ, उस दिन पाठशाला का समय हो गया था, इसलिए मुझे जल्दी करनी पड़ी थी।

पार्वती—शारदा, तुझे बहाना बनाना ख़ूब आता है। मैंने तुझसे सभी बर्तन माँजने को नहीं कहा था। समय होने तक जितने माँजे जा सकते थे उतने ही माँजती। थोड़े माँजे जाते तो कुछ परवा न थी; परन्तु उन्हें ठीक-ठीक तो माँजती। उस दिन अध्यापिका ने तुझसे कापी में सुलेख लिखकर लाने को कहा था; किन्तु तूने झटपट दो पन्ने घसीट डाले। उससे क्या लाभ हुआ? जिन अक्षरों की नक़ल करनी थी उनको ध्यान में रखकर नक़ल करना चाहिए था। जो कुछ करो, ध्यान देकर अच्छी तरह करो। जहाँ तक हो सके, जल्दी तो करना चाहिए परन्तु घपला नहीं करना चाहिए। तुम्हारी भाभी जल्दी परन्तु ध्यान से काम करती है, इसलिए उसका काम अच्छा होता है।

शारदा—माँ, अब मैं भी इसी तरह करूँगी।

शब्दार्थ—चुनट—प्लेट (पञ्जाबी = चोन)। घपला—गड़बड़।

प्रश्न—सरोजिनी और शारदा के काम में क्या फ़र्क़ था? फ़र्क़ का कारण क्या था? पार्वती ने उनको क्या शिक्षा दी?

२१—आज का काम कल पर मत छोड़ो

मनुष्य बहुत बार 'हो जायगा', 'कर लेंगे' में ही समय नष्ट कर डालते हैं और आलस्य तथा बेपरवाही से बहुत से कामों को समय पर न करके रोक देते हैं। इस स्वभाव से उन्हें बहुत बार हानि उठानी पड़ती है।

खाने के बाद यदि जूठन फ़ौरन न उठाई जाय तो चिउँटियाँ और मक्खियाँ इकट्ठी होकर कष्ट देने लगती हैं। भोजन कर चुकने के बाद तुरन्त ही बर्तन माँज डाले जायँ तो वे आसानी से साफ़ हो जाते हैं। परन्तु देर तक पड़े रहने देने से उनमें जूठन सूख जाती है और वे भली भाँति साफ़ नहीं होते। बर्तनों की क़लई उतर जाने पर बहुत सी स्त्रियाँ उन पर दुबारा क़लई कराने में आलस्य करती हैं। आज बाज़ार कौन जाय, कल दूसरा काम करना है, परसों मामा के घर जाना है, इसलिए क़लई फिर किसी दिन करा लेंगे। वह दिन आता है तो और कोई काम निकल पड़ता है और बात

भूल जाती है। फिर दो-चार दिन और बीत जाते हैं। क़लई के बिना ताँबे और पीतल के बर्तनों में पकाई हुई चीज़ कसा जाती है और उसका परिणाम बुरा होता है—यह बात उनके ध्यान में नहीं रहती।

अपने और बच्चों के लिए ललिता ने जाड़ों में ऊन के बहुमूल्य कपड़े सिलाये थे। किन्तु जाड़ा निकल जाने पर उसने उन कपड़ों को तह लगाकर उनमें कपूर, नीम की पत्तियाँ, काला ज़ीरा या फ़ीनाइल की गोलियाँ डाल कर किसी अच्छे से सन्दूक़ में बन्द करके न रक्खा। योंही इधर-उधर पड़ा रहने दिया। बरसात की सील से उनमें कीड़ा लग गया, जिसने कपड़ों को फाहा-फाहा कर डाला। समय पर न सँभालने से क़ीमती कपड़ों की यही दशा होती है।

आषाढ़ मास आ गया। दो-चार बूँदें भी पड़ गईं। परन्तु हमारी नींद नहीं खुली। कच्चे कोठों को गारे-मिट्टी से लीपा-पोता नहीं। छप्पर की मरम्मत नहीं की ताकि उसमें से पानी न टपके। थोड़े दिन में मेघराज टूट पड़ा। सारे घर में पानी-पानी हो गया। कपड़ा-लत्ता भीग गये। आटे, दाल में पानी पड़ गया। खाने-पकाने के लिए भी कोई जगह नहीं रही। देखो, समय पर काम न करने से कितनी हानि हुई।

घर की दीवार में बारीक सी दरार दिखाई पड़ी। घर की मालकिन ने उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया। वर्षा ऋतु में उसमें धीमे-धीमे पानी समा गया और दरार कुछ बड़ी दीखने लगी। उसको भर देने या उसमें पानी न जाने देने का कोई उपाय उसने नहीं किया। यह दरार अब और बड़ी हो गई। अन्त को दीवार के गिरने की नौबत आ गई। दरार को भरने का काम रुपया दो रुपया में हो जाता। उसके बजाय अब सौ दो सौ रुपया ख़र्च करने की आवश्यकता पड़ी। जो कुछ समय पर करना चाहिए उसे दूसरे समय के लिए टाल देने से बहुत हानि उठानी पड़ती है।

बालक छः महीने का हो गया। तब तक उसके टीका लगवाने का प्रबन्ध नहीं किया। अब जाड़ा बीत गया और गरमी आ गई है, इसलिए आगामी वर्ष ही टीका लगवायँगे। यह विचार किये अभी एक पखवाड़ा भी नहीं बीता था कि गाँव में चेचक फूट निकली। इस रोग से बहुत से बच्चे मृत्यु की भेंट हो जाते हैं। उस बालक को भी चेचक निकली और बड़े ज़ोर की निकली। सारा शरीर फफोलों से भर गया। तिल भर भी जगह ख़ाली न रही। अन्त को इसी दुःख में वह मर गया। माँ ने सिर और छाती ख़ूब पीटी, परन्तु इससे क्या

बनता था। उसको अपनी भूल का पता लगा तो वह कहने लगी कि हाय, मैंने अपना लाल सा पुत्र अपने हाथों मार डाला। मैंने उसको टीका लगवा दिया होता तो आज यह समय न आता।

कनकलता को एकाएक ज्वर हो आया। दो-एक दिन में अपने आप आराम हो जायगा, इस विचार से उसकी माता ने उसको दवा-दारू देने की कुछ चिन्ता नहीं की। ज्वर एकदम बढ़ गया और कनक को सरसाम हो गया। इतने पर भी माँ की आँख नहीं खुली। उसने सोचा कि रात का समय है, इसलिए सवेरे डाक्टर को बुलाऊँगी। सवेरे वह दातुन-कुल्ले और नहाने-धोने में फँसी रही। इसलिए डाक्टर को आठ बजे बुलाया। परन्तु उसके आने के पहले ही कनक परमेश्वर के पास पहुँच गई। उसकी सुस्ती का ऐसा भयङ्कर परिणाम हुआ।

शब्दार्थ—मेघराज—बादल। भयङ्कर—भयावना।

प्रश्न—किसी काम को ठीक समय पर न करने से क्या हानि होती है? पाँच ऐसे उदाहरण दो जिनसे पता लगे कि समय पर काम न करने से बाद को भारी हानि हो जाती है।

———

२२—विमला का दुपट्टा

विमला रोती-रोती चमेली के पास जाकर कहने लगी—बहन, देखो मेरा दुपट्टा फट गया है। अब मैं क्या करूँ? मैंने संदूक़ को आगे की ओर हटा दिया होता तो उसकी उखड़ी हुई लोहे की पत्ती दुपट्टे में न फँसती।

धीरज—सन्दूक़ को हटाने की कोई ज़रूरत न थी। बीच में आने-जाने के लिए बहुत जगह थी। यदि विमला ध्यान से चलती तो उसका दुपट्टा कभी न फटता।

विमला—ठीक है बहन, इसमें मेरा ही दोष है। मैं टेढ़ा-मेढ़ा और इधर-उधर देखे बिना भागी, इसी से ऐसा हुआ। दुपट्टे में छेद हो रहा था। इससे वह लोहे में फँसकर अधिक फट गया।

चमेली—उस छेद को तुरन्त सी दिया होता तो दुपट्टा अधिक न फटता। अच्छा, तेरे दुपट्टे में छेद कैसे हुआ था?

विमला—बहन, क्या कहूँ। उसमें भी मेरा ही दोष था। पाठशाला में बेंच पर बैठते समय मैंने नहीं देखा। बेंच में एक जगह कील निकली हुई थी। मैं उसके पास ही बैठ गई। दुपट्टे के दब जाने से उसमें कील घुस गई थी। माँ ने मुझसे सी लेने को कहा था;

पर मुझे अच्छी तरह सीना नहीं आता। मैंने सोचा कि मैं अच्छा नहीं सी सकूँगी तो मेरी हँसी होगी। इसलिए मैंने दुपट्टा वैसे का वैसा रहने दिया। फटा हुआ दुपट्टा ओढ़कर न तो मैं बाहर निकल सकती हूँ और न तुम्हारे साथ बाजा सुनने ही जा सकती हूँ। इससे मुझे दुःख होता है। दुपट्टा फटने की बात माँ सुनेगी तो मुझे डाँटेगी।

धीरज—बहन, जो हुआ सो हुआ। घूम-फिरकर काम करते समय सावधान रहना चाहिए। तेरे बिना आज हम बाजा सुनने नहीं जायँगी। तू कहे तो हम सीने की सामग्री ले आयँ और सब सीने बैठें।

तीनों के बीच जो बातचीत हुई उसे विमला की माँ दूसरे कमरे में सुन रही थी। उसने आकर कहा—बेटी विमला, तूने अपनी भूल मान ली और उसके लिए तू पछतावा भी करती है, इससे मेरा क्रोध शान्त हो गया। बेटियो, बड़ी प्रसन्नता की बात है कि तुम विमला को छोड़कर बाजा सुनने नहीं गई, और उसके साथ सीना लेकर बैठी हो। दुपट्टा ऐसा फट गया है कि टाँका लगाने से ठीक नहीं हो सकता। इसलिए थेगली लगानी पड़ेगी। परन्तु थेगली का कपड़ा उसी रङ्ग और उसी प्रकार का होना चाहिए जिसका दुपट्टा है। विमला के

लिए दुपट्टा बनवाते समय उसमें से मैंने थोड़ा सा कपड़ा रख लिया था। नया कपड़ा सीते समय जो चिथड़ा बचे उसे इकट्ठा करके रख छोड़ना चाहिए। मैं थेगली के लिए कपड़ा ले आऊँ; तब तक तुम सीने की तैयारी कर रक्खो।

तीनों ही अपनी छोटी-छोटी पिटारियाँ ले आईं। उनमें से उन्होंने क़ैंची, सुई और तागा बाहर निकाला। अभी उनको अच्छी तरह सीना नहीं आता था। चमेली ने अपनी गुड़िया की कमीज़ का कपड़ा हाथ में लिया। धीरज बटुवा बनाने लगी। विमला दाहने हाथ की मध्यमा उँगली में अंगुशताना पहनकर बैठी।

विमला ने, माँ के आ जाने पर, पूछा—माँजी, कौन सी सुई लूँ?

माँ ने कहा—मध्यम नंबर की सुई लेकर उसमें दुपट्टे के रङ्ग का तागा डाल। जिस भाँति और बनावट का कपड़ा है उसी के अनुसार थेगली ले। फिर उसे अच्छी तरह से रखकर उसका किनारा मरोड़ और सफ़ाई से सी। इसके पश्चात् फटे हुए भाग का किनारा भी सुई से मरोड़कर सी दे। तागा बहुत लम्बा न लेना। सीना ऐसे ढङ्ग से चाहिए कि गाँठ सदा तुरपन के भीतर की ओर रहे। तागे को बहुत मत खींचो।

सिलाई भी बहुत बारीक न करके सीधी और एक सी होनी चाहिए। जो कुछ सीना हो उसे पहले कच्चा कर ले। सीने के बाद सुई को पुड़िया में न रखकर फ़ला-लेन के टुकड़े में चुभोकर रखना चाहिए। सीने की सामग्री की पिटारी में मोम का कपड़ा रखना चाहिए। सीते समय कपड़ा मरोड़ा जाय या तागा टेढ़ा-मेढ़ा हो जाय तो वह ख़राब दीखता है।

विमला ने माँ के बताये अनुसार ध्यान देकर काम किया। इससे थेगली बहुत अच्छी टाँकी गई।

शब्दार्थ—सावधान—चौकन्ना। सामग्री—सामान।

प्रश्न—थेगली लगाते समय किन-किन बातो का ध्यान रखना चाहिए? थेगली और तागा किस रङ्ग का होना चाहिए? सूई को फलालेन के टुकड़े मे क्यो रखना चाहिए?

२३—जननी मम प्यारी

जय, जय, जय जन्म-भूमि जननी! मम प्यारी।
जल की जहँ बहत धार, डोलत शीतल बयार,
गिरि-वन शोभा अपार, अनुपम छवि वारी।
जय, जय, जय जन्म-भूमि० ॥१॥

उपजत जहँ विपुल धान, केसर फल फूल पान,
पक्षीगण करत गान, हरषित नर नारी।
जय, जय, जय जन्म-भूमि० ॥२॥
प्रगटे जहँ जनक राय, त्रिभुवन यश रह्यो छाय,
ह्वै विदेह सब विहाय, ज्ञानी अति भारी।
जय, जय, जय जन्म-भूमि० ॥३॥
चन्द्रगुप्त नृप महान, नानक सम नीतिमान,
भये जहाँ गुननिधान, जाऊँ बलिहारी॥
जय, जय, जय जन्म-भूमि० ॥४॥

शब्दार्थ—जननी—माता। मम—मेरा। बयार—पवन। वारी—वाली। गिरि—पहाड़। विपुल—बहुत। त्रिभुवन—तीन लोक। ह्वै—हो गये। विहाय—छोड़कर। सम—समान, जैसे। गुननिधान—गुणों का ख़ज़ाना।

प्रश्न—जनक, चन्द्रगुप्त और नानक के सम्बन्ध में क्या जानते हो?

२४—विमला सीना कैसे सीखी (१)

विमला ने माँ के कथन के अनुसार ध्यान देकर थेगली लगाई। वह उसे भी पसंद आई। दुपट्टा ओढ़कर वह बाजा सुनने जा सकी। उसकी सहेलियाँ

ने थेगली की प्रशंसा की। इससे विमला को बड़ा हर्ष हुआ। वह पहले सीने से जी चुराया करती थी। पर अब उसकी वह अवस्था न रही। उसने एक दिन माँ से कहा—माँ जी, आप मुझे थोड़ा-थोड़ा सीने का काम सिखाती रहें तो बड़ा अच्छा हो—

ज्ञानवती—बेटी, तेरी इच्छा हुई है तो मैं तुझे बड़ी प्रसन्नता से सिखाऊँगी। पाठशाला में तू सीना सीखती ही है, घर पर भी थोड़ा थोड़ा सीखती रहेगी तो तुझे जल्दी आ जायगा। ऐसा कर कि तेरी सहेलियाँ—चमेली और धीरज—भी तेरे साथ सीने बैठा करें। दो-तीन जन एक साथ काम करते हैं तो एक दूसरे की देखा-देखी काम अच्छा होता है।

विमला—कल से हम तीनों एक साथ बैठेंगी।

दूसरे दिन विमला, चमेली और धीरज अपनी-अपनी पिटारी लेकर बैठीं। ज्ञानवती ने पास बैठकर कहा—बेटियो! स्त्रियों को सीना ज़रूर आना चाहिए। अपने और बाल-बच्चों के कपड़े बार-बार फटते हैं। कभी कोर उधड़ जाती है और कभी बटन टूट जाता है। हर वक़्त दरज़ी को बुलाना आसान नहीं। और दरज़ी के आने तक हमें तकलीफ़ उठानी पड़ती है और साथ ही दूसरे के भरोसे रहना पड़ता है।

चमेली—हाँ चाची, यह बात ठीक है। बुआ अमृता को सुई भी पकड़ना नहीं आता। इसलिए, जब कभी कपड़ा फटता है तो वह टाँका लगवाने के लिए मुझे बुलाती है। उसकी चोली की बाँहें लम्बी थीं, इसलिए उसने मुझसे चुनट डलवाई थी।

ज्ञानवती—देखो बेटी! तुझे सीना आता है, तभी उसने तुझे बुलाया। हमें अच्छी सिलाई आती हो तो हम नये-नये तर्ज़ के कपड़े अपने हाथ से सी सकती हैं। इससे दरज़ी को पैसे नहीं देने पड़ेंगे और जैसी हमारी इच्छा होगी उसी नमूने का कपड़ा हम बना सकेंगी। कितनी ही स्त्रियाँ तो सीने में दरज़ी को भी मात कर देती हैं।

धीरज—हमारी इच्छा बढ़िया सिलाई सीखने की है।

ज्ञानवती—बहुत अच्छा बेटी! जो तुम्हारी इच्छा हुई है तो ज़रूर तुम्हें अपने काम में सफलता होगी। इच्छा होने के बाद तन देकर काम करो और जब तक सफलता न हो जाय तब तक बराबर लगी रहो। एक-दो बार न आवे तो इससे घबराओ मत। सिलाई के साथ-साथ जो तुम्हें बुनना भी आ जाय तो बहुत लाभ हो। पर, अभी तो तुम्हें सिलाई पर ही पूरी तरह से ध्यान देना चाहिए। देखूँ तो सही, तुम्हारी पिटारियों में क्या-क्या है।

सब ने अपनी-अपनी पिटारियाँ खोलीं। उनमें से सामान बाहर निकाला। तागा, सूई और अँगूठी सब की पिटारी में थी। धीरज की पिटारी में क़ैंची न होने से ज्ञानवती ने कहा—बेटी धीरज, जिसे सीने का काम करना हो उसे अपने पास अच्छी क़ैंची रखनी चाहिए; क्योंकि उसका काम बार-बार पड़ता है। घर में न हो तो बाज़ार से एक छोटी, परन्तु अच्छी धारवाली, क़ैंची ज़रूर मँगा लेनी चाहिए।

शब्दार्थ—कथन के अनुसार—कहने के मुताबिक़।

प्रश्न—सिलाई के लिए क्या-क्या सामान चाहिए?

२५—विमला सीना कैसे सीखी (२)

दूसरे दिन ज्ञानवती ने कहा—तुम्हारी पिटारियों में मापने का कोई साधन नहीं है। दरज़ी जहाँ जाता है, गज़ और क़ैंची अपने पास रखता है। कपड़ा मापने में दोनों चीज़ों का काम पड़ता है। लकड़ी या लोहे का गज़ छोटी पिटारी में नहीं रक्खा जा सकता। इसलिए एक कपड़े का गज़ बना रखना चाहिए। अँगरेज़ी फ़ुट बना-

बनाया मिलता है। वह .फुट बीच में से मुड़ सकता हो तो काम चल सकता है।

विमला—मापने का काम तो बहुत कठिन है।

ज्ञानवती—हाँ बेटी, यह काम सचमुच कठिन है परन्तु उसका सीखना ज़रूरी है। कितने ही सीनेवालों को मापना नहीं आता। इसलिए उनको दरज़ी की आवश्यकता पड़ती है। आरम्भ में माप के अनुसार काग़ज़ काटना चाहिए। इसलिए कुरता आदि जैसा चाहिए, माप के अनुसार काग़ज़ पर से काटना चाहिए। जिसके लिए कपड़ा सीना हो उसके अङ्ग का माप लेकर उसके अनुसार कपड़ा ब्योंतना चाहिए, नहीं तो वह छोटा या बड़ा हो जाता है। छोटा हो जाने पर वह पहना नहीं जा सकता; तङ्ग हो तो शरीर को दुःख देता है और जल्दी फट जाता है। बहुत बड़ा हो तो कपड़ा ज़ियादा लगता है और देखने में भी भद्दा जान पड़ता है।

धीरज—देखिए, मुझे चोली सीनी है। मैं जान-बूझकर उसे बड़ी रक्खूँगी।

ज्ञानवती—कभी-कभी कोई कपड़ा बहुत क़ीमती होता है। वह बहुत दिन चलता है। बालकों के लिए ऐसे कपड़े तङ्ग सिलाये हों तो आगे चलकर वे छोटे हो जाते हैं। बड़े कपड़ों में चुनट डाल देने से वे काम में

आ सकते हैं। प्रत्येक कपड़ा थोड़ा-बहुत ढीला रखना ही चाहिए। स्त्रियों के कपड़ों मे सबसे अधिक कारीगरी चोली सीने में होती है। इसमें जुदा-जुदा माप और नमूने के बहुत से कपड़े इकट्ठे करने और जुदा-जुदा रङ्ग के टुकड़े जोड़ने पड़ते हैं। उनके रंग का मेल मिलाना पडता है। चोली सीने का काम सबसे पीछे लेना चाहिए। तुम्हें बटुये, थैलियाँ और सादे कुरते सीने आते हैं। कुरता ब्योंतने का काम कठिन नहीं; क्योंकि उसमें बहुत टुकड़ों की ज़रूरत नही पड़ती। बालक का माप लेकर उसी के अनुसार कपड़ा काट लिया जाता है। ब्योंतते समय एक बात ख़ूब ध्यान में रखनी चाहिए। वह यह कि जैसे भी हो, कपड़ा व्यर्थ न जाय।

चमेली—माप लेकर कपड़ा ब्योंतें तो वह व्यर्थ कैसे जा सकता है?

ज्ञानवती—तुमने जो माप लिया है उसके अनुसार यदि कपड़े की लम्बाई-चौड़ाई न हो या अलग-अलग माप के टुकड़े काटने में सावधानी न की जाय, तो कपड़े में से बहुत सी चिन्धियाँ व्यर्थ निकल जायँगी। इस तरह ब्योंतना चाहिए जिसमें चिथड़े और चिन्धियाँ कम निकलें।

विमला—कतरन और चिन्धियाँ बहुत निकलेंगी तो वे व्यर्थ जायँगी, यह बात सच ही है।

ज्ञानवती—वे बहुत निकलेंगी तो कपड़ा बहुत लगेगा और हानि होगी। बड़े-बड़े टुकड़े निकलेंगे तो सीने के काम आ जायँगे। बाक़ी के टुकड़ों को थेगली लगाने के लिए सँभालकर रख छोड़ना चाहिए। टुकड़े होंगे तो बटुवे बनाने, पट्टी बाँधने, मगज़ी लगाने और पल्ला आदि की कोर लगाने में काम आ जायँगे। उन को व्यर्थ समझकर फेंक नहीं देना चाहिए।

शब्दार्थ—क़ीमती—ज़्यादा दाम की। आरम्भ—शुरू।

प्रश्न—ब्योंतने में किस बात का ध्यान रखना चाहिए? स्त्रियों के कपड़ों में से कौन सा कपड़ा सीना अधिक कठिन है?

२६—विमला सीना कैसे सीखी (३)

तीनों लड़कियाँ कई दिन तक काग़ज़ के अँगरखे और कुरते ब्योंतने का अभ्यास करती रहीं। फिर ज्ञानवती ने उन्हें कपड़े में से अँगरखे और कुरते काटना सिखाया। उसने बताया कि काटते समय पहले कपड़े पर चाक या पेंसिल से निशान लगा लेना चाहिए, ताकि कैंची टेढ़ी-मेढ़ी न चल जाय। इसके लिए पेंसिल

या चाक का टुकड़ा पिटारी में रखना चाहिए। अब तीनों लड़कियाँ कुरता* सीने लगीं।

ज्ञानवती ने कहा—बेटियो, सीते-पिरोते समय तुम्हें कई बातों का ध्यान रखना चाहिए।

चमेली—चाचीजी, कृपा कर बताइए, वे कौन-कौन बातें हैं।

ज्ञानवती—सीने को बैठने से पहले हाथों को ख़ूब धोकर साफ़ कर लेना चाहिए। हाथों में मैल लगा होगा तो कपड़ा मैला हो जायगा। बहुत बार हमें ऐसा जान पड़ता है कि हमारे हाथ साफ़ हैं; पर वे सचमुच पूरे-पूरे साफ़ नहीं होते। हाथों में थोड़ा भी मैल लगा हो तो वह कपड़े को लगे बिना नहीं रहता। बिना कुछ बिछाये भूमि पर सीने को मत बैठो और बिछाई हुई चटाई के बाहर कपड़े को मत गिरने दो। कपड़ा भूमि पर घिसेगा तो मैला हुए बिना न रहेगा।

---

* कुरता ब्योंतने की एक रीति यह है—

कुरते की लम्बाई मापने के लिए टेप का सिरा गले के पास कन्धे पर रखो और कुरता जितना नीचा रखना हो वहाँ तक टेप रखकर माप लो। चौड़ाई के लिए एक बगल से दूसरी बगल तक पल्ला माप लो। अगला पल्ला पिछले से सदा ज़ियादा ढीला रक्खो। हाथ को दुहरा करके बाँह को मापो।

विमला—इन दोनों बातों का हम बराबर ध्यान रक्खेंगी। और बातें क्या हैं?

ज्ञानवती—जैसी सिलाई करनी हो उसके अनुसार ही सुई और तागा लेना चाहिए। सुई की पुड़िया पर नम्बर लिखा रहता है। उससे छोटी-बड़ी सुई का पता लग जाता है। छोटी और बड़ी सुइयाँ एक नली मे रख देनी चाहिएँ या नम्बर के अनुसार एक मोटे कागज़ में ऊपर-नीचे लगा रखनी चाहिएँ। मोटे तागे के गोले और रीलें मिलती हैं। रङ्गदार तागे के टिकट मिलते हैं। इनमें से अपने काम का तागा चुन लेना चाहिए। सीते समय तागे के टेढ़ा-मेढ़ा हो जाने से सीवन ख़राब दिखाई देती है। जब तक पूरा-पूरा अभ्यास न हो जाय, चाक या पेंसिल की लकीरें खींचते रहना चाहिए। तागा और बख़िया एक समान और महीन हो। वह छोटा-बड़ा होगा तो सिलाई अच्छी न लगेगी। सिलाई जितनी बारीक हो उतनी ही अच्छी समझी जाती है।

धीरज—चाचीजी, आप जैसी सुन्दर सिलाई हमें कब आयगी?

ज्ञानवती—बेटियो, तुम ध्यान देकर काम करोगी तो बरस दो बरस में बहुत कुछ सीख जाओगी। कच्चा करने के बाद तुरपना हो तो जितनी चाहिए उतनी ही कोर

रखनी चाहिए। यह कोर एक जगह छोटी और दूसरी जगह बड़ी होगी तो तुरपन छोटी-बड़ी हो जायगी। किसी जगह कोर टेढ़ी-मेढ़ी रह जायगी तो वह तुरपी न जा सकेगी। दो कोरें आगे-पीछे हो जायँगी तो तुरपने में कठिनाई होगी। कोई बड़ा कपड़ा सीना हो तो दरज़ी भी लकीरें खींचते या टाँका लगाकर रखते हैं। कपड़े को खिसकने न देने के लिए विलायत में क्लिप लगा दी जाती है।

विमला और उसकी सहेलियाँ, ज्ञानवती के कहने के अनुसार, रोज़ काम करने लगीं। ज्ञानवती उनके पास बैठकर उनकी भूलें सुधारती थी। जब वे कुरते और क़मीज़ें सीना अच्छी तरह सीख गईं तब ज्ञानवती ने उन्हें बण्डियाँ, पायजामे, चोलियाँ और कोट काटना और सीना सिखाया। आगे चलकर वे अँगरखा और चोली भी तैयार करने लगीं। उनके सिये हुए कपड़ों की प्रशंसा सब कहीं होने लगी।

शब्दार्थ—बारीक—महीन। ध्यान देना—मन लगाना। भूल—ग़लती।

प्रश्न—सीने को बैठने से पहले क्या करना चाहिए? क्या करने से सिलाई टेढ़ी-मेढ़ी नहीं होती? कुरते की लम्बाई कैसे मापी जाती है?

—

२७—बड़ाई दिखाने का फल

लज्जावती—सुलोचना के यहाँ लली का विवाह कर देने को मैं बहुत दिन से कह रही हूँ। पर आपकी तो नींद ही नहीं खुलती। इस वर को कोई दूसरा उड़ा लेगा तो फिर हमें ऐसा घर न मिलेगा। लली बड़ी होने आई है। इससे मेरे मन को तनिक भी चैन नहीं मिलता।

रामगोपाल—मैंने राय साहब युगलकिशोर से दो-एक बार पूछा था। पर वे पाँच हज़ार रुपया दहेज़ माँगते हैं। इसके अतिरिक्त और भी कई ऐसी शर्तें करते हैं जिनको हम पूरा नहीं कर सकते।

लज्जावती—कुलीन तो दहेज़ माँगेगा ही। हमें इतना दहेज़ देना कोई भारी नहीं।

रामगोपाल—भारी क्यों नहीं?

लज्जावती—हमें सरकार से जागीर में बहुत सा रुपया मिलता है। गाँव की भी उपज आ जाती है। बाग़-बग़ीचे की आय अलग है।

रामगोपाल—यह तो ठीक है, पर हमारे सिर पर ऋण का कितना बड़ा पहाड़ है और हमारा कितना ख़र्च है, इसका भी तुमने कभी विचार किया है? पिताजी

पचास हज़ार रुपये का ऋण छोड़ मरे थे। उनके ब्याज में गाँव की उपज चली जाती है। दूसरी जितनी आय आती है उसकी अपेक्षा हमारा ख़र्च अधिक है। अतएव ऋण का बोझ ही बढ़ता जाता है।

लज्जावती—हम कौन बड़ा ख़र्च कर रहे हैं? कोई हलवा-पूरी तो रोज़ खाते ही नहीं।

रामगोपाल—हलवा-पूरी खाने से बहुत घाटा नहीं होता, परन्तु कुटुम्ब की नाक रखने के लिए बहुत तरह का ख़र्च करना पड़ता है। तुम्हें पैसे का मूल्य मालूम नहीं। बाल-बच्चों के और तुम्हारे कपड़ों पर कितना व्यय होता है, इसका तो विचार करो। कोई नया गहना देखा नहीं कि उसे ख़रीदने के लिए तुम तैयार हुई नहीं। जहाँ एक रुपये से काम चल सकता है वहाँ तुम पाँच रुपये ख़र्च डालती हो। तुम्हें सब सफ़ेद चीज़ें दूध ही दीखती हैं। पर तुम्हें ज्ञान नहीं कि हमारी ठीक-ठीक अवस्था कैसी क्या है।

लज्जावती—तो क्या मैं अधिक ख़र्च किया करती हूँ? क्या अपने घर की स्थिति के अनुसार कपड़ा-लत्ता और गहना नहीं पहनना चाहिए? हमारे बच्चे कंगालों की तरह रहें, यह मुझसे तो नहीं देखा जाता। ऐसी-ऐसी बातें करके तुम सुलोचना के यहाँ विवाह करने की

बात टाल देना चाहते हो। परन्तु यदि लली के लिए वही घर नहीं देखोगे तो अच्छा न होगा।

रामगोपाल—मितव्ययिता से घर चलाना स्त्रियों का काम है। अपनी स्थिति के अनुसार आवश्यक ख़र्च तो करना ही चाहिए, परन्तु उड़ाऊ बनना अच्छा नहीं। अपनी बिरादरी में जिस-जिसने बड़प्पन दिखाया वही खस्ता-ख़राब हो गया है। यह बात ध्यान देने योग्य है। यदि सुलोचना का घर नहीं मिलेगा तो कोई दूसरा अच्छा घर खोज लेंगे।

रामगोपाल ने लज्जावती को बहुतेरा समझाया पर उसका मन नहीं माना। उसने हठ करके पुत्री का विवाह रायसाहब युगलकिशोर के यहाँ कर दिया और विवाह के समय, जाति-बिरादरी में बड़प्पन दिखाने के लिए, ख़ूब धूम-धाम से ख़र्च में कोई कोर-कसर न उठा रक्खी। लड़के के विवाह पर भी उसने मर्यादा से बढ़कर पैसा उड़ाया। रोज़ की खट-खट से तङ्ग आकर रामगोपाल, लज्जावती के कहने के अनुसार, इतना अधिक ख़र्चीला बन गया कि अन्त को उसे बाग़-बग़ीचा गिरो रखने और घर-बार बेच डालने की नौबत आ गई। घर-बार और बाग़-बग़ीचा सब साहूकारों के घर चला गया और उसे एक छोटे से घर में, कङ्गाल की भाँति, रहना पड़ा।

शब्दार्थ—आय—आमदनी। मितव्ययिता—आय से कम खर्च करना।

प्रश्न—रुपये खर्च करने में किस बात का ध्यान रखना चाहिए?

२८—निन्दा

शङ्करी को काम करने की अपेक्षा गप लड़ाना अधिक अच्छा लगता था। घर में काम बिगड़ रहा हो, बच्चे भूख से व्याकुल हो रहे हों, या आपस में लड़-भिड़ रहे हों तो उनकी कुछ भी परवा न करके वह दरवाज़े पर जा बैठती। दो-चार स्त्रियाँ इकट्ठी हुईं कि निन्दा करने लगीं। ज्ञान या आनन्द की बातें छोड़कर दूसरों की निन्दा करने से अपनी जीभ अपवित्र हो जाती है और हम पाप में गिरते हैं, यह विचार शङ्करी को और उसकी सहेलियों को कभी नहीं होता था।

पराई निन्दा और किसी का सच-झूठ करने में कुछ लाभ नहीं। वरन् कई बार तो इससे बहुत दुःख उठाना पड़ता है।

शङ्करी ने एक दिन विद्यावती की बात चलते ही कहा—अब तो वह पति की बहुत प्यारी बनी है। अब उसका पाँव ही पृथ्वी पर नहीं पड़ता। वह सास-ससुर

को कुछ समझती ही नहीं। देवरानी-जेठानी के साथ रोज़ लड़ती है। ननँद को ठीकरे में पानी पिलाती है और सब को अपने से हलका समझती है। एक दिन मुझसे मिलने आई तो ऐसी बड़ाई हाँकने लगी कि मुझे भी उसे दो बातें सुनानी पड़ीं। भाँति-भाँति के कपड़े और तरह-तरह के गहने पहनकर वह अपना बड़प्पन दिखाना चाहती है। पर वह अपना रूप और पीहर की अवस्था भूल जाती है। लड़का मेरे बराबर हो गया है, पर कोई उसे लड़की देने को तैयार नहीं हुआ। बाप का सोलहवाँ अभी तक नही किया। बन-ठनकर फिरना तो सब को आता है पर जात-बिरादरी में नाम निकालना कोई आसान काम नहीं।

यमुना बोली—बहन ! आज-कल तो समय ही ऐसा है। खाया-पिया और दीवाला निकाल दिया—लोगों ने यही रीति बना रक्खी है। मुझसे विद्यावती की पड़ोसिन कहती थी कि उसकी आँखों में तो सरसों फूल रही हैं। पीहर में तो पेट भरकर खाने को भी नहीं मिलता था। उसको पैसेवाली सुसराल मिल गई; पानी माँगे तो दूध दे, ऐसा पति मिल गया; और कोख से अच्छे बच्चे पैदा हो गये। इसलिए बन्दर को सीढ़ी मिलने की-सी बात हुई।

के विरुद्ध जो-जो बातें की हैं उनमें कितनी ही निर्मूल हैं और कितनी ही दूसरों के मत में पसंद करने योग्य हैं। मैं अपने अनुभव से कहती हूँ कि वह अभिमानिनी नहीं है। सास-ससुर, देवरानी-जेठानी और ननदों के साथ उसकी ख़ूब पटती है। पैसा होने से सब की रीति-नीति में हेर-फेर हो जाता है और वह सुख-चैन में रहने का प्रयत्न करता है। इसमें बुरा क्या है? जो विद्या पढ़ेगा उसके विचार तथा रीति-भाँति बदल जायगी। यह स्वाभाविक है। गम्भी-रता-पूर्वक सोचोगी तो तुम्हें भी उसके विचार पसन्द आयँगे।

सुन्दरबाई के कथन का असर सब सुननेवालियों पर पड़ा और उस दिन से शङ्करी आदि ने गली में बैठकर निन्दा करना छोड़ दिया।

शब्दार्थ—पीढ़ी—पुश्त। कल्याण—भलाई। परीक्षा—जाँच। निन्दा—बुराई।

प्रश्न—निन्दा करने का शङ्करी को क्या फल मिला? निन्दा करना क्यों बुरा है?

२६—शकुन्तला की विदा

[अध्यापिका को चाहिए कि पाठ आरम्भ करने के पहले शकुन्तला की सारी कथा लड़कियों को सुना दे।]

शान्त-हृदय वात्सल्य-करुण से सना हुआ है।
कण्व-तपोवन आज सदन सा बना हुआ है।
शकुन्तला की विदा आज है प्रिय के घर को—
विदित हुआ सब वृत्त हर्षपूर्वक मुनिवर को ॥१॥

वे पुत्री के लिए चाहते थे वर जैसा—
निज सुकृतों से स्वयं पा लिया उसने वैसा।
यह विचार कर तुष्ट हुए वे अपने मन में।
साज सजाये गये विदा के पावन वन में ॥२॥

शकुन्तला क्या जाय, हाय! वल्कल ही पहने!
वनदेवों ने दिये उसे सुंदर पट-गहने।
सखियों ने शृङ्गार किया उसका मनमाना,
जिसको अन्तिम समझ बहुत कुछ उसने जाना ॥३॥

प्रिय-दर्शन का उसे यदपि उत्साह बड़ा था,
पर स्वजनों का विरह-ताप भी बहुत कड़ा था।
विकल हुई वह उभय ओर की बाधा सहती,
ऊपर-नीचे भूमि यथा आकर्षित रहती ॥४॥

चारों ओर उदास भाव आश्रम में छाये।
सखियों के भी नेत्र आँसुओं से भर आये।
किन्तु उन्होंने कहा—"सखी, कुछ सोच न कीजो।
प्रिय को उनकी नाम-मुद्रिका दिखला दीजो" ॥५॥

शकुन्तला कुछ कह न सकी गद्गद होने से,
था पवित्र कुछ और न उसके उस रोने से।
भावी-जीवन प्रेम-पूर्ण हो खिल सकता है,
यह बिछुड़ा धन किन्तु कहाँ फिर मिल सकता है? ॥६॥

त्यागी थे मुनि कण्व, उन्हें भी करुणा आई;
होती है बस सुता धरोहर, वस्तु पराई।
होम-शिखा की परिक्रमा उससे करवाई,
और उन्होंने स्वस्ति-गिरा यों उसे सुनाई ॥७॥

"तुझको पति के यहाँ मिले सब भाँति प्रतिष्ठा,
ज्यों ययाति के यहाँ हुई पूजित शर्मिष्ठा।
सार्व-भौम पुरु पुत्र हुआ था उसके जैसे—
तेरे भी कुल-दीप दिव्य औरस हो वैसे ॥८॥

"गुरुओं की सम्मान-सहित शुश्रूषा करियो,
सखी-भाव से हृदय सदा सौतों का हरियो।
करे यदपि अपमान, मान मत कीजो पति से;
हूजो अति सन्तुष्ट स्वल्प भी उसकी रति से ॥९॥

"परिजन को अनुकूल आचरण से सुख दीजो,
कभी भूलकर बड़े भाग्य पर गर्व न कीजो।
इसी चाल से स्त्रियाँ सुगृहिणी-पद पाती हैं,
उलटी चलकर वंश-व्याधियाँ कहलाती हैं ॥१०॥

"शकुन्तले! निश्चित आज हूँ यद्यपि तुझसे,
सहा न जाता किन्तु विरह यह तेरा मुझसे।
अहो! गृहस्थ-समान मानता हूँ अपने को,
सच्चा सा मैं आज जानता हूँ सपने को ॥११॥

"सुते! तव स्मृति-चिह्न तपोवन में बहुतेरे—
देते थे जो महा मोद मानस में मेरे।
उदासीनता बढ़ा रहे हैं आज सभी ये,
कुछ के कुछ हो गये दृश्य सब अभी-अभी ये ॥१२॥

"सारा आश्रम आज शून्यता दिखलाता है,
वन से भी वैराग्य-भाव बढ़ता जाता है।
वनदेवी सी कौन विपिन में अब विचरेगी?
मृग-सन्तति अब किसे घेरकर खेल करेगी? ॥१३॥

"कौन मालिनी-तीर नीर लेने जावेगी?
कौन मछलियाँ चुगा-चुगाकर सुख पावेगी?
कौन प्रेम से पुष्प-वाटिका को सींचेगी?
कौन अचानक सखी-जनों के दृग मींचेगी? ॥१४॥

"कौन दौड़कर शीघ्र उठाने को हीरे से—
नीड़-च्युत खग-पोत सँभालेगी धीरे से ?
रङ्ग-रङ्ग के वन-विहङ्ग पेड़ों से उड़कर—
बोलेंगे मृदु वचन बैठ किसके अङ्गों पर ? ॥१५॥

"बिना कहे ही कौन अखिल आलसता त्यागे—
रक्खेगी होमोपकरण वेदी के आगे ?
मेरे पथ के कौन कास-कण्टक चुन लेगी ?
कौन उचित आतिथ्य अतिथि लोगों को देगी ? ॥१६॥

"वेदी खुदती देख हरिण-शृङ्गों के मारे—
'बेटी' कहकर किसे बुलाऊँगा मैं द्वारे ?
किसको अपना देख शान्त वे हो जावेंगे ?
अपनी खोई हुई सम्पदा-सी पावेंगे ॥१७॥

"जाने दूँ, यह विषय और भी है दुखदाई,
सुते ! धैर्य धर, बने मार्ग तेरा सुखदाई।
मेरा यह उपदेश कभी तू भूल न जाना,
शील-सुधा से सींच जगत् को स्वर्ग बनाना" ॥१८॥

यों कहकर जब मौन हुए मुनि सकरुण होकर—
शकुन्तला गिर पड़ी पदों पर उनके रोकर।
"होंगे कब हे तात ! तपोवन के दर्शन फिर ?"
इतना कहकर हुई दुःख से वह अति अस्थिर ॥१९॥

"रहकर चिरदिन भूमि-सपत्नी नृप की रानी,
रुके न जिसका मार्ग पुत्र पाकर कुल-मानी।
करके उसका ब्याह, राजसिंहासन देकर—
आवेगी पति-संग यहाँ फिर तू यश लेकर ॥२०॥

"जब तू प्रिय के यहाँ सुगृहिणी-पद पावेगी,
गुरु-कार्यों में लीन सदा सुख सरसावेगी।
रवि को प्राची-सदृश श्रेष्ठ सुत उपजावेगी,
तब यह मेरा विरह-दुःख सब विसरावेगी" ॥२१॥

योंही बहुविध उसे कण्व मुनि ने समझाया,
विदा किया, दो शिष्यवरों को संग पठाया।
गई गौतमी तपस्विनी भी पहुँचाने को;
उसका शुभ-सौभाग्य देखकर सुख पाने को ॥२२॥

शकुन्तला घर गई, विपिन को सूना करके,
दोनों सखियाँ फिरीं किसी विध धीरज धरके।
मोरों ने निज नृत्य, मृगों ने चरना छोड़ा;
हिमगिरि ने भी वाष्प-वारि-सम झरना छोड़ा ॥२३॥

शब्दार्थ—वात्सल्य—प्रेम, स्नेह। सदन—घर। सुकृत—अच्छे काम। वल्कल—पेड की छाल। पट—कपडा। उभय—दोनों। मुद्रिका—अँगूठी। सुता—बेटी। धरोहर—अमानत। स्वस्ति-गिरा—शुभ वाणी। ययाति—एक प्राचीन राजा। रति—

प्रसन्नता। वंश-व्याधि—कुल का रोग। मानस—मन। शून्यता—खालीपन। विपिन—जङ्गल। दृग—आँखे। हीरे से—धीरे से। नीड-च्युत—घोंसले से गिरे हुए। अखिल—सारी। होमोपकरण—हवन की सामग्री। भूमि-सपत्नी—भूमि का मालिक राजा होता है, इसलिए भूमि की सौत रानी हुई।

प्रश्न—कण्व ऋषि ने शकुन्तला को क्या उपदेश दिया? शकुन्तला की विदा के समय कण्व ऋषि को जो दुःख हुआ उसका वर्णन अपने शब्दों में करो।

३०—अति लाड़

ललिता की आँखों में आँसू देखकर उसकी बहन सविता ने कारण पूछा तो वह सिसकियाँ भरती हुई बोली—मैं तो लड़कों से तङ्ग आ गई हूँ। वे सारे दिन धींगा-मुश्ती करते हैं, एक-दूसरे से लड़ते हैं, जो मुँह में आता है कहते हैं, मनमाने काम करते हैं। मैं उन्हें बच्चा-बेटा कहती हूँ, अच्छा खाने को देती हूँ और उन्हें सुख पहुँचाने के उपाय करती हूँ, तो भी वे मुझे नहीं मानते। उलटा तङ्ग करते हैं। मैं क्या करूँ?

सविता—बहन! आज क्या घटना हुई? ज़रा बताओ तो सही।

ललिता—आज बहन लाजवन्ती के यहाँ से थाली आई थी। उसमें से एक भी टुकड़ा मैंने चखकर नहीं देखा। सब लड़कों को दे दिया। एक बोला, मुझे हलवा कम मिला है। दूसरा बोला, मेरे हिस्से में पकौड़े थोड़े आये हैं। इस प्रकार वे आपस में झगड़ने लगे। चन्दू ने मैना के हाथ से पकौड़े छीन लिये। चमेली ने भूषण का हलवा छीन लिया और भूषण ने गायत्री की थाली में से मठा उठा लिया। पहला दोष चन्दू का देख मैं उसे डाँटने गई। इससे वह क्रुद्ध होकर थाली पर से उठ गया और रूठकर कोठरी में जा बैठा। मैंने उसकी बहुतेरी मिन्नत की, पर उसने हठ नहीं छोड़ा। तब मैं उसे ग़ुस्सा होने लगी। इससे वह मुझ पर शेर हो गया और जो बात नहीं कहनी चाहिए वही कहने लगा। वह सारे दिन भूखा-प्यासा पड़ा रहा। इससे मुझे बहुत दुःख हो रहा है।

सविता—चन्दू क्यों बिगड़ गया है, यह मैं जानती हूँ। उसकी सङ्गति से दूसरे बच्चे भी बिगड़ने लगे हैं। बच्चे अपनी माँ के कहने मे न रहकर उसके सामने बोलने लगें, तो इससे क्या समझना चाहिए?

ललिता—इसमें समझने की बात ही क्या है? तुम यही कहना चाहती हो न कि उनको बिगाड़नेवाली मैं ही हूँ?

सविता—मैं ऐसा नहीं कहना चाहती। पर बच्चों को सुधारना माँ-बाप के हाथ में है, यह बात सच है या नहीं?

ललिता—बच्चे ख़राब निकलें तो उसमें माँ-बाप क्या करें? उनकी भलाई के लिए जितना बन पड़ता है, मैं परिश्रम करती हूँ। उनकी सब चिन्ता रखती हूँ। इतने पर भी जब वे मुझे तङ्ग करें और कहना न मानें तो क्या करना चाहिए?

सविता—तुम जो कुछ करती हो वह मर्यादा से बढ़कर करती हो। चन्दू जब छोटा था तब, एक ही होने से, तुमने उसे बहुत सिर चढ़ा दिया और उसे मनमानी करने दी। इसका परिणाम यह हुआ कि अब वह तुम्हें कुछ भी नहीं समझता और मनमानी करता है।

ललिता—यह बात तो ठीक है। जो बच्चे तरसते हुओं को मिले हों उन्हें दुखी क्योंकर किया जाय?

सविता—मैं उन्हें दुखी करने को नहीं कहती। आवश्यकता ऐसा करने की है जिससे वे सब प्रकार से सुख-चैन में बढ़ें, फूलें और अच्छे बनें। परन्तु उनका तुमने आवश्यकता से अधिक लाड़ किया। अति लाड़ से बच्चे सुधरने के बदले बिगड़ते हैं। मेरी इस बात का निश्चय तुम्हें चन्दू के उदाहरण से हुए बिना न रहेगा। अति लाड़ से तुमने उनको लाड़ला बना दिया है।

ललिता—इसके लिए अब मुझे पश्चात्ताप होता है। पर उनके सुधारने का कोई उपाय नहीं सूझता।

सविता—स्वच्छन्द हो जाने पर बच्चों को सुधारने में बड़ी कठिनाई होती है। फिर भी यदि माँ-बाप निश्चय करें तो उनको सुधार भी सकते हैं।

ललिता—उनको कैसे सुधारा जाय, इसका उपाय समझ नहीं पड़ता। चन्दू की बात तो बहुत बढ़ गई है। भाई-बहनों के साथ उसकी घड़ी भर भी नहीं पटती। वह गली के बच्चों के साथ झगड़ा करके लड़ाई खड़ी कर लेता है। घर में पाठ याद नहीं करता। स्कूल में रोज़ नही जाता। लड़-झगड़कर पैसे ले जाता है और जैसे जी चाहता है, खर्च कर डालता है। तुम मानोगी? एक बार तो उसने स्कूल में चोरी भी की थी।

सविता—तब उसके बिगड़ने में बाक़ी क्या रह गया? चोरी करने की बात मालूम हुई तो तुमने क्या उपाय किया?

ललिता—उससे पूछा तो उसने झूठ बोल दिया और खम्भे पर सिर पटकने के लिए तैयार हो गया। इससे मैं तो डर गई। छाती से लगाकर मैंने उसे आश्वासन दिया।

सविता—यह तुमने बुरा किया। इससे तो वह और भी बिगड़ेगा। बच्चों में इतनी समझ होनी चाहिए कि जो काम माता-पिता को बुरा लगता है या जिससे वे अप्रसन्न होते हैं वह कभी न करें। उनके मन में यह भय रहना चाहिए कि यदि हम कोई बुरा काम करेंगे तो हमारे माता-पिता खिझेंगे और डाँट-डपट करेंगे। प्यार के साथ-साथ डर की भी आवश्यकता है।

बच्चों को उलटे मार्ग पर नहीं चलने देना चाहिए। वे हठ करें तो भी उनका कहा न मानना चाहिए। प्यार करते समय बच्चे को अच्छे से अच्छा खाना तो खिलावे पर वह कोई अपराध करे तो उसके कान भी ऐंठ दे। माताएँ यह बात मुँह से कहती तो हैं पर इसके अनुसार आचरण नहीं करतीं। इससे बच्चे बिगड़ जाते हैं। यदि बच्चे दुष्टता करें और समझाने तथा डाँटने पर भी न सुधरें तो उन्हें उचित दण्ड देना चाहिए। यदि उनको विश्वास हो जायगा कि अपराध करने पर हमें क्षमा नहीं किया जायगा तो फिर वे दुष्टता नहीं करेंगे।

ललिता—मुझे तो मार-पीट करना अच्छा नहीं लगता। पले-पलाये बच्चों पर हाथ कैसे उठाऊँ?

सविता—यह मत समझो कि मार-पीट करना कोई शिक्षा है। यह तो अन्तिम उपाय है। जब कोई दूसरा

उपाय काम न दे तभी मार-पीट करनी चाहिए। माँ-बाप की नाराज़गी और डाँट-डपट ही बहुधा पर्याप्त होती है। बच्चा अपराध करे तो कभी-कभी, थोड़ी देर के लिए, उसे खाने को न दे; जो खिलौने उसे अच्छे लगते हों वे न दे; उसका दूसरों के साथ खेलना बन्द कर दे; इस तरह उस पर अपनी अप्रसन्नता प्रकट करे। ऐसे उपाय शिक्षा का काम देते हैं और बच्चों को सुधार देते हैं।

शब्दार्थ—धींगा-मुश्ती—शरारत। स्वच्छन्द—निरकुश, मनमानी करनेवाला।

प्रश्न—बच्चे यदि ख़राब निकले तो इसमें किसका दोष है और कैसे? बिगडे हुए बच्चों को कैसे सुधारा जा सकता है?

३१—छिद्र ढूँढ़ना

एक दिन कनकलता ने मधुमयी से कहा—देखो न, वह प्रेमवती कितनी भाग्यवती है। उसे सब सुख प्राप्त हैं।

मधुमयी—काहे की भाग्यवती! भाग्यवती होती तो उसका एकलौता भाई क्यों मर जाता? ससुराल आने के बाद उसकी सास मर गई। वह तो कुलक्षणी है।

कनकलता—भाई मर गया और सास मर गई, इसमें यह बेचारी क्या करे? मरना-जीना तो ईश्वर के अधीन है। कुलक्षणी समझना तो वहम है। उसके आने के बाद उसके पति का वेतन बढ़ा, उसकी कोख से दो लड़के हुए और घर में धन काफ़ी इकट्ठा हो गया।

मधुमयी—पति का वेतन क्या इसने बढ़ाया है? उस बेचारे को उलटा दूर जाना पड़ा। पाँच रुपये वेतन बढ़ गया तो इसमें कौन सी बड़ी बात हो गई? पुत्र उत्पन्न होने पर प्रसन्न नहीं होना चाहिए। वे अच्छे निकलेंगे तब देखा जायगा। पीहरवालों के वंश में कोई न रहा, इससे धन हो गया।

कनकलता—बहन, ऐसा जान पड़ता है कि तुम तो उसके छिद्र ढूँढ़ने बैठी हो। नौकरी करनेवाले को दूर भी जाना पड़ता है। ऐसे समय में पाँच रुपये की वृद्धि कोई थोड़ी नहीं है। जो लोग चपरासी या हवलदार की नौकरी करते हैं उनका तो कचूमर निकल जाता है। फिर भी उनको बारह-चौदह रुपये से अधिक वेतन नहीं मिलता। केदारनाथजी को तीस रुपये वेतन और क्लार्कगरी जैसा प्रतिष्ठित काम मिला है। प्रेमवती के बच्चे इतने सुन्दर हैं कि देखकर तबियत ख़ुश हो जाती है। वे नित्य पाठशाला जाकर विद्याभ्यास करते हैं। पीहर

का वंशोच्छेद हो जाने से उसे जो पैसा मिला है अन्त को वह है तो उसके पिता का ही। बेटा न हो तो फिर बेटी ही उत्तराधिकारिणी होती है न।

मधुमयी—तुम भले ही उनका बखान करो; लेकिन एक लड़के की नाक बड़ी है और एक की आँखें कञ्जी हैं।

कनकलता—मुझे उनका बखान करने की कुछ आवश्यकता नहीं। मैं तो सच्ची बात कहती हूँ। यदि नाक ज़रा बड़ी हुई तो क्या इससे लड़का कुरूप कहला सकता है? नाक बड़ी है परन्तु तोते की तरह नोक पर से टेढ़ी है। इससे वह सुन्दर ही लगती है। तुम उसे जब अपने बेटे के साथ खड़ा करके तुलना करोगी तब उसे सुन्दर कहे बिना न रहोगी। जो लड़का बहुत गोरा होता है उसकी आँखें कभी-कभी बिल्ली की सी होती हैं। बिल्ली की सी आँखों को बुरा कहने का कोई कारण नहीं।

मधुमयी—उसके लड़कों की चमड़ी गोरी है और मेरे लड़कों की काली है, यही कहती हो न? टेढ़ी-मेढ़ी ही क्यों न हो, फिर भी गेहूँ की रोटी है। मेरे लड़के की आँखें कैसी तेज़ हैं! कञ्जी आँखें क्या अच्छी लगती हैं?

कनकलता—जैसे तुम अपने बच्चे की अच्छी बातें ही देखती हो, बुरी बातें नहीं, वैसे दूसरों के लड़कों के बारे में क्यों नहीं करतीं? प्रेमवती कैसी सयानी और सुशिक्षिता है।

मधुमयी—देख लिया उसका सयानपन। लड़के के लिए अच्छे घर की कन्या आ रही थी। वह ली नहीं, और उस रामलाल की छोटी कन्या पसन्द की।

कनकलता—मैं तो नहीं समझती कि उसने इसमें कोई बुरा काम किया है। दीनदयाल की कन्या प्रेमवती के लड़के से दुगुनी तो ऊँची है और है भी कुरूप। रामलाल की कन्या छोटी, सुन्दर और लिखी-पढ़ी है।

मधुमयी—अच्छा, सास पढ़ी-लिखी है, बहू भी पढ़ी-लिखी आ जायगी। फिर किस बात की कमी रहेगी! प्रेमवती ने पढ़-लिखकर क्या कर लिया है? उसने तो अच्छे-अच्छे कपड़े पहनकर इधर-उधर घूमते फिरना और सज-धजकर बैठे रहना ही सीखा है।

कनकलता—प्रेमवती की बराबरी मुझसे और तुमसे नहीं हो सकती। बहन, तुम्हें तो दूसरों के दोष ही ढूँढ़ने आते हैं। दूसरों के दुर्गुण ढूँढ़ना और उनके गुण न देखना बहुत बुरा है। इससे अपना स्वभाव

खराब हो जाता है। हृदय को बड़ा करके सबको अच्छी दृष्टि से देखना चाहिए।

शब्दार्थ—कनक—सोना। कुलक्षणी—बुरे लक्षणोवाली। वेतन—तलब, तनख्वाह। पीहर—मायका। छिद्र ढूँढना—नुक्स निकालना। वृद्धि—बढती। वंशोच्छेद—कुटुम्ब में कोई न रहना। उत्तराधिकारिणी—वारिस। बखान—बडाई। तुलना—मुक़ाबिला, मिलान। सुशिक्षिता—पढी लिखी।

प्रश्न—मधुमयी ने प्रेमवती मे क्या-क्या छिद्र बताये? कनकलता ने उसे क्या समझाया? प्रेमवती ने दीनदयाल की कन्या लेने से क्यो इनकार किया?

२२—बालक निठुर कैसे बनते हैं

पार्वती को उदास बैठी देखकर मधुमयी ने पूछा—'बहन, आज तुम उदास क्यों देख पड़ती हो?' मधुमयी के प्रश्न से पार्वती की आँखों में आँसू आ गये। वह आँखें पोंछकर बोली—बहन, मेरे जैसी अभागिनी जगत् में कोई नहीं। घर के रगड़े-झगड़े से मैं तो तङ्ग आ गई हूँ। परमेश्वर ने बच्चे दिये तो वे उपद्रवी और दङ्गई निकले। वे इतने नटखट हैं कि उनसे हम तङ्ग

आ गये हैं। आज नरेन्द्र और कमला एक तुच्छ बात पर लड़ पड़े और मार-पीट पर उतारू हो गये। बात यों हुई कि कमला की गुड़िया नरेन्द्र ने देखने को ली और वह ज़रा दीवार से टकरा गई। इससे उसका पाँव टेढ़ा हो गया। बस, कमला रोने और गालियाँ देने लगी। इस पर नरेन्द्र ने गला पकड़कर उसको इतना पीटा कि वह अधमरी हो गई। यह देख मुझे बहुत बुरा लगा। मैंने हाथ बाँधकर नरेन्द्र को ख़ूब पीटा। उसकी नाक पर भी एक ज़ोर का थप्पड़ लग गया। इससे इस ज़ोर से नकसोर फूटी कि बहुत यत्न करने पर भी लहू बन्द नहीं होता था। यह बात जब तुम्हारे भाई को मालूम हुई तो उन्होंने उलटा मुझे ही डाँटा और बच्चों को कुछ नहीं कहा। पेट के बच्चों को मारना पड़ा, इससे मुझे खाना-पीना कुछ भी नहीं भाया। बच्चे तो सबके घर होते हैं, परन्तु ऐसे ख़राब बच्चे तो किसी जगह नहीं देखे। तुम्हारे घर में भी बच्चे हैं। परन्तु मैंने उनको कभी लड़ते-झगड़ते नहीं देखा।

मधुमयी—बहन पार्वती, तुम्हारे बच्चे ऐसे क्यों निकले, तुमने कभी इस पर भी विचार किया है?

पार्वती—मैं जानती हूँ कि मैं अपनी करनी का फल पा रही हूँ। खोट के बच्चों को लाड़-प्यार करने का

यह परिणाम है। परन्तु लाड़-प्यार से बच्चे बिगड़ कैसे जाते हैं, यह मेरी समझ में नहीं आता।

मधुमयी—बहन! क्षमा करना, मुझे कहना ही पड़ता है कि तुम लाड़ भी बहुत अधिक करती हो। जब बच्चे कोई अपराध कर बैठते हैं तो तुम गालियाँ देती और ख़ूब पीटती हो। बार-बार धमकी देने, गालियाँ देने और मार-पीट करने से बच्चे निठुर हो जाते हैं। इसलिए वे धमकी और मार को सह लेते हैं।

पार्वती—बहन, तुम जो कुछ कहती हो वह ठीक है, परन्तु बच्चे जब कोई ख़राबी करें तो किया क्या जाय? यदि हम कुछ भी न कहें तो वे और भी अधिक उपद्रव करेंगे। हमारे बच्चे तो पड़ोस के बच्चों के साथ दङ्गा करते हैं, लड़ाई लेते हैं, घर में सारे दिन तूफ़ान मचा रखते हैं और वस्तुओं को तोड़ने-फोड़ने में तो कुछ भी कसर नहीं रखते। कमला ने परसों पाँच रुपये का दर्पण तोड़ डाला और नरेन्द्र ने बिल्लौर के इमर्तबान के टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

मधुमयी—तुम्हारे मार-पीट करने पर भी तो बच्चे उपद्रव करना नहीं छोड़ते। तो फिर पीटने से क्या लाभ? दया और दबाव रखने से बच्चे स्वच्छन्द नहीं होते। उपद्रव करने के लिए उन्हें अवसर ही न दिया

जाय तो वे उपद्रव नहीं कर सकते। उनको मनमानी न करने दी जाय तो वे हमारी इच्छा के अनुसार काम करने लगेंगे। मार-पीट की अपेक्षा बच्चे प्यार से अधिक सुधरते हैं। अमुक काम से तुम अप्रसन्न होती हो, केवल इस विचार से उन्हें उस काम से दूर रहना चाहिए। उन्हें पढ़ने के लिए या किसी दूसरे काम के लिए तो रोक लेना चाहिए; परन्तु खेलने के समय ख़ुशी से खेलने की छुट्टी देनी चाहिए और उनके खेल-कूद पर ऐसे ढङ्ग से दृष्टि रखनी चाहिए कि उनको पता न लगे। तब उनको उपद्रव करने का समय ही नहीं मिलता। बच्चों को नई-नई बातें सीखने की इच्छा होती है, इसलिए वे नई वस्तुएँ हाथ में लेकर उनकी देख-भाल करते हैं और यह जानने की उत्सुकता में, कि देखें इनके भीतर क्या है, उनको तोड़ डालते हैं। मैंने अपने बच्चों पर कभी हाथ नहीं उठाया। फिर भी वे लड़ाई-झगड़ा और दङ्गा-तूफ़ान नहीं करते।

पार्वती—बहन, तुम जो रीति बताती हो वह मुझे भी ठीक जान पड़ती है। आज से मैं भी इसकी परीक्षा करके देखूँगी।

शब्दार्थ—खोट के बच्चे—मुश्किल से प्राप्त हुए बच्चे। अपेक्षा—बनिस्बत।

प्रश्न—बच्चे किस कारण निठुर बनते हैं? बच्चा निठुर न बने, इसके लिए माता-पिता को क्या उपाय करना चाहिए?

३३—गृह-प्रबन्ध

सुख और शोभा के लिए घर में अनेक वस्तुएँ इकट्ठी करनी पड़ती हैं। उन संगृहीत वस्तुओं को उत्तम रीति से रखने की आवश्यकता होती है। जैसे शृङ्गार के बिना शरीर शोभा नहीं देता, वैसे ही सजावट के बिना सूना घर भी शोभा नहीं देता। अति शृङ्गार से या ठीक रीति से न किये हुए शृङ्गार से घर भोंडा सा दीखने लगता है। घर की सजावट में तथा उसके लिए आवश्यक वस्तुएँ जुटाने में पैसे के अतिरिक्त बुद्धि, चतुराई और अनुभव का भी प्रयोजन होता है। जो चीज़ चाहो वह पैसे से मिल तो सकती है परन्तु पैसा घर को सुख-धाम नहीं बना सकता। गृह-प्रबन्ध के लिए सामग्री संग्रह करते समय नीचे की सूचनाओं पर ध्यान रखना चाहिए।

सब ओर से अच्छी तरह विचार किये बिना कोई भी वस्तु न खरीदी जाय। इसकी सचमुच आवश्यकता है या नहीं, इसको खरीदने की हममें शक्ति है

या नहीं, इससे हमारा काम चल जायगा या नहीं, और इसका रङ्ग और बनावट आदि घर की दूसरी वस्तुओं के अनुकूल है या नहीं, ये प्रश्न पहले अपने मन से पूछने चाहिएँ।

वस्तुएँ उधार लाने की रीति नहीं रखनी चाहिए, क्योंकि इससे वे महँगी पड़ती हैं; मितव्ययिता करने की चिन्ता नहीं रहती; कभी-कभी अपनी आय से बढ़कर खर्च हो जाता है और पीछे से पैसे न दे सकें तो हैरान होना पड़ता है।

गृहस्थी जमाते समय सब वस्तुएँ एक साथ खरीद लेने का यत्न न करना चाहिए। ज़ियादा ज़रूरी चीज़ें पहले ख़रीदनी चाहिएँ और दूसरी चीज़ें, ज्यों-ज्यों ज़रूरत पड़े, ख़रीदता रहे। इससे निरुपयोगी वस्तुएं गले पड़ने का डर नहीं रहता।

जल्दी टूट जानेवाली वस्तुओं की अपेक्षा टिकाऊ वस्तुएँ लेने का अधिक ध्यान रखना चाहिए। सदा सावधानी रक्खे जिसमें दूकानदार बाहर से भड़कीली वस्तुएँ हमारे मत्थे न मढ़ दे। चित्रकारीवाली वस्तुओं की अपेक्षा उपयोगी वस्तुओं पर अधिक ध्यान देना अच्छा है। जो वस्तुएँ प्रतिदिन काम में न आ सकें और नाज़ुक और क़ीमती हों उन्हें ख़रीदना ठीक नहीं।

दिखलावे की वस्तुओं की अपेक्षा उपयोगी वस्तुओं से घर अधिक सुख-रूप हो जाता है।

सामान-सामग्री के लिए जितने पैसे निकाले हों उनको एकदम ख़र्च न कर डालना चाहिए। क्योंकि जिन चीज़ों का हमें इस समय विचार नहीं आता उनकी पीछे से आवश्यकता आ पड़ती है; तब जितना निश्चय किया था उससे अधिक ख़र्च हो जाता है। वस्तुएँ ख़रीदने में अपनी सामर्थ्य का पहले ख़याल कर लेना चाहिए। अपनी स्थिति के अनुसार ही सामान पर ख़र्च करे।

घर को सजाने की हमारी प्राचीन रीति धीरे-धीरे बदलती जा रही है और अँगरेज़ी ढँग प्रविष्ट होता जा रहा है। जिनको अँगरेज़ी फ़ैशन के काऊच, कुर्सियाँ आदि लेना हो उन्हें वह सामान अच्छी लकड़ी का, मज़-बूत और सादा पर सुन्दर लेने का यत्न करना चाहिए। बहुत सा सामान लेकर कमरे में ठूँस देने या जहाँ-तहाँ बखेर रखने में लाभ नहीं। सामान को क़रीने से लगाने में चतुराई से काम लिया जाय तो एक तो उसकी उप-योगिता बढ़ती है और दूसरे वह दिखाई अच्छा देता है।

मकान मे क़ालीन और गलीचे बिछाने तथा चित्र भी लगाने चाहिएँ। सामान क़ीमती हो तो फ़र्श पर

बिछाने की शतरंजी या क़ालीन भी क़ीमती होना चाहिए। साधारण सामान हो तो छापी हुई या रँगी हुई जाजिम से काम चल सकता है। काश्मीरी और यारक़न्दी नमदे सरदियों में बैठने का बहुत अच्छा काम देते हैं।

जिस कमरे को सजाना हो उसकी दीवारों पर सुन्दर चित्र लटकाने से उसकी शोभा बहुत बढ़ जाती है। इसके लिए ऐसे दृश्यों के और ऐसे महापुरुषों के चित्र पसन्द करने चाहिएँ, जिनको देखने से मन आनन्दित हो और जिनसे या तो किसी प्रकार की शिक्षा मिले अथवा जिनका अनुकरण करने का उत्साह मन में पैदा हो। इन चित्रों को सादा परन्तु सुन्दर चौखटे में जड़ाना चाहिए। एक ही कमरे में बहुत से चित्र गिचपिच करके टाँगने से उसकी शोभा बढ़ने के बदले घट जाती है। क़ालीन पर चादर बिछाने और बड़े-बड़े आईनों तथा झाड़-फ़ानूसों आदि पर गिलाफ़ चढ़ाने में आलस्य न करे। लिहाफ़ों के लिए गिलाफ़, नीचे बिछाने के लिए चादरें, मेज़ पर डालने के कपड़े, शरीर को पोंछने का अँगोछा, दूध छानने के पोने, सामान पोंछने के झाड़न इत्यादि जितनी आवश्यकता हो उतने ख़रीदे और ऐसा उपाय करे जिसमें वे स्वच्छ और उत्तम रहें।

खाट पर ही सोना अच्छा है। यदि भूमि पर सोना पड़े तो वह गीली न हो। गीली भूमि पर सोने से मनुष्य बीमार हो जाता है। नीचे बिछौना बिछाने से उसमें बिच्छू आदि भी घुस जाते हैं। साधारण स्थिति के लोग सन या मूँज से खाटें बुनते हैं। धनी लोग नेवार के पलँग पर सोते हैं। उस पर रुई से भरे गद्दे बिछाते हैं। अच्छे प्रकार के और चित्रकारीवाले पलँग पर नेवार के स्थान में लकड़ी के लम्बे-लम्बे पटरे जड़े होते हैं। काऊच जैसे पलँग बेत के बुने होते हैं। लकड़ी के पलँगों में खटमल और पिस्सू आदि जन्तुओं को छिपने के लिए जगह मिल जाती है। उनको निकालने में बड़ी मुश्किल पड़ती है। इसलिए कई लोग लकड़ी की जगह लोहे के पलँग रखते हैं। नेवार से पलँग बुनने में यह लाभ है कि नेवार को खोलकर धुलाया जा सकता है जिससे खटमल और पिस्सू दूर हो जाते हैं। अँगरेज़ी पलँग में नेवार की जगह लोहे के तार की जाली लगी होती है। उस पर सोने से अधिक सुख मिलता है।

मच्छर थोड़े बहुत सब जगह होते हैं। इसलिए पलँग पर मसहरी लगाने से सुख से सोया जा सकता है। मसहरीवाले पलँग को छपर-खट कहते हैं, क्योंकि उस पर चौखट और मसहरी, छप्पर की तरह, छाई रहती

है। मसहरी अच्छी बुनावट की और बारीक छिद्रोंवाले कपड़े की बनानी चाहिए। ऐसा कपड़ा न लगाया जायगा तो पलँग में पवन का प्रवेश न होने से दम घुट-कर मर जाने का डर रहेगा।

गद्दे, गुदड़ी, रज़ाई और तकिये का उपयोग गिलाफ़ के बिना कभी न करना चाहिए। क्योंकि मैली हो जाने पर ये चीज़ें धुल नहीं सकतीं। सब रज़ाइयों और तकियों के गिलाफ़ नर्म और स्वच्छ होने चाहिएँ। यदि तकिया बहुत बड़ा होगा तो गर्दन दुखने लगेगी। रुई से भरे हुए तकिये में गाँठें पड़ जाने से भी कष्ट होता है। कई स्त्रियाँ बिछौने के नीचे गन्दे कपड़े दबा रखती हैं। यह रीति अच्छी नहीं है।

बिछौने में हम आयु का तीसरा भाग व्यतीत करते हैं और पूरा आराम पाने की इच्छा रखते हैं। इसलिए वह स्वच्छ, पूरा काम देने लायक़ और आनन्ददायक होना चाहिए। हो सके तो रोज़ बिछौने को धूप में डाल दे और फिर सफ़ाई से तह करके ऊँची जगह पर रख दे। पलँग को झटकारकर साफ़ करने के बाद ही उस पर बिछौना बिछाया जावे। ऐसा न करने से यदि उसमें कोई छिपकली या बिच्छू आदि छिपा रहेगा तो वह सोनेवाले को काट लेगा।

मैले कपड़े धोने को देने में देर हो तो उन्हें एक अलग सन्दूक़ में भरकर रख छोड़ना चाहिए। वायु के प्रवेश के लिए इस सन्दूक़ के ढक्कन में दो-चार छेद रक्खे जायँ। उन छेदों के नीचे जालीदार पत्तर जड़ा होना चाहिए ताकि सन्दूक़ में चूहे आदि जीव-जन्तु न घुस सकें।

बर्तन-भाँड़े और सुई-सलाई आदि छोटी-मोटी चीज़ें, जिनकी ज़रूरत बहुधा पड़ती है, सब अपनी अपनी जगह पर रखनी चाहिएँ, नहीं तो समय पर उनके न मिलने से हैरान होना या पड़ोसी का मुहताज होना पड़ता है।

शब्दार्थ—शृङ्गार—सँवारने की क्रिया। नमदा—जमाया हुआ ऊनी कम्बल या कपड़ा। आनन्ददायक—सुख देनेवाला।

प्रश्न—वस्तुएँ ख़रीदने में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? बिछाने और ओढ़ने के कपड़ों को हमेशा साफ़ रखना क्यों ज़रूरी है? मसहरी कैसी होनी चाहिए?

३४—अन्ध-विश्वास

जिन लोगों में अज्ञान और भोलापन अधिक है वे वहमी और अन्ध-विश्वासी भी अधिक देखने में आते हैं। इन लोगों को जब किसी बात का कोई कारण

नहीं सूझता तो दूसरे लोग इन्हें जो कारण बता दें उसी को ये मान लेते हैं। अज्ञान-वश ये स्वयं कोई कारण नहीं ढूँढ़ सकते।

कोई मनुष्य, विशेषतः कोई बच्चा, रोगी हो जाय तो तुरन्त स्त्रियाँ कहने लगती हैं कि इसे तो किसी की नज़र लग गई है। मेरे लड़के ने बारात में बैठकर दो ग्रास मुँह में डाले। एक स्त्री सामने बैठी देख रही थी। इससे उसे नज़र लग गई। सुन्दर लड़की अच्छा गहना-कपड़ा पहनकर बाहर दरवाज़े पर बैठी थी। उस पर किसी की दृष्टि पड़ी कि वह तुरन्त अचेत हो गई। पड़ोसिन टोने की लकीर को लाँघ गई। पाँव के नीचे मेंढक आ जाने से वह गिर पड़ी। इससे उसे भूत चिपट गया। अमुक स्त्री को भूत लगा है। वह उसे और उसके बाल-बच्चों को बहुत कष्ट देता है। अमुक घर का स्वामी साँप हो गया है। वह वहाँ रहनेवाले किरायेदारों को सताता है। किसी की कोई वस्तु ख़राब हो जाय तो वे कहती हैं कि अमुक स्त्री की नज़र लगने या छाया पड़ जाने से ऐसा हुआ है। दूध, अचार, पापड़, सेवई आदि कई बार ख़राब हो जाती हैं तब यही कारण बताया जाता है। वैद्य से पूछो तो वह वैद्यक की दृष्टि से रोग का कारण बताता है और ज्योतिषी से पूछो तो वह

ज्योतिष से बताता है। आश्चर्य है कि फिर भी ऐसे भ्रमी लोग दोनों की बात को सच मानते हैं। इतना ही नहीं, कई स्त्रियाँ इतनी अन्ध-विश्वासी होती हैं कि धूर्त्त लोग स्वार्थ-सिद्धि के लिए उनसे जो कुछ भी कहते हैं, उसे वे अपने सरल भाव से सच मान लेती हैं। रोग की जाँच करके उसके लिए उपयुक्त ओषधि दी जाय तो उससे वह शान्त हो जाता है, यह बात सब जानते हैं। इसलिए वैद्य के कथन के अनुसार काम करना ही ठीक है।

रोग में ज्योतिषी ग्रह-पीड़ा और साढ़साती की बातें करते हैं। वे कहते हैं कि अमुक दान-धर्म करो और अमुक मन्नत मानो। जो लोग औषधोपचार न करके केवल ज्योतिषी के कथन पर विश्वास किये बैठे रहते हैं उनको बहुधा पीछे से पछताना पड़ता है। इस प्रकार जादू-टोनेवाले आकर भूत लगने की बातें करते, मन्त्र-तन्त्र का इलाज बताते और उसके लिए खर्च कराते हैं। इससे रोगियों को आराम नहीं होता।

भोली-भाली स्त्रियाँ नज़र लग जाने पर विश्वास करके चुटकी-चुटकी राई और नमक इकट्ठा करके बालक के सिर पर सात बार उतारती और आग में डालती हैं। जब वह जलती है और उसमें से दुर्गन्ध निकलती है तो उसे देखकर कहती हैं कि हाय माँ! कितनी कड़ी

नज़र लगी है। यह कैसी दुर्गन्ध आ रही है! पर वे यह नहीं सोचतीं कि राई और नमक जब आग में पड़ता है तब उसमें से सदा ऐसी ही गन्ध आया करती है।

ओझा लोग काँसे की कटोरी में धधकते हुए अङ्गार भरकर उसमें उस रोगी के सिर पर से उतारी हुई राई और नमक डालते हैं और ख़ूब धुआँ निकलने देते हैं। जब तक वे चीज़ें बिलकुल जल नहीं जातीं तब तक कटोरी को पड़ी रहने देते हैं। फिर उसको काँसे की थाली में औंधी गिराकर उस पर गोबर मिला पानी डालते हैं। इससे कटोरी थाली के साथ एकदम चिपक जाती है। जब ऐसा होता है तब स्त्रियाँ कहती हैं, हाय-हाय, कैसी कड़ी नज़र लगी है! कटोरी क्यों चिपक गई है, इसका ठीक कारण वे नहीं समझतीं। कटोरी के बीच की पवन आग से पतली होकर निकल जाती है और राई-नमक के धुएँ से कटोरी भर जाती है। इसलिए जब उसे औंधा गिराकर उस पर पानी फेंका जाता है तो वह भाफ ठण्डी हो जाती है। इस प्रकार कटोरी में पवन न होने से वह बाहर की वायु के भार से दबी रहती है। यदि तुम किसी रोगी के बदले किसी नीरोग मनुष्य के सिर पर राई उतारकर और इसी तरह जलाकर देखोगी तो तुम्हें निश्चय हो जायगा कि थाली के साथ कटोरी के

चिपकने का रोग या नज़र से कोई सम्वन्ध नहीं। इसलिए यह स्पष्ट है कि इस प्रयोग से रोग दूर नहीं होता।

भूत लग जाना, मूठ मारना, कामन करना इत्यादि भ्रम करने से अनेक लोगों को हैरान होना पड़ता है। कहावत है कि हमारा ही मन भूत और शङ्का डॉकिन है। अतएव भूत-प्रेत और डॉकिन-शाकिन वास्तव में कोई वस्तु नहीं। भय और शङ्का से ही वे चिपकते हैं। जो डरत ',हैं उन्हीं का वे लगते हैं। पर यह जानते हुए भी कितनी ही स्त्रियाँ डरती हैं और डर के कारण बीमार हो जाती हैं। उन्हें जान पड़ता है कि भूत-प्रेत लगने से यह रोग हुआ है। पर डर का प्रभाव मन पर और तन पर ऐसा भारी होता है कि कभी-कभी उससे मनुष्य पागल ही नहीं हो जाता है, वरन् मर तक जाता है। प्रसव-काल में और दूसरे अवसरों पर एक प्रकार की वायु पैदा हो जाती है। तव स्त्रियाँ ऐसी चेष्टाएँ करती हैं जैसे भूत लग गया हो। ऐसे समय में रोग का इलाज न करके भूत को निकालने का उपाय करना मूर्खता है। वकरे पर नहाने, पेठा फोड़ने या डफ वजाने से रोग कैसे दूर हो सकता है?

वहुतेरे लोग कहा करते हैं कि अमुक घर में, अमुक पेड़ में, अमुक कुएँ में या अमुक स्थान में भूत हैं। किन्तु

अब तक कोई ऐसा मनुष्य नहीं मिला जिसने आप भूत को देखा हो या दूसरे को दिखाया हो। स्वार्थी लोग कितनी ही वार भूत का भ्रम डालने के लिए कई युक्तियाँ किया करते हैं। उनसे वे भोले-भाले लोगों को ठगते हैं। भ्रम में पड़कर अँधेरे में जैसे रस्सी का टुकड़ा साँप जान पड़ता है वैसे ही कितनी ही वार वस्तु का कोई आकार दीखने से वह भूत मालूम होने लगता है।

एक वार किसी वनिये के यहाँ एक पाहुना आया। रहने के घर से कुछ दूरी पर वनिये का एक और मकान था। वहीं उसने पाहुने को सुलाया। आधी रात को पाहुने ने मुँह खोलकर देखा तो उसे दो स्त्रियाँ खड़ी दीख पड़ीं। उसने समझा, ये चुड़ैलें हैं। अब वह डर के मारे चिल्लाकर रोने लगा। अड़ोसी-पड़ोसी दौड़े आये। उन्होंने भी अँधेरे में दो स्त्रियाँ खड़ी देखीं। वे थर-थर काँपने लगे। लोगों ने वाहर से ही खड़े-खड़े पत्थर फेंके, तो भी वे स्त्रियाँ हिलीं तक नहीं। इतने में चौकी-दार आ पहुँचा। उसने तीर मारा। वह स्त्रियों के शरीर में लगा। इस पर भी वे हिलीं-डुलीं नहीं। इसी समय कोई दीपक ले आया और अच्छी तरह जाँच करके देखा तो घड़ोंची के ऊपर लिहाफ़ पड़े थे। उन पर साड़ी की गुदड़ी रक्खी थी। फिर उसके ऊपर

चादर पड़ी थी। इससे ऐसा जान पड़ता था मानों दो स्त्रियाँ खड़ी हों।

मूठ, कामन और टोने का विचार भी झूठा है। कोई पेड़ अचानक सूख जाय तो लोग कहने लगते हैं कि किसी ने अपने मन्त्र की परीक्षा करने के लिए मूठ मारी है। परन्तु जड़ के सड़ने, गलने या उसमें हींग डाल देने से पेड़ एकदम सूख जाता है। कड़ी दृष्टि या प्रबल युक्तिवाला मनुष्य भोले-भाले मनुष्यों के, विशेषतः स्त्रियों के, मन पर असर डाल सकता है। परन्तु यह कामन नहीं।

अचार और खीर आदि बनाने में कोई भूल हो जाने से या उनमें कोई ख़राब चीज़ पड़ जाने से वे चीज़ें बिगड़ जाती हैं। बासी या नई ब्याई हुई गौ का दूध मिल जाने, खटाई का छींटा पड़ जाने, या मैली खाँड़ डालने से खीर ख़राब हो जाती है। अनाज का स्पर्श हो जाने, पूरा और अच्छा मसाला न डालने, या मर्तबान का मुँह खुला रह जाने से, या ठीक तरह से न बाँधने से अचार बिगड़ जाता है। पेड़ पर से गिरे हुए कच्चे आमों का अचार डालने से वह सड़ जाता है। अचार को अधिक गरमी लग जाने या बन्द जगह में रखने से वह उबल जाता और ख़राब हो जाता है। पर

सरल-हृदय और मूढ़ स्त्रियाँ समझती हैं कि किसी ने नज़र लगा दी या टोना कर दिया है। इसी प्रकार गाय-भैंस को पूरा और अच्छा चारा न मिलने या ठीक समय पर पानी आदि न मिलने से, या गरमी-सरदी लग जाने से वे दूध कम देने लगती हैं। पर स्त्रियाँ समझती हैं कि किसी ने टोना करके दूध चुरा लिया है।

शब्दार्थ—टोना—जादू। औपधोपचार—दवा दारू।

प्रश्न—इस देश के लोगों में कौन कौन से अन्ध-विश्वास पाये जाते हैं? उनका सक्षेप में वर्णन करो।

३५—लड़कियों का वन-भोजन

रविवार को सवेरे अध्यापिकाजी ने तीन गाड़ियाँ तैयार रक्खी थीं। दो तो बैठने के लिए और एक सामान आदि लादने के लिए। आध घण्टे में सब लड़कियाँ नदी के पार पहुँच गईं। नदी के किनारे एक रमणीक वाटिका थी। उसमें महादेवजी के मन्दिर के पास एक छोटी सी धर्मशाला थी। धर्मशाला में सामान रखकर अध्यापिकाजी ने कहा—चलो लड़कियो! नदी में चलकर स्नान कर आयें। रसोई बनाने में

जल्दी नहीं करेंगे तो साँझ तक भी खाने को नहीं मिलेगा।

नदी के निर्मल पानी में धूप चढ़े नहाने में बड़ा आनन्द आया। डेरे पर लौटकर अध्यापिकाजी ने उबला हुआ दूध और पूरियाँ, जो वे घर से साथ लाई थीं, निकालकर सबको कलेवा कराया। फिर उन्होंने कहा—अब हमें रसोई की तैयारी में लग जाना चाहिए। दो-दो मिलकर एक एक चूल्हा ले लो और जिसको जो बनाना आता है वह उसी को अपने ज़िम्मे ले। जो वस्तु तुम्हें बनानी न आती हो, वह मैं बना दूँगी। राँधते समय किसी को कुछ पूछना हो तो वह मुझसे पूछती जाय। सामग्री ठीक तरह सँभालकर रक्खी है। उसमें से जिसे जितनी चाहिए, उतनी ले ले। तोलने के लिए तराज़ू भी मौजूद है।

सब लड़कियाँ जल्दी से काम में लग गईं। किसी ने रसोई की सामग्री निकाली, किसी ने आग जलाई, कोई पतीले और देगची की पेंदी पर मिट्टी का लेप करने लगी, किसी ने आटा गूँधा। कोई दाल-चावल साफ़ करने लगी। किसी ने भाजी-तरकारी काटने का काम किया और किसी ने बर्तन माँजे। प्रत्येक वस्तु कितनी बनानी चाहिए और उसमें मसाला आदि कितना डालना

चाहिए, यह उन्होंने अध्यापिकाजी से पूछ लिया। नये ढङ्ग के दो-एक खाने बनाने और लड़कियों के काम की देख-रेख करने का काम अध्यापिकाजी ने आप लिया। भोजन बनाते-बनाते उन्हें साँझ के चार बज गये।

रसोई तैयार हो जाने पर फिर सब नदी में नहाने गईं। नहा-धोकर जब लौटीं तो जीमने के लिए केले के पत्तों पर खाना परोसा। अपने हाथ से तैयार की हुई अनेक वस्तुएँ खाकर लड़कियों को बड़ी प्रसन्नता हुई। नदी की ओर से ठण्डी हवा आ रही थी। वृक्षों की घनी छाया में धूप भी प्रवेश न कर सकती थी। सखी-सहेलियों के साथ बैठकर जीमने में सबको बहुत आनन्द आया। लड़कियों के आनन्द को बढ़ाने में अध्यापिकाजी ने भी कोई कसर न उठा रक्खी।

खा चुकने पर अध्यापिकाजी ने कहा—चलो, नदी के किनारे वह खुला टीला है। वहाँ जाकर चाँदनी में बैठें और गप लड़ावें।

वहाँ जाकर जब सब बैठ गईं तो अध्यापिकाजी ने कहा—बेटियो! आज तुम्हें बड़ा आनन्द आया, यह देख मुझे बहुत प्रसन्नता होती है। तुम सबने बड़ी सावधानी से रसोई बनाई थी, इसलिए सब वस्तुएं अच्छी बनी थीं। अब मैं प्रत्येक भोजन के विषय में

चर्चा चलाती हूँ। पूरियाँ दो जगह तैयार हुई थीं। तुम बता सकती हो, उनमें से किसकी अच्छी बनी थीं।

लीला—मुझे तो सुशीला की पूरी बहुत अच्छी लगी थी।

अध्यापिका—भला क्यों?

लीला—उसकी पूरी तोड़ो तो चूरा-चूरा हो जाती थी।

अध्यापिका—चूरा-चूरा हो जाने का बड़ा कारण यह है कि उसमें मोन अधिक पड़ा हुआ था। रोज़ की खाने की पूरी में उतना मोन नहीं डाला जा सकता। मैदे में सूजी मिला लें तो पूरी बहुत चिकनी नहीं होती। अच्छा, किसकी पूरियाँ अधिक फूली थीं और किस कारण फूली थीं?

सरला—चम्पा की पूरियाँ फूलकर गेंद-सी हो गई थीं। उसकी पूरियाँ क्यों फूलीं, इसका कारण मैं नहीं बता सकती।

अध्यापिका—पूरियाँ सब तरफ़ से एक जैसी बेली न गई हों तो ठीक ठीक नहीं फूलतीं। और कड़ाही में डालने के बाद घी की तरफ़ के हिस्से को अधिक सिकने दें तो भी पूरी नहीं फूलती। श्रीखण्ड तो बाज़ार से मँगाया था, वह तुम्हें कैसा लगा?

चम्पा—मुझे श्रीखण्ड ज़रा खट्टा लगा था।

सुशीला—श्रीखण्ड ज़रा पतला था। पर मुझे तो वह स्वाद में अच्छा लगा।

अध्यापिका—किसी को मीठा अधिक भाता है और किसी को खट्टा। पर सुशीला कहती है कि वह स्वाद में अच्छा था।

चम्पा—अध्यापिकाजी ! आपने जो केसरी मीठा पुलाव बनाया था, वह तो ऐसा अच्छा बना था कि उसका स्वाद मुझे अब तक मिल रहा है। व्याह-शादी और त्योहार पर जो पुलाव बनाया जाता है वह भी ऐसा नहीं होता।

अध्यापिका—मैंने दक्षिणी नमूने का केसरिया भात बनाया था। उसमें एक सेर चावलों में तीन सेर खाँड डाली जाती है।

सुशीला—ओहो ! इतनी ज़ियादा खाँड ! इस पर भी वह अधिक मीठा नहीं था।

अध्यापिका—पञ्जाब में एक सेर चावलों में केवल सेर भर खाँड डालते हैं। धीमी-धीमी आँच पर उसे तैयार करने में दो-ढाई घण्टे लग जाते हैं। इसमें केसर बहुत पड़ता है। हम प्रतिदिन अधिक दाल-रोटी खाते हैं। इसलिए उसी पर अधिक ध्यान देना चाहिए। कहावत है—'जिसकी दाल बिगड़ी उसका दिन बिगड़ा

और जिसका अचार बिगड़ा उसका वर्ष बिगड़ा।' दाल कैसी बनी थी, भला यह तो बताओ।

सुशीला—दाल तो बहुत स्वादिष्ट बनी थी। ऐसी दाल रोज़ मिले तो इसके साथ रोटी और भात ख़ूब खा सकते हैं।

अध्यापिका—कहावत है कि जिसको अभ्यास हो वही अच्छी रसोई बना सकता है। मन-माँगी सामग्री हो तो रसोई स्वादिष्ट होती है। बघारने और मसाला डालने से दाल सुधर जाती है। दाल जितनी अधिक गले उतनी ही अच्छी होती है। अच्छा, आज की कढ़ी कैसी थी?

उर्मिला—दही का मठा डालकर बनाई हुई कढ़ी का तो पूछना ही क्या!

अध्यापिका—केवल दही डालने से ही कढ़ी बढ़िया नहीं हो जाती। उसमें बेसन और दूसरा मसाला भी ठीक-ठीक पड़े तभी वह अच्छी बनती है। दाल की तरह कढ़ी को भी ख़ूब उबालना चाहिए। यदि उसमें सात उबाल आ जायँ तो वह बहुत ही अच्छी बन जाती है। आज के भात के सम्बन्ध में तुम्हें कुछ कहना है?

चम्पा—उर्मिला का भात ज़रा गीला हो गया था और सुशीला का कुछ कच्चा-सा था।

स्त्रीधर्मप्रश्नोत्तरी
गीताप्रेस गोरखपुर

ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

स्त्री-धर्मप्रश्नोत्तरी

सरला—बहिन ! बहुत दिनोंसे इच्छा थी कि मैं तुमसे स्त्री-धर्मके सम्बन्धमें कुछ पूछूँ; आज ईश्वरकी कृपासे यह अवसर मिला है । क्या मैं इस समय तुमसे कुछ पूछ सकती हूँ ?

सावित्री—बड़ी खुशीसे । बहिन ! मेरे लिये तो यह सौभाग्यकी बात है कि आज तुम्हारे कारण मुझे धर्मचर्चा करनेका सुअवसर मिलेगा और बहुत-सी भूली हुई बातें याद आ जायँगी ।

सरला—अच्छा तो बहिन ! पहले तो मुझे यह बतलाओ कि स्त्रियोंका मुख्य धर्म क्या है ?

सावित्री—स्त्रीके लिये मुख्य धर्म केवल पतिपरायणता ही है । और सारे धर्म तो गौण हैं और उनका आचरण भी केवल पतिकी प्रसन्नताके लिये ही किया जाता है ।

सरला—आजकल तो लोग कहते हैं कि स्त्री और पुरुषके समान अधिकार हैं फिर अकेली स्त्री ही पतिकी सेवा क्यों करे, पति अपनी स्त्रीकी सेवा क्यों न करे ?

सावित्री—ऐसा कहनेवाले लोग आर्य महिलाओंके पातिव्रतधर्मका महत्त्व नहीं जानते । हमारे यहाँ तो स्त्रीके लिये पति ही एकमात्र उपास्य देवता है और उसीकी सेवासे स्त्रीके सारे मनोरथ सिद्ध होते हैं ।

मनुमहाराजने कहा है—

विशीलः कामवृत्तो वा गुणैर्वा परिवर्जितः ।
उपचर्यः स्त्रिया साध्व्या सततं देववत् पतिः ॥
(अ० ५ । १५४)

साध्वी स्त्रीको शीलरहित, कामवृत्तिवाले या गुणहीन पतिकी भी सदा देवताके समान पूजा करनी चाहिये ।

और भी कहा है—

वृद्ध रोगबस जड़ धनहीना । अन्ध बधिर क्रोधी अति दीना ॥
ऐसेहु पतिकर किय अपमाना । नारि पाव यमपुर दुख नाना ॥
एकै धर्म एक व्रत नेमा । काय बचन मन पतिपद प्रेमा ॥
मन वच कर्म पतिहि सेवकाई । तियहि न यहि सम आन उपाई ॥
असजिय जानि करहि पतिसेवा । तापर सानुकूल सब देवा ॥
आन धर्म नहिं दूसर देवा । नारि धर्म केवल पतिसेवा ॥

सरला—तो क्या स्त्रियोंको और किसी प्रकारका व्रत, नियम नहीं करना चाहिये ?

सावित्री—हाँ ! पतिकी आज्ञा बिना कदापि नहीं करना चाहिये ।

मनुमहाराजने कहा है—

नास्ति स्त्रीणा पृथग् यज्ञो न व्रतं नाप्युपोषितम् ।
पतिं शुश्रूषते येन तेन स्वर्गे महीयते ॥
(अ० ५ । १५५)

स्त्रियोंको पतिके (आज्ञा) बिना अलग यज्ञ, व्रत और उपवास नहीं करना चाहिये । केवल पतिकी सेवासे ही स्त्री स्वर्गलोकमें पूजित होती है ।

शास्त्रमें और भी कहा है—

पत्यौ जीवति या तु स्त्री उपवासं व्रतं चरेत् ।
आयुष्यं हरते भर्तुर्नरकं चैव गच्छति ॥

पतिके जीवित रहते जो स्त्री पतिसेवा न करके निर्जल और निराहार उपवास-व्रत करती है वह पतिकी आयु हरती है और स्वयं नरकमें पड़ती है ।

सरला—ठीक है ! यह तो समझ गयी कि स्त्रीका धर्म पतिसेवा ही है परन्तु क्या पतिका कोई धर्म नहीं है ? आजकलके पति प्रायः स्वयं दुराचरण करते हुए अपनी स्त्रियोंको कष्ट दिया करते हैं, क्या उन लोगोंके लिये धर्मशास्त्रमें कोई आज्ञा नहीं है ?

सावित्री—आज्ञा क्यों नहीं है, मनुमहाराजने तो स्पष्ट ही कहा है कि—

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ॥
(अ० ३ । ५६)

जहाँ स्त्रियोंका सत्कार किया जाता है वहाँ देवता

रमते हैं और जहाँ स्त्रियोंका सत्कार नहीं होता वहाँ सर्व क्रियाएँ निष्फल होती हैं।

सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम् ॥
(अ० ३। ६०)

जिस कुलमें स्त्रीसे पति और पतिसे स्त्री सन्तुष्ट रहती है उस कुलका निश्चय ही कल्याण होता है।

और भी बहुत-से प्रमाण हैं। जो पुरुष अपनी स्त्रियोंको कष्ट देते हैं, उनका यथाविधि भरण-पोषण और सत्कार नहीं करते वे अधर्म करते हैं। आजकल बहुत-से लोग स्त्रीको 'पगकी जूती' कह देते हैं, बीमारी आदिमें चिकित्सा और सेवा-शुश्रूषादिका उचित प्रबन्ध नहीं करते, यह अन्याय है। बहुत-से लोग स्वयं दुराचारी होते हुए भी स्त्रियोंको सीता और सावित्रीके रूपमें देखना चाहते हैं, यद्यपि ऐसा होना कठिन है, तथापि यहाँ तो इस समय हम स्त्री-धर्मकी चर्चा कर रही हैं। पुरुषोंका धर्म भिन्न है। यदि पुरुष अपने धर्मका आचरण नहीं करते तो स्त्रियाँ भी अपना धर्म छोड़ दें, यह कोई अच्छी और न्यायसंगत दलील नहीं। हमारे लिये तो अपने धर्मका पालन करना ही आवश्यक है, हमारे प्रति पतिका व्यवहार कैसा है या उसके आचरण किस प्रकारके हैं, इस बातको देखना साध्वी स्त्रीका कार्य नहीं है। स्त्रीका कर्तव्य तो केवल पतिके परायण होना ही है और मेरा तो यह भी विश्वास है कि यदि स्त्री वास्तवमें पतिपरायणा

हो तो वह अपने शुद्धाचरणके बलसे कुमार्गमें पड़े हुए पतिको पुनः सुमार्गपर ला सकती है ।

सरला—समझी । परन्तु क्या स्त्रीजाति ईश्वरका भजन भी न करे ?

सावित्री—पगली ! ईश्वरका भजन क्यों न करे । यह तो मनुष्यमात्रका स्वाभाविक धर्म होना चाहिये ।

सरला—यदि पति नाराज हों तो ?

सावित्री—तो क्या, ईश्वरका भजन तो निरन्तर करती ही रहे । भजन प्रधानतः मनसे हुआ करता है । मनके कार्यको कोई नहीं रोक सकता । शरीरसे पतिकी सेवा करे, घरका सारा कार्य करे और मनसे परमात्माका चिन्तन करे । इसमें पतिके नाराज होनेका हेतु ही क्या है ? हाँ, कोई ढोंगसे ईश्वर-भजनका बहाना कर पतिसेवासे पिण्ड छुड़ाना चाहे तो उसपर पतिका नाराज होना अवश्य ही सम्भव है । पहले यह तो समझो कि ईश्वर क्या वस्तु है ।

सरला—बहिन ! मैं तो मूर्ख हूँ, तुम्हीं समझाओ ।

सावित्री—अच्छा तो सुनो । जो सृष्टिकर्ता हैं, जो सबको पैदा करते हैं, सबका पालन करते हैं और जो सबका नाश करते हैं, जिनकी दयालुता और न्यायपरायणतासे जगत्का सारा कार्य यथाविधि हो रहा है, जो सर्वशक्तिमान् हैं—वे ही ईश्वर हैं ।

सरला—वह ईश्वर कहाँ रहता है ?

सावित्री—यों तो उसके लिये अनेक लोकोंकी कल्पना है परन्तु वास्तवमें वह सभी जगह है। ऐसा कोई स्थान नहीं या ऐसा कोई पदार्थ नहीं कि जहाँ वह न हो या जिसमें वह न हो। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, पर्वत, वृक्ष, लता, समुद्र, नदी, पशु, पक्षी, जड़, चेतन, हम और तुम सभीमें वह भरा है।

सरला—तो क्या उसका कोई खास रूप नहीं है?

सावित्री—वास्तवमें तो उसका कोई रूप नहीं और यों सभी रूप उसीके हैं।

सरला—क्या वह कभी किसी रूपमें दिखलायी भी पड़ता है?

सावित्री—यों तो नित्य ही दिखलायी पड़ता है, परन्तु किसी-किसी समय तो वह खासरूपसे भी दर्शन देता है। बात यह है कि लोग उसे देखना नहीं चाहते।

सरला—यदि देखना चाहें तो?

सावित्री—अवश्य देख सकते हैं, भक्त जिस रूपमें उसको देखना चाहता है उसी रूपमें वह दर्शन देता है, परन्तु प्रेम चाहिये। भक्तोंके प्रेमके कारण ही तो भगवान्‌ने दिव्य राम-कृष्णादिके रूपमें अवतार लिया था।

सरला—लोग तो कहते हैं कि भगवान्‌का कभी अवतार होता ही नहीं, क्या भगवान् भी कभी गर्भमें आते हैं और मरते हैं?

सावित्री—सत्य है। निःसन्देह भगवान् न तो कभी गर्भ-

में आते हैं और न कभी मरते हैं परन्तु उनका अवतार अवश्य होता है। अवतार न माननेवाले लोग भूलते हैं।

सरला—तब फिर भगवान् राम-कृष्णादिका जन्म और अवसान क्योंकर हुआ ?

सावित्री—लीलामात्रसे, इतर जीवोंकी भाँति कर्मबन्धनसे नहीं। देखो! भगवान् गीतामें कहते हैं:—

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया॥
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥

(अ० ४। ६-८)

मेरा जन्म साधारण मनुष्योंके सदृश नहीं है, मैं अविनाशीस्वरूप, अजन्मा होनेपर भी तथा सब भूतप्राणियों-का ईश्वर होनेपर भी, अपनी प्रकृतिको आधीन करके योग-मायासे प्रकट होता हूँ।

हे अर्जुन! जब-जब धर्मकी हानि और अधर्मकी वृद्धि होती है, तब-तब ही मै अपने रूपको रचता हूँ अर्थात् प्रकट करता हूँ।

साधु पुरुषोंका उद्धार करनेके लिये और दूषित कर्म करनेवालोंका नाश करनेके लिये तथा धर्मस्थापन करनेके लिये (मैं) युग-युगमें प्रकट होता हूँ।

सरला—परन्तु आमतौरपर तो लोग ऐसा नहीं जानते।

सावित्री—मायासे मोहित जीव समझते नहीं। यदि भगवान्‌के जन्म और उनके कर्मोंका रहस्य तत्त्वसे किसीकी समझमें आ जाय तो उसका मोक्ष हो जाता है।

गीतामें भगवान्‌ने कहा है:—

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥
(अ० ४।९)

मेरा वह जन्म और कर्म अलौकिक है, इस प्रकार जो पुरुष तत्त्वसे जानता है वह शरीरको त्यागकर फिर जन्मको नहीं प्राप्त होता। किन्तु मुझे ही प्राप्त होता है।

सरला—जीव किसे कहते हैं?

सावित्री—मायासे अलग दीखनेवाली परमात्माकी सनातनशक्तिको ही जीव कहते हैं।

सरला—तो क्या जीवात्मा और परमात्मामें कोई अन्तर नहीं?

सावित्री—वास्तवमें तो कोई अन्तर नहीं, परन्तु जीव जबतक भूलसे अन्तर मानता है तबतक अवश्य ही अन्तर है। इसी अन्तरके मिट जानेका नाम मोक्ष है, इसीको भगवत्-प्राप्ति कहते हैं।

सरला—क्या स्त्रियोंको भी भगवत्-प्राप्ति हो सकती है?

सावित्री—क्यों नहीं। अरी, वहाँ स्त्री-पुरुषका भेद कैसा, तुमने नहीं सुना कि:—

जाति पाँति पूछै नहिं कोई। हरिको भजे सो हरिका होई॥

भगवान्‌ने गीतामें कहा है:—

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः ।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम् ॥
(९ । ३२)

हे अर्जुन ! स्त्री, वैश्य और शूद्रादि तथा पापयोनिवाले जो कोई भी हों, वे भी मेरी शरण होकर तो परमगतिको ही प्राप्त होते हैं ।

गोसाईं तुलसीदासजीने भी कहा है:—

पुरुष नपुंसक नारि नर, जीव चराचर कोइ ।
सर्वभाव भजु कपट तजि, मोहिं परम प्रिय सोइ ॥

सरला—अच्छा, मोक्षसे क्या होता है ?

सावित्री—जीव नित्यस्वरूप परमात्मामें सदाके लिये मिल जाता है और उस असीम तथा अखण्ड आनन्दमें मिलकर स्वयं आनन्दरूप हो जाता है । दूसरे शब्दोंमें, उसको फिर संसारमें आना-जाना नहीं पड़ता ।

सरला—उस परमात्माका कोई खास नाम भी है ?

सावित्री—उसका कोई नाम नहीं और सभी नाम उसके हैं । अनन्त नाम हैं । जिनमें वेदोंमें ॐ को प्रधान बतलाया है और अन्यान्य शास्त्रोंमें श्रीराम, कृष्ण, हरि और नारायण आदि भिन्न-भिन्न अनेक नामोंको ।

सरला—वेद किसको कहते हैं ?

सावित्री—वेद अपौरुषेय हैं और वे चार हैं । यथा—ऋक्, यजु, साम और अथर्व ।

सरला—अच्छा, तो अब परमात्माकी प्राप्तिके सहज साधन बतलाओ ।

सावित्री—सत्सङ्ग करना, परमात्माके नामका जप करना, निरन्तर उसका चिन्तन करना, उसीका ध्यान करना, उसीकी प्रीतिके लिये सारे कर्मोंका आचरण करना और उसीके प्रेममें मग्न होकर संसारको एवं अपने आपको भूल जाना । यही उसके मिलनेका उपाय है ।

सरला—नाम कौन-सा जपना चाहिये और ध्यान किस तरह करना चाहिये ?

सावित्री—श्रीराम, कृष्ण, हरि आदि कोई-सा भी नाम जो अपनेको प्रिय लगे वही जपना चाहिये । इसी प्रकार ध्यान* भी श्रीविष्णु, कृष्ण, राम और शिव आदि किसी साकार स्वरूपका अथवा बर्फमें जलके समान सर्वव्यापी निराकार परमात्माका करना चाहिये ।

सरला—नित्य प्रातःकाल भगवान्‌की प्रार्थना किस प्रकार करनी चाहिये ?

सावित्री—प्रार्थना इस प्रकार करनी चाहिये कि हे परम-[illegible]! हे सर्वान्तर्यामी दयामय परमात्मन्! आपको कोटि-कोटि नमस्कार है ! मुझसे मन, वाणी, शरीर और इन्द्रियोंके द्वारा जो कुछ अपराध हुए हैं उन सबको आप

---

*गीताप्रेसकी 'श्रीप्रेमभक्तिप्रकाश', 'मनको वश करनेके कुछ उपाय', 'सच्चा सुख और उसकी प्राप्तिके उपाय', 'भगवान् क्या हैं ?', 'प्रबोध-सुधाकर' आदि पुस्तकोंमें ध्यानकी बातें लिखी हैं ।

क्षमा कीजिये। मुझे ऐसा बल दीजिये कि जिससे मेरी सारी पापवासना नष्ट हो जाय, वाणीसे निरन्तर आपका गुणगान हो, शरीरसे निरन्तर आपकी सेवा हो, मनसे निरन्तर आपका चिन्तन हो। सारे जगत्‌में केवल आपहीकी मनमोहिनी छवि दीख पड़े और मेरा चित्त कमलमें भ्रमरकी भाँति सर्वदा उसीमें आसक्त रहे। हे प्रभो! मैं दीन हूँ, आप दीन-बन्धु हैं। इसी नाते मुझे सम्हालिये। जैसे दीन बालकको केवल माता-पिताका ही सहारा होता है उसी प्रकार मुझे भी केवल आपका ही सहारा है। हे नाथ! मेरे तो—

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

सरला—ऐसी प्रार्थनासे क्या होता है?

सावित्री—यदि प्रार्थना सच्चे मनसे और निष्कपट भावसे हो तो इससे परमात्माकी भक्ति प्राप्त होती है और उससे इस लोकमें सुख होता है और अन्तमें बन्धन छूटकर परमात्माकी प्राप्ति हो जाती है।

सरला—ईश्वर कितने हैं?

सावित्री—केवल एक ही।

सरला—अन्यान्य देवता क्या ईश्वर नहीं हैं?

सावित्री—नहीं।

सरला—फिर लोग उन्हें क्यों पूजते हैं?

सावित्री—शास्त्रोंमें उन्हें पूज्य माना है और परमात्माकी आज्ञा मानकर परमात्माकी प्रसन्नताके लिये देवपूजन करनेमें

कोई दोष भी नहीं है। जैसे पतिव्रता स्त्री अपने पतिको प्रसन्न करनेके लिये, पतिकी आज्ञासे दूसरे पुरुषोंकी सेवा करती है, उसी प्रकार यह देवपूजा भी है।

सरला—आजकल स्त्रियाँ जो अनेक पीर-पैगम्बर, लकड़हा, चिथड़हा, बाघोबा, मालासी, रिगतिया और मावली आदि अनेक देवी-देवताओंकी पूजा करती हैं वह सब भी तो इसी देवपूजामें है ?

सावित्री—तुम समझी नहीं, देवता तो उनको कहते हैं कि जिनका शास्त्रोंमें वर्णन है, तुमने जो नाम बतलाये हैं उनमेंसे कोई भी देवता नहीं है। मुसलमानोंके पीर-पैगम्बरोंको मानना तो महान् अधर्म और पापकार्य है। हिन्दुओंके इतने देवी-देवताओंके रहते हिन्दूधर्मका नाश करनेवाले मुसलमानोंके पीर-पैगम्बरोंको मानना, उनकी पूजा करना, मानता बोलना, कब्रोंको पूजना, ताजियोंके नीचेसे निकलना और बालकोंको निकलवाना, छोटे-छोटे बच्चोंपर मुसलमानोंके मुँहसे थुकवाना, उनकी कब्रोंपर फूल, पैसे और बतासे चढ़ाना और फिर उनका जूठन प्रसाद मानकर लेना तो एक प्रकारसे हिन्दूधर्मपर आघात करना है। अतएव इनकी पूजा तो सर्वथा त्याज्य है। परन्तु उन लकड़हा और मालासी आदिकी पूजा भी धर्मसंगत नहीं। उनकी पूजा भी एक तामसी कार्य है और प्रेतोपासना है और इस प्रकारकी पूजाका फल क्या होता है इसके लिये गीतामें कहे हुए भगवान्के वचनोंपर ध्यान दो—

यान्ति देवव्रता देवान् पितॄन् यान्ति पितृव्रताः।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्॥
(अ० ९। २५)

देवताओंको पूजनेवाले देवताओंको प्राप्त होते हैं, पितरोंको पूजनेवाले पितरोंको प्राप्त होते हैं, भूतोंको पूजनेवाले भूतोंको प्राप्त होते हैं। और मेरे भक्त मुझको ही प्राप्त होते हैं।

सरला—तो क्या इनकी पूजा नहीं करनी चाहिये, क्या इनकी पूजासे कोई कामना सिद्ध नहीं होती?

सावित्री—उत्तम गति चाहनेवालोंको तो इनकी पूजा कभी नहीं करनी चाहिये। मेरी समझसे तो इनकी पूजासे कोई कामना भी सिद्ध नहीं होती और यदि होती भी हो तो भी इनकी पूजा एक तामस कार्य होनेसे नीच गति पानेका कारण हो सकती है। इस दृष्टिसे भी इनकी पूजा त्याज्य है। वास्तवमें ये बनावटी देवता हैं, मूर्ख स्त्रियोंसे धन छीननेके लिये धूर्तोंने यह जाल रचा है जिसमें भोली-भाली स्त्रियोंको फाँसकर लोग धन हरण किया करते हैं। इसलिये भूलकर भी ऐसे लोगोंके धोखेमें नहीं आना चाहिये। ऐसे लोग बेचारी स्त्रियोंको बड़ी बुरी तरहसे ठगते हैं। किसी-किसी समय तो ऐसा बर्ताव देखा जाता है कि जिसका रूप व्यभिचार, खून और चोरी आदि होता है।

शास्त्रोक्त देवताओंके पूजनेसे यद्यपि कामनाकी सिद्धि होना माना है परन्तु उनकी पूजा भी कामनाकी सिद्धिके लिये नहीं करनी चाहिये।

सरला–मन्त्र, यन्त्र, तावीज, गण्डे और तागे आदिसे तो कार्य सिद्ध होता है न ?

सावित्री–किसी अंशमें मन्त्रशास्त्र सत्य हो सकता है। परन्तु पैसेके लिये मन्त्र-यन्त्र बतलानेवाले तो प्रायः धूर्त ही हुआ करते हैं, जो दूसरोंको धन, पुत्रादि देकर उनका मनोरथ सिद्ध कर सकते हों वे स्वयं दो-दो चार-चार पैसोंके लिये क्यों भटकें, अतएव ऐसे लोगोंसे बचना ही चाहिये।

सरला–यह सब बातें तुम्हें कैसे मालूम हुईं बहिन !

सावित्री–मैंने विद्या पढ़ी है जिससे मुझे अनेक बातोंका ज्ञान हो गया है।

सरला–विद्या पढ़ना तो स्त्रियोंके लिये सदासे बुरी बात है क्या तुम यह नहीं मानती ?

सावित्री–कौन कहता है कि सदासे बुरी बात है ? हमारे यहाँ तो गार्गी, मैत्रेयी और मदालसा-जैसी महान् विदुषियाँ हो गयी हैं। हाँ, कुछ समयसे स्त्रियोंमें विद्याका अभाव हो गया था। वास्तवमें विद्या पढ़नेमें कोई दोष नहीं। स्त्रियोंको तो अवश्य ही शिक्षिता होनी चाहिये।

सरला–लोग कहते हैं कि स्त्रियाँ पढ़नेसे विधवा हो जाती हैं.।

सावित्री–यह मिथ्या भ्रम है। विद्यासे ही विधवा होतीं तो जिन जातियोंमें स्त्रीशिक्षाका प्रचार है उन

जातियोंकी सभी स्त्रियाँ विधवा होतीं। यह तो वैसी ही मूर्खताकी बात है कि जैसे कुसंस्कारके वशमें होकर लोग कह दिया करते हैं कि हमारे घरमें अमुकने जनेऊ (यज्ञोपवीत) ली थी और वह मर गया था इसीलिये हम नहीं लेते।

सरला—कहते हैं कि विद्या पढ़कर स्त्रियाँ व्यभिचारिणी हो जाती हैं।

सावित्री—नहीं ! नहीं !! विद्यासे व्यभिचारिणी क्यों होने लगीं ? विद्या तो धर्मको जाग्रत् करती है, विद्यासे धर्मका स्वरूप मालूम होता है, गृहकार्यमें चतुरता बढ़ती है, धर्म-पुस्तकोंके अध्ययनसे विचारशक्ति बढती है, ज्ञानकी वृद्धि होती है और संकटके समय उससे पार पानेका मार्ग मिल जाता है, धैर्यका प्रकाश होता है, कुकर्मोंके त्यागमें और सत्कार्योंके करनेमें रुचि होती है, जिससे सब ओरसे कल्याण होता है। विद्यासे गृहस्थाश्रम स्वर्गका नन्दनवन-सा सुखमय बन जाता है। लोक और परलोक दोनों सुधर जाते हैं। भगवती सीताजी परम विदुषी और पतिव्रता थीं इसी कारण वे रावणकी सोनेकी लङ्काको लात मारकर भगवान् श्रीरामचन्द्रके चरणों-के ध्यानमें निमग्न रह सकीं। महारानी दमयन्तीने विद्या-कौशलसे ही अपने बिछुड़े हुए पतिका पता लगा लिया। सती सावित्रीने अपने अद्भुत सतीत्व और विद्याके बलसे ही यम-राजको वचनोंसे जीतकर पतिकी आत्माको यम-सदनसे वापस

लौटा लिया फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि विद्यासे व्यभिचार होता है। व्यभिचार होता है अविद्यासे, कुलटा स्त्रियोंके सङ्गसे, घर-घर भटकनेसे, विषयादिकी बातें अधिक सुननेसे, अधर्मसे होनेवाले दुःखोंको न जाननेसे, पतिके साथ कलह करनेसे और परपुरुषोंके साथ प्रीति करनेसे। इसमें विद्याका कोई दोष नहीं। हाँ, इतना अवश्य होना चाहिये कि स्त्रियोंको जो विद्या पढ़ायी जाय, उन्हें जो कुछ सिखाया जाय सो धर्मके अनुकूल और हिन्दू-आदर्शके अनुसार अवश्य हो।

सरला—वह शिक्षा कैसी होनी चाहिये ?

सावित्री—साधारणतः वह शिक्षा ऐसी होनी चाहिये कि जिससे बालिकाओंमें रामायण, गीता, मनुस्मृति और महाभारतादि धार्मिक और नैतिक ग्रन्थोंके समझनेकी शक्ति पैदा हो जाय। साथ ही घरके काम-काजमें वे चतुर हो जायँ, सीना, पिरोना, कातना और बालकोंकी रक्षा करना आदि कार्य सीख लें और सब प्रकारसे पतिका अनुगमन कर सकें।

सरला—आजकल जो शिक्षा दी जाती है, वह क्या ऐसी ही है ?

सावित्री—नहीं ! उसमें बहुत-सी त्रुटियाँ हैं, कन्याओंके लिये जो बड़े-बड़े विद्यालय हैं उनमें तो प्रायः अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी सभ्यताका समावेश हो गया है, जिनसे हमारा हिन्दू-आदर्श नष्ट हो रहा है। फैशन बढ़ रहा है, विलासिताकी तरफ झुकाव हो रहा है, घरके काम-

काजसे अरुचि और घृणा होने लगी है, फजूलखर्ची बढ़ रही है और केवल अपने शरीरके सुख और आरामके लिये शरीरको धोने, पोंछने और सजाने आदिमें ही प्रायः समय जाने लगा है। धर्मका भाव धीरे-धीरे परन्तु प्रबलताके साथ घट रहा है। हिन्दू-जातिकी स्त्रियोंके लिये ऐसी शिक्षा कभी वाञ्छनीय नहीं। अतएव इस शिक्षाप्रणालीका सुधार होना चाहिये। ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिये कि जिससे हिन्दू-बालिका आदर्श हिन्दू-ललना बन सके, जिससे वे धर्ममें रुचि, सदाचारमें प्रेम, पतिमें भक्ति, बड़ोंमें आदर, दीनोंके प्रति करुणा, जगत्के प्रति सेवाभाव, गृहस्थके कार्योंमें उत्साह, विलासितासे घृणा, मितव्ययिताका अभ्यास और ईश्वरमें श्रद्धा आदि गुणोंको पूरी तौरसे प्राप्त कर सकें।

सरला—छोटी-छोटी पाठशालाओंमें तो अंग्रेजी नहीं पढ़ायी जाती।

सावित्री—अंग्रेजी नहीं पढ़ायी जाती तो क्या हुआ ? अंग्रेजी भाव तो प्रायः रहते हैं। अंग्रेजी भाषासे मेरा द्वेष थोड़े ही है, मैं केवल यही चाहती हूँ कि हिन्दू-स्त्रियाँ अपने हिन्दूपनकी रक्षा कर सकें ऐसी शिक्षा उन्हें दी जानी चाहिये। पाठशालाओंमें भी प्रायः और बहुत-सी त्रुटियाँ हैं। जैसे उत्तम अध्यापिकाओंका अभाव, गृहकार्योंका न सिखाना और धर्म-शिक्षाका न होना इत्यादि। आरम्भसे ही माता-पिताको या अभिभावकोंको कन्याकी शिक्षाका उचित प्रबन्ध करना

चाहिये और स्वयं अपने आचरणोंसे उनको ऐसी शिक्षा देनी चाहिये कि जिससे उनके भी वैसे ही आचरण हो जायँ। बाल्य-कालमें तो कन्या अपने माता-पिताके अधीन रहती है, इससे उन्हींके आचरणोंका कन्यापर विशेष प्रभाव पड़ता है।

सरला—क्या कन्याको माता-पिताके अधीन रहना आवश्यक है?

सावित्री—आवश्यक ही नहीं, धर्म है। हमारे शास्त्रोंके अनुसार तो किसी भी अवस्थामें स्त्री-जातिको स्वतन्त्र नहीं होना चाहिये। मनुमहाराजने कहा है—

बाल्यया वा युवत्या वा वृद्धया वापि योषिता।
न स्वातन्त्र्येण कर्तव्यं किंचित्कार्यं गृहेष्वपि॥
बाल्ये पितुर्वशे तिष्ठेत् पाणिग्राहस्य यौवने।
पुत्राणां भर्तरि प्रेते न भजेत् स्त्री स्वतन्त्रताम्॥
(अ० ५। १४७-१४८)

बालिका, युवती और बूढ़ी स्त्रीको भी घरोंमें कोई कार्य स्वतन्त्र होकर नहीं करना चाहिये।

बाल्यावस्थामें पिताके वशमें, यौवन-अवस्थामें पतिके वशमें और पतिकी मृत्युके बाद पुत्रोंके वशमें रहे, पर स्वतन्त्र न रहे।

सरला—कन्याओंका विवाह कब होना चाहिये?

सावित्री—बारह वर्षसे कम उम्रकी लड़कियोंका विवाह तो कभी नहीं होना चाहिये। आवश्यक मालूम हो या योग्य वर

न मिले तो और भी साल-दो-सालके बाद विवाह करनेमें कोई आपत्ति नहीं है।

सरला—बारह वर्षसे कम उम्रकी लड़कियोंका विवाह क्यों नहीं करना चाहिये ? इसमें क्या हानि है ?

सावित्री—बहुत-सी हानियाँ हैं। स्त्री-जातिमें रोग बढ़ता है, स्त्रियाँ कम उम्रमें मर जाती हैं, उनके सन्तान या तो होती ही नहीं और यदि होती है तो बलहीन और अल्पायु होती है। इसके सिवा बाल-विवाहसे वैधव्यकी भी अधिक आशंका है।

सरला—बाल-विवाह तो शास्त्रसम्मत है न ?

सावित्री—नहीं ! सावित्री, रुक्मिणी और दमयन्ती आदिने अपने-अपने पतियोंको स्वयं चुना था, यदि वे नितान्त बालिका होतीं तो ऐसा नहीं कर सकतीं।

सरला—स्त्रियोंको तीर्थोंमें, मन्दिरोंमें और मेलोंमें जाना चाहिये या नहीं ?

सावित्री—मेलोंमें तो नहीं जाना चाहिये परन्तु तीर्थों और मन्दिरोंमें पतिकी आज्ञासे पतिके साथ जानेमें कोई आपत्ति नहीं। तीर्थ इसीलिये उत्तम हैं कि उनमें तपस्वी और ज्ञानी महात्मा लोग रहा करते थे और वे अपने पास बैठनेवालोंको ऐसा उपदेश दिया करते थे कि जिसको पाकर सुननेवाले संसार-सागरसे तर जाते थे। यही दशा मन्दिरोंकी थी। मन्दिरोंमें भगवान्‌की मूर्तिका दर्शन कर और भक्तिविह्वल पुजारियोंके उपदेश पाकर लोग पापोंसे छूटते थे परन्तु आज प्रायः इससे विपरीत दशा है, तीर्थोंमें भी चोर, लम्पट, व्यभिचारी और

लालचियोंके सिवा ज्ञानी महात्मा बहुत कम देखनेमें आते हैं, मन्दिरोंमें कइयोंकी दशा अभीतक बड़ी अच्छी है और उनमें जाना कल्याणका कारण है परन्तु अधिकांश स्थलोंमें कई प्रकारकी कुत्सित कार्यवाहियाँ सुनी जाती हैं अतएव स्त्रियोंको अकेले कहीं नहीं जाना चाहिये। वास्तवमें पतिसे बढ़कर स्त्रीके लिये कोई देवता नहीं और पतिका चरणोदक ही उसके लिये परमपावन तीर्थजल है अतएव नित्य पतिके चरणोंमें प्रणाम करना और पतिका चरणोदक लेना ही स्त्रीका कर्तव्य है। यदि कभी पतिके साथ कहीं जानेका काम भी पड़े तो बड़ी सावधानीसे जाना चाहिये, आजकल चोर, लुच्चों और उचक्कों-की भरमार है। कम-से-कम बहुमूल्य कपड़े और गहने पहनकर तो कभी बाहर जाना उचित नहीं।

सरला—क्या इसमें भी कोई दोष है ?

सावित्री—पहली बात तो यह है कि स्त्रियोंके गहने-कपड़े-का सौन्दर्य केवल अपने पतिकी प्रसन्नताके लिये है, लोगोंको दिखलानेके लिये नहीं। जो स्त्रियाँ घरोंमें तो मैली-कुचैली साड़ी पहने बुरा वेष बनाये रहती हैं और बाहर निकलनेके समय गहनों-कपड़ोंसे बन-ठनकर निकलती हैं वे बड़ी भूल करती हैं, यह तो एक प्रधान दोष है, दूसरे चोर, उचक्कोंका भय रहता है, तीसरे अन्यान्य स्त्रियोंकी देखादेखी गहने-कपड़ेकी लालसा दिन-पर-दिन बढ़ती जाती है जिससे आगे चलकर घरमें कलह होने लगता है। इसी गहने-कपड़ेके कारण

झगड़ेका सूत्रपात होता है और बढ़ते-बढ़ते अन्तमें वह इतना भीषण रूप धारण कर लेता है कि जिससे सारे घरमें कलहकी अग्नि भड़क उठती है। घरभरमें परस्पर मनोमालिन्य हो जाता है। भाई-भाई और पिता-पुत्रमें अलग-अलग होनेकी नौबत आ जाती है और इसी प्रकार होते-होते अन्तमें घर बरबाद हो जाता है।

सरला—क्या गहने-कपड़े पहनकर बाहर जानेसे ही लालसा बढ़ती है, घरमें पहननेसे नहीं बढ़ती है?

सावित्री—घरमें भी बढ़ती है परन्तु बाहर अधिक बढ़ती है। बाहर तो दिखानेका भाव रहता है। यदि किसी दूसरी स्त्रीसे अपने गहने-कपड़े किसी तरह कम सुन्दर मालूम होते हैं तो मनमें यह इच्छा होती है कि मै भी ऐसे ही बनाऊँ, पर यदि वह बाहर जाते समय गहनों और बहुमूल्य कपड़ोंके पहननेकी आदत ही छोड़ दे तो फिर दूसरी स्त्रियोंको इस दृष्टिसे देखना आप-से-आप बंद हो जाय।

सरला—यह तो ठीक है। परन्तु घरमें तो वह चाहे जितने गहने-कपड़े पहने और पतिसे कहकर चाहे जितने गहने-कपड़े बनवावे, इसमें तो कोई आपत्ति नहीं है न?

सावित्री—आपत्ति क्यों नहीं है, गहने-कपड़ेकी अधिक सजावटसे विलासिता बढ़ती है, घरका काम-काज प्रायः छूट जाता है। बार-बार पतिसे माँगनेमें प्रेम घटता है। स्त्रीको तो पतिकी अनुरागिणी ही रहना चाहिये, पतिका कर्तव्य है कि

वह अपनी स्थितिके अनुसार स्त्रीको गहने-कपड़े अवश्य बनवा दे, यदि केवल कंजूसीसे वह गहने-कपड़े नहीं बनवाता है तो यह उसकी भूल है, परन्तु यह कर्तव्य पतिका है, इसे पति ही सोचे, स्त्रीको तो प्रसन्नमनसे वही बात स्वीकार कर लेनी चाहिये कि जिस बातमें पति प्रसन्न हो। यदि पतिकी आर्थिक अवस्था अधिक गहने-कपड़े बनवानेकी न हो और स्त्री रोज-रोज तकाजा करती रहे तो इसका पतिके मनपर बहुत बुरा असर हो सकता है। अतएव स्त्रीको गहने-कपड़ोंके लिये पतिसे कभी अनुचित ताकीद नहीं करनी चाहिये। अपनी आवश्यकता नम्रतासे जता देनेमें कोई विशेष हानि नहीं। यह भी न करे तो और भी उत्तम है।

सरला—अच्छा, यह तो हुआ। अब तुमने जो गौण धर्म-की बात पहले कही थी और यह कहा था कि उनका आचरण भी केवल पतिकी प्रसन्नताके लिये ही किया जाता है सो वे धर्म कौन-से हैं, यह मुझे बतलाओ।

सावित्री—सुनो। मैं संक्षेपसे कहती हूँ। घरको बुहारना-झाड़ना, लीपना-पोतना, घरकी सामग्रियोंको साफ रखना, उनको यथोचित स्थानोंमें रखना, आमदनीसे कम खर्च करना, खर्चका हिसाब रखना, स्वास्थ्यरक्षाके नियमोंका जानना और पालना, बच्चोंका पालन करना, उन्हें अपने आचरणोंसे और विद्यासे शिक्षा देना, घरका सारा काम अपने हाथोंसे करना, सारे सगे-सम्बन्धियोंको जानना,

उनसे यथायोग्य बर्ताव करना, आलस्य न करना, धर्मको जानना, धर्मकार्योंमें उत्साही रहना, दानशील होना, स्वयं वस्त्राभूषणोंसे भूषित होकर विनयसे, इन्द्रियदमनसे, मधुर वाणीसे और प्रेमसे पतिकी सेवा करना, पतिको सन्तुष्ट रखना, जो कुछ प्राप्त हो उसीमें सन्तोष करना, भोगकी वस्तुओंके लिये लाओ-लाओ न करना, मधुर वचन बोलना, सावधान और शुद्ध रहना, पतिके सारे कुटुम्बियोंसे, उसके मित्रों तथा बान्धवोंसे यथायोग्य प्रीतिका बर्ताव करना और इन सारे कार्योंमें केवल एक उद्देश्य रखना कि इनसे मेरे पतिको प्रसन्नता हो, पतिका यश, कीर्ति, वैभव, सुख और धर्म बढ़े, पतिको भगवद्भक्ति प्राप्त हो और अन्तमें भगवत्-प्राप्ति हो ।

सरला—इन धर्मोंके पालनसे क्या होगा ?

सावित्री—यदि निष्कामभावसे धर्मोंका पालन हो तो परमात्माकी प्राप्ति और सकामभावसे हो तो लोकान्तरमें पति देवताके साथ अलौकिक सुखोंकी प्राप्ति हो सकती है । श्रीमद्भागवतमें लिखा है कि 'जो स्त्री लक्ष्मीके समान पति-परायणा होकर अनन्यभावसे हरिकी भावनासे पतिकी सेवा करती है, वह वैकुण्ठधाममें हरिस्वरूप पतिके साथ लक्ष्मीके समान आनन्दको प्राप्त होती है ।' (भाग० ७ । ११ । २९)

मनुमहाराजने कहा है—

अनेन नारीवृत्तेन मनोवाग्देहसयता ।
इहाग्र्या कीर्तिमाप्नोति पतिलोकं परत्र च ॥
(अ० ५ । १६६)

इस प्रकार जो स्त्री मन, वाणी और शरीरको वशमें रख कर नारीधर्मसे अपना जीवन बिताती है, वह इस लोकमे परम कीर्ति और परलोकमें पतिलोकको जाती है।

सरला–यह तो सधवा स्त्रियोंके धर्म हुए। अब उ स्त्रियोंके धर्म बतलाओ कि जिनके पतियोंका देहान्त हो चुका है

सावित्री–विधवाओंका धर्म बड़ा ही कठिन है किन्तु वह है परमपवित्र। जिस प्रकार आश्रमधर्ममें संन्यास सबका पूज्य है उसी प्रकार स्त्रीधर्ममें भी विधवाधर्म सर्वपूज्य है। हिन्दू जातिकी वे आदरणीया विधवाएँ जो भोगविलासकी सारि सामग्रियोंको तृणवत् त्यागकर परमात्माके चरणोंमें चित्त लगाती हुई अपने दुःखमय जीवनको जिस पवित्रताके साथ सुखमय बनाकर बिताती हैं–अपने अद्भुत त्यागसे जो हिन्दू जातिका मस्तक ऊँचा करती हैं वे विधवाएँ यदि पूज्य न हों तो दूसरा कौन हो सकता है? आजकल जो कहीं-कहीं विधवा-धर्मके पालनमें विपरीत भाव देखा जाता है उसका कारण धार्मिक शिक्षाका अभाव, मूर्खतावश विधवाओंके प्रति असद्-व्यवहार और अधिकांशमें पुरुषजातिकी नीच वृत्तियाँ हैं। यदि विधवाओंको धार्मिक शिक्षा मिली हुई हो, उनके साथ उत्तम व्यवहार हो और पुरुषजाति अपनी नीच वृत्तियोंका दमन कर ले तो विधवाधर्म फिर हिन्दूजातिके गौरवका कारण बन सकता है। विधवाओंके धर्मपालनमें बालविवाह और वृद्ध-

विवाह भी बड़े भारी बाधक हैं। यदि माताएँ अपने लड़कोंका विवाह कम-से-कम १८ सालसे कम उम्रमें न करें और अपनी लड़कियोंका विवाह १८ सालसे कम उम्रके लड़कोंके साथ और अधिक-से-अधिक ३५ सालसे अधिक उम्रवालोंके साथ न करें तो बच्चोंके कल्याणके साथ ही विधवाओंकी बढ़ती हुई संख्यामें भी बहुत कुछ कमी हो सकती है और इससे विधवा-धर्मके पालनमें सहायता मिल सकती है। अस्तु! अब मैं विधवाओंके धर्म बतलाती हूँ जिनको तुम ध्यान देकर सुनो।

१—सती हो जाय, आजकल राजके कानूनके अनुसार सती होना नियमविरुद्ध है और वास्तवमे जबरदस्ती पतिकी लाशके साथ जल मरनेका नाम ही सती होना नहीं है। अपने मनको मारकर और पतिके चरणोंमें चित्त लगाकर पतिके भी पति परमात्माका भजन करना ही यथार्थ सती होना है। इसलिये विधवाओंको चाहिये कि मनको जीतकर एकमात्र परमात्माको ही अपना पति मानकर प्रेमपूर्वक उसीका भजन करें। यही सती होना है।

२—अपना समय परमात्माकी आराधनामें लगावे, संसारके सुखभोगोंसे मनको हटा ले, गीता और रामायणादि ज्ञान, वैराग्य और भक्तिको उत्पन्न करनेवाले ग्रन्थोंका विचार करे, सदा साधु-स्वभावसे रहे।

३—उत्सव और मंगलादि कार्योंमें शामिल न हो *। सधवा और युवती स्त्रियोंकी बातें न देखे और न सुने; आभूषण और शृङ्गार त्याग दे; बाल सँवारना, पान खाना और सुगन्धित पदार्थोंका सेवन करना छोड़ दे।

४—जहाँतक हो सके धरतीपर सोवे; कोमल बिछौना न बिछावे, एक समय भोजन करे, उत्तेजक पदार्थ न खाय, महीन, रेशमी और फैशनवाले वस्त्रोंको त्याग दे; जहाँतक हो सके पवित्र मोटे, हाथसे बुने हुए देशी वस्त्र काममें लावे; यथासाध्य रंगीन वस्त्र न बरते।

५—आठ प्रकारके मैथुनोंका सर्वथा त्याग कर दे।

६—निर्जल और निराहार व्रत करे। स्वादिष्ट और बलकारक भोजन जान-बूझकर कभी न करे।

७—निकम्मी कभी न रहे, चक्की पीसना और चरखा कातना आदि शरीरको न बढ़ानेवाले कार्य करती रहे; घरके

---

* इसलिये नहीं कि उनमें शामिल होनेसे वे काम बिगड़ जायँगे। जैसा कि भूलसे बहुतसे लोग मान बैठे हैं कि विवाहके समय, यात्राके समय विधवाको देखनेसे पाप होता है। भला पवित्रात्मा विधवाके दर्शनसे पाप होगा तो पुण्य किसके दर्शनसे होगा? ऐसा भ्रम छोड़कर विधवाओंसे घृणाका भाव हटा लेना चाहिये और उनमें आदर बुद्धि करनी चाहिये; उनको उत्सवादिमें शामिल होना इसलिये वर्जित है कि वहाँकी चमक-दमक और विषय-बाहुल्यसे कहीं विधवाके मनमें कोई विकार न हो जाय।

और सारे कार्य भी यथासाध्य अपने हाथोंसे ही करे।

८—धर्म और नीतिके उपदेश सुने और सुनावे; कुसङ्ग सर्वथा त्याग दे।

९—सास, श्वशुर, जेठ, देवर, पिता, माता, भाई या अन्य अपने रक्षकके (कि जो दूषित आचरणोंवाला न हो) अधीन रहे; रक्षककी आज्ञा बिना कुछ भी न करे।

१०—बकवाद और हठ न करे, क्रोध न करे, दीन होकर सन्तोषसे रहे, धर्ममें निष्ठा रक्खे और चित्तको कभी चञ्चल न होने दे।

११—युवती स्त्रियोंमे न बैठे; सदा बड़ी-बूढ़ियोंके तथा धर्मका आचरण करनेवाली स्त्रियोंके पास बैठे; बुरे आचरण-वाली स्त्रियोंके पास बैठना तो दूर रहा, वरं जहाँतक हो सके उनके दर्शन भी न करे।

१२—यदि अपने पास पैसे हों तो उन्हें गरीब और अनाथ बच्चे तथा विधवाओंकी सहायतामें लगावे; पैसे न हों तो शारीरिक परिश्रमसे जो कुछ आमदनी हो उसीमें अपना निर्वाह करे, जहाँतक हो सके किसीसे कुछ भी न माँगे।

विधवाओंके सम्बन्धमें मनुमहाराजके ये वचन हैं—

कामं तु क्षपयेद्देहं पुष्पमूलफलैः शुभैः।
न तु नामापि गृह्णीयात् पत्यौ प्रेते परस्य तु॥
आसीतामरणात्क्षान्ता नियता ब्रह्मचारिणी।
यो धर्म एकपत्नीनां काङ्क्षन्ती तमनुत्तमम्॥

मृते भर्तरि साध्वी स्त्री ब्रह्मचर्ये व्यवस्थिता ।
स्वर्गं गच्छत्यपुत्रापि यथा ते ब्रह्मचारिण. ॥
अपत्यलोभाद्या तु स्त्री भर्तारमतिवर्तते ।
सेह निन्दामवाप्नोति पतिलोकाच्च हीयते ॥

(अ० ५ । १५७, १५८, १६०, १६१)

पवित्र पुष्प-मूल-फलों (के भोजन) से अपनी देहको चाहे दुर्बल कर दे, परन्तु पतिके मरनेपर दूसरेका नाम भी न ले ।

पतिव्रता स्त्रियोंके सर्वोत्तम धर्मको चाहनेवाली विधवा स्त्री मरणपर्यन्त क्षमायुक्त नियमपूर्वक ब्रह्मचर्यसे रहे ।

अपुत्रा होनेपर भी पतिव्रता स्त्री स्वामीकी मृत्युके बाद केवल ब्रह्मचर्यके बलसे स्वर्गको जाती है ।

जो स्त्री सन्तानके लोभसे पतिका अतिक्रमण करती है वह इस लोकमें निन्दा पाती है और परलोकसे भी भ्रष्ट हो जाती है ।

सरला—बहिन ! अब मुझे तुम कुछ चुने हुए ऐसे नियम बतला दो कि जिनके पालनसे स्त्रियोंके सारे धर्मोंका पालन हो जाय ।

सावित्री—बड़ी अच्छी बात है । लो तो ध्यान देकर सुनो और जहाँतक बन पड़े इन नियमोंको याद रक्खो; स्वयं काममें लाओ तथा औरोंमें प्रचार करो ।

१—यदि संसार तथा स्वर्गका सुख और मुक्तिका

परम सुख प्राप्त करना चाहती हो तो तन, मन और वाणीसे अपने पतिकी सेवा और आज्ञामें रहो, तनसे जिस प्रकार बने, पतिको सुख पहुँचाओ; मनसे कपट छोड़कर पूर्ण प्रेम करो, पति यदि तुमसे प्रेम न भी करे तो भी तुम अपनी तरफसे प्रेममें कमी मत होने दो; वाणीसे निरन्तर मृदु, मधुर, प्रिय, प्रेम-भरे, क्रोधरहित और आदरसूचक शब्दोंका प्रयोग करो, यदि पति क्रोध भी करे तो भी तुम अपने शब्दोंको वैसा ही रक्खो।

२–जो काम पतिकी इच्छाके विरुद्ध हो उसको कभी न करो, चाहे वह काम तुमको कितना ही प्यारा क्यों न हो। पतिकी जैसी इच्छा देखो वैसे ही बरतो। जहाँ पति कहे, वहीं बैठो; जब कहे, तभी उठो; जो कहे सो ही करो; अपने मनसे किसी भी दूसरी बातको बनाकर पतिकी इच्छाको न बिगाड़ो।

३–हर हालतमें प्रसन्न रहो और पतिको प्रसन्न रक्खो; जिस कार्यसे पतिको प्रसन्नता और सुख हो वही कार्य करो।

४–पति कैसा ही रोगी, कुकर्मी और दुराचारी हो, तुम तो उसे ईश्वरके समान जानो और नित्य उसकी दासी बनी रहो; बीमार हो तो तन, मन, धनसे उसकी सेवा करो; यदि उसे मानसिक क्लेश हो तो उस क्लेशको भुलाकर प्रसन्न करनेकी चेष्टा करो। जब वह बाहरसे थका-माँदा आवे तो हँसकर मीठे वचनोंसे उसकी थकावट दूर करो, प्रणाम करो, गरमी हो तो पंखा हाँको; शीतल जल पिलाओ; पतिके रोगसे या उसके किसी कार्यसे कभी घृणा न करो किन्तु अपनी प्रेमभरी चेष्टासे

उसे रोगमुक्त करने और सुमार्गपर लानेका यत्न करो।

५–पतिसे छल, कपट, छिपाव या चोरी कभी मत करो; सदा सत्यका व्यवहार करो; पति यदि तुमसे कुछ झूठ भी बोल दे तो भी तुम सत्य कभी न छोड़ो और भूलकर भी उसे न कोसो।

६–पति भला-बुरा कैसा ही क्यों न हो परन्तु तुम पर-पुरुषकी ओर बुरी नीयतसे कभी न देखो, भगवान्‌ने तुम्हारे लिये जो कुछ विधान कर दिया है, उसीमें सन्तुष्ट रहो, पराये जूँठे पकवान खानेकी अपेक्षा घरकी सूखी रोटी उत्तम है, यदि तुमने परपुरुषकी तरफ देख लिया तो फिर तुममें और वेश्यामें क्या अन्तर रहा और इसका फल भी कितना विपरीत होता है, उसे भी याद रक्खो।

गोस्वामी तुलसीदासजीने रामायणमें कहा है—

उत्तमके अस बस मन माहीं। सपनेहुँ आन पुरुष जग नाहीं॥
मध्यम पर पति देखइ कैसे। भ्राता पिता पुत्र निज जैसे॥
धरम बिचारि समुझि कुल रहई। सो निकिष्ट तिय स्रुति अस कहई॥
बिनु अवसर भय तें रह जोई। जानहु अधम नारि जग सोई॥
पतिबंचक परपति रति करई। रौरव नरक कल्प सत परई॥
छन सुख लागि जनम सत कोटी। दुख न समुझ तेहि सम को खोटी॥
बिनु स्रम नारि परमगति लहई। पतिब्रत धर्म छाड़ि छल गहई॥
पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई। बिधवा होइ पाइ तरुनाई॥

७–विषयोंसे तृप्ति कभी नहीं हुआ करती, ज्यों-ज्यों विषय मिलते हैं, त्यों-त्यों तृष्णा बढ़ती रहती है। इसलिये

स्वप्नमें भी परपुरुषकी ओर मन न दौड़ाओ। आज एकको छोड़कर दूसरेकी तरफ़ मन दौड़ाओगी तो कल उसे भी छोड़नेकी इच्छा होगी। परपुरुष तो दूर रहा, अपने पतिके साथ भी ऋतुकालके सिवा विहार न करो।

८—यदि पति परस्त्रीगामी है तो भी उससे चिढ़कर बुरा व्यवहार न करो और न सौतसे ईर्ष्या या डाह करो। तुम तो अपना धर्म समझकर पतिकी सेवा ही करते रहो, तुम्हारे पतिव्रतधर्मके तेजसे और तुम्हारी सेवाके प्रभावसे पतिकी बुद्धि आप ही सुधर सकती है।

९—पतिके मित्रोंको मित्र और शत्रुओंको शत्रु समझो, पतिका भेद कभी किसीसे न कहो, उसके मित्रोंसे भी नहीं।

१०—दुःख, दरिद्रता या और किसी हीन दशामें पतिकी सेवा-टहल विशेष चावसे करो।

११—यदि तुम रूपवती और गुणवती हो तथा तुम्हारा पति कुरूप और गुणहीन है तो भी तुम अपने रूप और गुणके घमण्डमें आकर कभी पतिकी निन्दा न करो। पतिसे कभी किसी बातका अभिमान न करो, सदा अनुरक्ता दासी बनकर रहो। जहाँतक हो सके छायाकी भाँति पतिकी अनुगामिनी रहो, जैसे श्रीसीताजी, सावित्री, दमयन्ती और शैव्या आदि रही थीं।

१२—पतिसे निष्कपट, निर्लोभ और अविचल प्रेम

रक्खो। गहने-कपड़ेके लिये पतिको कभी मत सताओ।

१३—पतिकी सब प्रकारकी सेवा सदा अपने हाथोंसे करो, नौकरों-चाकरोंके भरोसेपर मत रहो। पतिके लिये रसोई खुद बनाओ और उसे अपने हाथोंसे परोसो। पान-सुपारी आदि भी अपने ही हाथोंसे दो।

१४—पतिसेवाको देवसेवासे भी अधिक समझो, क्योंकि बड़े-बड़े तप और व्रत भी पतिसेवाके सोलहवें हिस्सेके बराबर ही हैं।

१५—पतिके साथ एकप्राण और दो देह होकर रहो।

१६—पतिकी प्रसन्नताके बिना स्वर्गसुखको भी तुच्छ समझो।

ये सोलह नियम तो तुम्हें पतिसेवाके बतलाये, अब वे बातें बतलाती हूँ कि जिनका सम्बन्ध दूसरोंसे भी है।

१—अपनी सास, ससुर, जेठानी, देवरानी, ननद, या दूसरे नातेदारोंके साथ सदा अच्छा बर्ताव करो, तुम जैसा बर्ताव दूसरोंके साथ करोगी वैसा ही तुम्हें भी प्राप्त होगा।

२—अपनी सासको पतिकी पूजनीया माता जानकर उसका सदा आदर करो। तुम उसे अपनी माताके समान समझो, उसकी आज्ञा मानो, कभी मनमें ऐसा भाव मत आने दो कि यह तो मेरे पतिकी कमाई खाती है, याद रक्खो वह तुम्हारा पति पीछेसे बना है, इसका पुत्र पहलेसे है, तुम्हारी

अपेक्षा तुम्हारे स्वामीपर तुम्हारी सासका अधिक अधिकार है यों समझकर सास जो कहे सो करो, कभी उसके विरुद्धाचरण न करो। यदि तुम सासके साथ बुरा बर्ताव करोगी तो तुम्हारी बहू भी आगे चलकर तुमसे वैसा ही बर्ताव करेगी।

३—ननदका भी पतिकी बहिन होनेके कारण घरमें कुछ हक समझो, यथासम्भव उसकी माँग पूरी करो और उससे कभी मत लड़ो।

४—भौजाईको अपने भाईकी अर्धांगिनी समझकर उससे प्रेम करो, ऐसी भावना मनमें कभी मत लाओ कि यह पराये घरकी लड़की मेरे बापके घरकी मालकिन कैसे बन गयी। ऐसा समझोगी तो घरमें कलह होगा।

५—बहूको लड़कीके समान समझकर उसको प्यार करो, उसके रोग-शोकमें उसे सान्त्वना दो और उसके कष्ट दूर करनेका प्रयत्न करो, यहाँ तो तुम्हीं उसकी माता हो। बहूके साथ कभी बुरा बर्ताव न करो। इस बातको याद करो कि जब तुम्हारी सास तुम्हारे बहूपनके समय तुम्हें बुरा-भला कहा करती थी तब तुम्हें कितना कष्ट होता था, वैसा ही इस समय इस बहूको भी होता होगा। बहूको कष्ट पहुँचाते समय यह भी याद कर लिया करो कि मेरी लड़की जब अपनी सासद्वारा मिले हुए दुःखोंका मेरे सामने वर्णन करती है तब मुझे कितना दुःख होता है और अनायास ही मेरे मुँहसे लड़कीकी सासके प्रति कैसे कड़े वचन

निकल पड़ते हैं। इसी प्रकार बहूके पीहरमें भी होता होगा। बहूकी माताको भी उतना ही कष्ट होता होगा और उसके मुँहसे भी मेरे प्रति वैसे ही शब्द निकलते होंगे।

६–लड़कीको यही शिक्षा दो कि वह ससुरालमें जाकर सबकी और खासकर पतिकी सेवा करे, ससुरालवालोंकी बुराई या उनका भेद किसीसे भी न कहे। यदि तुम्हारी लड़की तुम्हारे सामने अपने ससुरालवालोंके दोष बतायेगी तो तुम्हें दुःख होगा और सम्भव है कि उनसे तुम्हारा मनोमालिन्य भी हो जाय। अतएव यदि लड़की ससुरालवालोंकी निन्दा करती हो तो वह तुम मत सुनो। वरं अपनी लड़कीको समझा दो कि बेटी! तुम्हारा कल्याण उनकी सेवामें ही है। यदि लड़की-की शिकायत वास्तवमें सुनने योग्य हो तो उसे सुन लो परन्तु उसका प्रतीकार ऐसे उपायोंसे करो कि जिसमें दोनों तरफका प्रेम बना रहे और लड़कीका दुःख भी दूर हो जाय।

७–देवरानी और जेठानीके बालकोंको बड़े प्रेमसे देखो, यदि वे अपने बालकोंको झिड़कें या उनसे नाराज़ रहें तो भी तुम तो प्रेम ही करो। क्योंकि उनको अपना नाराज होना तो बुरा नहीं मालूम होता परन्तु उनके बालकोंके साथ तुम्हारा नाराज होना उन्हें अखरेगा।

८–भगवान्‌ने यदि तुम्हें बालक दिया है तो उसे गुणवान् और विद्वान् बनानेकी चेष्टा करो। यदि आरम्भसे ही तुम उसे

गाली बकना या मारना सिखाओगी तो वह पहले तुम्हींको गाली देगा और मारेगा।

९—तुम्हारी चेष्टासे बालक गुणवान् और विद्वान् होकर धर्म और देशकी सेवाकर अपने कुलका नाम उज्ज्वल कर सकेगा और तुम्हारे बिगाड़नेसे वह कुलका नाम डुबाकर जीवनभर स्वयं दुःख भोगेगा और तुम्हें भी दुःख देगा।

१०—यदि तुम्हारे कन्या हो तो मनमें नाराज मत होओ, ईश्वरको मत कोसो और उस कन्यासे भी बुरा व्यवहार मत करो। अक्सर माताएँ आरम्भमें लड़केकी अपेक्षा लड़कीसे कम प्यार किया करती हैं परन्तु ऐसा करना ठीक नहीं। लड़की भी तुम्हारा मुख उज्ज्वल और तुम्हारे वंशकी रक्षा कर सकती है। सावित्री लड़की ही थी परन्तु उसने दोनों कुलोंकी कैसी रक्षा की!

११—यदि तुम्हारे बालक न हो या होकर मर जाय तो प्रारब्धका दोष समझकर सन्तोष करो; आवश्यक मालूम हो तो अनुभवी वैद्यसे चिकित्सा कराओ, परन्तु परमात्मापर मन मैला न करो और न गोद लेनेकी ही चेष्टा करो, यह मत समझो कि पुत्र हुए बिना अच्छी गति नहीं मिलेगी। मोक्ष भी बिना पुत्र मिल सकता है।

मनुमहाराज कहते हैं—

अनेकानि सहस्राणि कुमारब्रह्मचारिणाम्।
दिवं गतानि विप्राणामकृत्वा कुलसंततिम्॥

(अ० ५। १५९)

कई हजार कुमार ब्रह्मचारी ब्राह्मणोंने बिना सन्तान उत्पन्न किये ही स्वर्गलोकको पाया है ।

उत्तम गति उत्तम कर्मोंसे मिलती है, सन्तान न हो तो भी कोई हानि नहीं ।

१२—सन्तानके लिये जन्तर, मन्तर, गण्डा, तावीज कभी मत कराओ । झूठे, ठग, पाखण्डी, धूर्त और बदमाशोंके फन्देमें न फँसो; और न इसके लिये किसी देवी-देवताकी मानता करो ।

१३—बिना प्रयोजन एक पैसा भी मत खर्च करो; जहाँ-तक बन सके, खर्च कम लगाओ; अनावश्यक वस्तु सस्ती मिलती हो तो भी मत खरीदो; दुहरे-तिहरे गहने-कपड़े कभी मत बनवाओ; देन-लेनमें दूसरोंकी होड़ मत करो । कड़ी कमाई-का पैसा फजूल खर्च करनेसे धनकी हानि होगी और पति नाराज होगा । साथ ही तुममें फजूलखर्चीकी बुरी टेव पड़ जायगी । याद रक्खो कि अच्छी अवस्थामें जो फजूलखर्चीकी आदत डाल लेती है, उसे बुरी अवस्थामें दूना दुःख होता है ।

१४—विलासिताकी चीजोंसे दूर रहो, शौकका कोई सामान इकट्ठा न करो । यदि करोगी तो तुम्हें दुःख होगा ही परन्तु तुम्हारी सन्तान भी विलासिताके चक्करमें पड़कर बड़ा क्लेश पावेगी ।

१५—घरका सारा कार्य जहाँतक हो सके अपने हाथोंसे

करो, पीसने, कातने, रसोई बनाने और बर्तन माँजने आदि गृहकार्योंके करते रहनेसे तुम्हारे शरीरके अवयव ठीक रहेंगे। परिश्रम होते रहनेसे खाया हुआ अन्न अच्छी तरह पचेगा, मन्दाग्नि वगैरहकी बीमारी न होगी, पैसेकी बचत होगी, अच्छी और ताजी चीजें मिलेंगी, पवित्रता बनी रहेगी और धर्म बचेगा।

१६–यदि नौकरोंसे काम करानेकी आवश्यकता हो तो भी तुम उनके कामोंकी बराबर जॉच करती रहो। तुम्हारी जाँच-पड़तालसे नौकर सावधान रहेंगे, काम ठीक होगा और चोरी भी नहीं होगी।

१७–नौकर और नौकरानियोंके साथ सच्चे मनसे प्रेम और दयाका वर्ताव करो परन्तु उन्हें मुँह मत लगाओ।

१८–घरकी प्रत्येक चीजको सँभालकर रक्खो, सफाई-सुथराईकी तरफ विशेष ध्यान दो, बर्तन, कपड़े और बिछौने सदा साफ रक्खो। किसी भी घरकी चीजको तुम अपने आलस्यसे बिगड़ने और उजड़ने मत दो। नौकरोंके भरोसे छोड़ देनेसे बिगड़ने और उजड़नेकी अधिक सम्भावना है।

१९–घरमें सीने, पिरोने और वेलबूटे काढ़नेका काम आवश्यकतानुसार स्वयं कर लिया करो; इससे घरमें एक कला बनी रहेगी और पैसे बचेंगे।

२०–जवानीमें ही कोई ऐसा निर्दोष कमाईका काम

सीख लो कि जिससे कभी घरवालोंके मर जानेपर बुरी अवस्था-में तुम्हें सहायताके लिये दूसरोंका मुँह न ताकना पड़े।

२१–मुँहसे कभी कड़ुए वचन मत बोलो, मीठे वचन सबको प्यारे होते हैं। देखो!

कागा किसका धन हरे, कोयल किसको देय।
मीठे शब्द सुनाय कर, जग अपनो कर लेय॥

२२–यदि तुमसे कोई लड़े, तुम्हें चार गालियाँ दे तो भी तुम चुप रहो। बदलेमें गाली न दो। तुम्हारी चुप्पीसे ही लडाई मिट जायगी। परन्तु यदि तुम उत्तर दे बैठोगी तो रार बढेगी।

२३–झूठ कभी मत बोलो, झूठसे वाणीका विश्वास चला जाता है। जो कुछ बोलो सो सत्यके काँटेपर तौल-तौलकर, परन्तु इतना खयाल रक्खो कि तुम्हारा सत्य कहीं लोगोंके लिये कड़ुआ या अहितकारी न हो जाय।

२४–किसीसे दिल्लगी न करो, खासकर किसी अंगहीन या गुणहीनकी अथवा किसीसे भूल हो जानेपर उसकी दिल्लगी मत करो। ऐसी अवस्थामें यदि कोई तुम्हारी दिल्लगी उड़ावे तो तुम्हें कितना कष्ट होगा, उसी प्रकार दूसरेको भी होता है।

२५–उलाहना देनेकी आदत छोड़ दो, मतभेदी बातें न करो, भूल सबसे होती है, तुम अपनी भूलोंको देखो और उन्हें सुधारनेका यत्न करो।

२६–किसीकी निन्दा न करो; किसीके दोषोंको प्रकट न

करो, दूसरेके दोषोंको कहने, सुनने और सोचनेसे उससे वैमनस्य होगा, तुम्हारे मनमें उसके प्रति द्वेष, घृणा और क्रोधकी जागृति होगी, बारम्बार दोषोंकी आलोचनासे वे दोष तुम्हारे अंदर भी आने लगेंगे और पाप तो होगा ही। दूसरोंके गुणोंकी प्रशंसा जरूर करो।

२७–अपने मुँहसे अपनी प्रशंसा कभी मत करो, सत्कार्योंके प्रकाशसे तुम्हारा पुण्य घटेगा, मानकी इच्छा बढ़ेगी और धर्मका ह्रास होगा।

२८–प्रमादवश कभी बातचीतमें हठ न करो, इससे मन मैला होता है और वैमनस्य बढ़ता है।

२९–अश्लील, गंदे और असत्य गीत कभी न गाओ; यदि आवश्यक हो तो भगवान्‌के गुणानुवाद और विनयके पद गाओ; रास्तोंमें गाना उचित नहीं।

३०–बहुत बोलना, बेमोके बोलना, समयपर न बोलना, बीचमें बोलना, बिना पूछे बोल उठना, बिना सोचे-समझे बोलना, शीघ्रतासे बोलना, ऊटपटांग बकना और व्यर्थकी बातें करना आदि वाणीके दोष हैं, इनसे सदा बचो।

३१–तुम्हारे घरपर जो कोई आवे उससे प्रेम और आदरपूर्वक मिलो, उसकी आवश्यक बातोंका उत्तर दो, रुखाई और अभिमानका बर्ताव कभी न करो।

३२–पड़ोसियोंसे प्रेम करो और उनके कष्टोंमें उनका साथ दो।

३३–सबसे प्रेम रक्खो और मिल-जुलकर रहो, तुम ऐसा करोगी तो लोग भी समयपर तुम्हारे साथ ऐसा ही करेंगे।

३४–घरपर आये हुए पाहुनेका आदर-सत्कार और उसके लिये भोजनादिका प्रबन्ध शीघ्रतासे और प्रेमसे करो।

३५–किसी भी भूखे अतिथि-अभ्यागतको यथासाध्य घरसे खाली मत लौटाओ।

३६–सास-ससुर और पतिकी बुराई किसीके सामने कभी न करो।

३७–अपने घरका भेद कभी किसीसे न कहो। इससे लाभ तो होना कठिन है परन्तु भेद खुल जानेसे बुराई होना तो मामूली बात है।

३८–गहने-कपड़ोंका मोह कम करो, उन गरीबोंकी तरफ खयाल करो कि जिनको लाज रखनेके लिये कपड़ेके छोटे-छोटे टुकड़े भी कठिनतासे मिलते हैं।

३९–देवरानी-जेठानीके गहने-कपड़ोंसे ईर्ष्या या डाह न करो और उसी प्रकारके या उनसे बढ़िया गहने-कपड़े बनवा देनेके लिये घरवालोंसे हठ न करो।

४०–घरमें अपनेसे जो बड़ी स्त्रियाँ हों उन्हें नित्य प्रणाम करो।

४१–गहने-कपड़ोंसे सज-धजकर बाहर जानेकी आदत छोड़ दो। बजनेवाले गहने कभी मत पहनो, क्योंकि इससे दूसरोंका ध्यान तुम्हारी ओर खिंचता है।

४२—इतने जोरसे न बोलो कि जिसमें तुम्हारे शब्द घरसे बाहरतक सुनायी दें, बिना मतलब घरके दरवाजेपर खड़ी मत होओ; खिड़की या झरोखोंसे बाहरकी तरफ मत झाँको।

४३—व्यर्थ डोलना और बोलना छोड़ दो, बेमतलब दूसरोंके घरोंपर आना-जाना छोड़ दो, इससे महत्त्व घटता है, सत्कारमें कमी होती है तथा और भी कई दोष पैदा हो जाते हैं।

४४—किसी पुरुषके पास अकेली मत बैठो; जवान पिता, भाई और पुत्रके पास भी नहीं। अकेलेमें बड़े-बड़े तपस्वियोंके मन भी डिग जाते हैं।

४५—बहुत-से मनुष्योंके बीचसे न निकलो और न पुरुषोंकी भीड़में बैठो।

४६—मेले, झाँकी, जुलूस, भीड़-भाड़ और नाटक-सिनेमा आदिमें कभी मत जाओ।

४७—छोटे-बड़े सबका यथोचित सम्मान करो, जो कोई शिक्षाकी बात कहे उसे सुनो और मानो।

४८—किसीसे वैर न करो, यदि किसी कारणवश कभी किसीसे मनोमालिन्य हो जाय तो तुरंत उससे क्षमा माँग लो।

४९—गंदी पुस्तकें कभी मत पढ़ो। रामायण, गीता, मनुस्मृति और महाभारतादि सद्ग्रन्थोंको मन लगाकर पढ़ो।

५०—जहाँतक हो सके किसी परायी चीजको न मँगाओ और यदि किसी विशेष आवश्यकतामें मँगाओ तो काम निकलते ही उसे तुरंत वापस लौटा दो।

५१–तुम्हारी चीजको कोई दूसरा अपने कामके लिये माँगे तो कभी इन्कार मत करो, परन्तु वापस मँगवानेका भी खयाल रक्खो।

५२–मौका लगे तो किसी भी रोगीकी सेवा बड़े चावसे करो; न उकताओ, न घबड़ाओ और न घृणा करो।

५३–नाई, ब्राह्मण, पुरोहितानी या दलालोंके भरोसे ब्याह-शादीके सम्बन्ध कभी मत करो।

५४–बनावटी देवताओंको न पूजो, न उनकी मानता करो और न उनके लिये बच्चोंके बाल बढ़ाओ।

५५–पर्दा उतना ही करो जिससे स्वास्थ्य, लज्जा और कार्यमें हानि न हो। आजकल स्त्रियाँ अपने निकट-सम्बन्धियों-से तो पर्दा करती हैं पर दूसरोंके सामने खुले मुँह फिरती हैं। ऐसा ठीक नहीं। गैर लोगोंसे तो पर्दा अधिक करना चाहिये। लज्जा स्त्रीका भूषण है।

५६–कपड़ा ऐसा पहनो और ओढ़ो कि जिससे शरीरका कोई भी अंग खुला न रहे, शरीर कपड़ेके अंदरसे न दीखे, न बुरा लगे और शरीरकी रक्षा भी होती रहे। शरीरकी रक्षा हो परन्तु लाज न रहे ऐसे कपड़े कभी मत पहनो। जहाँतक बन पड़े विदेशी, मिलोंमें बने हुए और रेशमी वस्त्रोंका व्यवहार त्याग दो। विदेशी वस्त्रोंके व्यवहारसे देशकी बड़ी आर्थिक हानि होती है। साथ ही विदेशी और मिलोंके बने हुए कपडे प्रायः जानवरोंकी चर्बीसे सने रहते हैं। लाखों मन जानवरोंकी

चर्बी इसी काममें लगती है। और रेशमी वस्त्रोंमें तो जीते हुए असंख्य कीड़ोंकी हत्या होती है। इसलिये इन्हें छोड़कर जहाँ-तक हो सके चरखेसे कते हुए सूतके हाथसे बुने हुए कपड़े पहनो। इनमें चर्बी नहीं लगती, गरीब भाई-बहिनोंका पेशा बना रहता है। मजदूरीके पैसे मिल जानेसे गरीबोंका पेट भरता है और उन्हें पेटके लिये दुराचार नहीं करना पड़ता, जीव-हिंसा नहीं होती, पवित्रता बनी रहती है, लज्जा नहीं जाती और धर्म बचता है।

५७–जहाँतक हो सके इन पंद्रह स्त्रियोंसे सदा बचो–

१ वेश्या, २ व्यभिचारिणी, ३ पतिकी निन्दा करनेवाली, ४ पतिसे वैर रखनेवाली, ५ दुष्ट स्वभाववाली, ६ कुटनी, ७ चोर और जुवारिन, ८ टोना गण्डा करनेवाली, ९ आखा देखनेवाली, १० कर्कशा (सदा लड़नेवाली), ११ निर्लज्जा, १२ घमण्डिनी, १३ कटुवादिनी, १४ बकवाद करनेवाली, १५ कामोन्मादिनी।

५८–इन्द्रियाँ और मनको जीतनेकी चेष्टा करो। जीभके स्वादमें मत फँसो। चटोरापन त्याग दो।

५९–पति, पुत्र, परिवार, धन, रूप, गहने, कपड़े, मलिकाई और स्वास्थ्य आदि किसी वस्तुका घमण्ड न करो। संसारकी सारी वस्तुएँ नाश होनेवाली हैं, इनके लिये घमण्ड करना मूर्खता है।

६०–बालक और बालिकाओंको पढ़ानेका पूरा खयाल रक्खो।

६१—ऋतुकालके पहले तीन दिनोंमें किसीको स्पर्श न करो।

६२—पाप करनेमें सदा डरो, ईश्वर सर्वव्यापी है, वह तुम्हारे शरीर, मन और वाणीद्वारा होनेवाले सभी कार्योंको देखता है, उससे कुछ छिपा नहीं रह सकता; अतएव पाप करते समय उससे शरमाओ और उसका भय करो।

६३—लोभ और प्रतिष्ठाके लिये धर्म मत छोड़ो।

६४—दीनोंपर दया करो, परमात्माकी भक्ति करो, परमात्माके नामका जप करो और परमात्माके स्वरूपका ध्यान करो।

परिशिष्ट

सरला—बहिन! धर्मकी बातें तो तुमने थोड़ेसेहीमें बहुत कुछ समझा दीं, अब स्त्रियोंकी स्वास्थ्यरक्षा और बच्चोंके पालनके सम्बन्धमें कुछ खास-खास बातें समझा दो तो बड़ा उपकार हो।

सावित्री—तुमने बड़ी अच्छी बात पूछी, शरीररक्षा भी तो धर्म है; मन लगाकर सुनो, संक्षेपमें ही कहती हूँ। बड़े-बड़े महापुरुषोंका जन्म स्त्रियोंसे ही हुआ है। स्त्रियोंके स्वास्थ्यको बचानेकी बड़ी जरूरत है। स्त्रियोंके ज्यादा रोग प्रायः रज-सम्बन्धी ही हुआ करते हैं। इसलिये दूसरे रोगोंकी बाबत कुछ न कहकर इसीके सम्बन्धमें कुछ कह रही हूँ। भारतवर्षमें बारह-तेरह सालकी उम्रमें रजोदर्शन होने लगता है जो तन्दुरुस्त स्त्रियोंके प्रायः अट्ठाईसवें दिन शुरू हो जाता है और

तीनसे पाँच दिनोंतक जारी रहता है। रजोदर्शनके नियमोंका पालन न करनेसे ही बहुत-सी बीमारियाँ होती हैं।

सरला—रजोदर्शनके समय कौन-कौन-से नियमोंका पालन करना चाहिये ?

सावित्री—सुनो !

(१) स्वामीके पास कभी सोना नहीं चाहिये।

(२) किसी प्रकारका ज्यादा परिश्रम नहीं करना चाहिये।

(३) ठण्ढी जगहमें धरतीपर नहीं सोना चाहिये।

(४) जबतक स्राव रहे, नहाना बिलकुल नहीं चाहिये।

(५) पेटको सर्दी नहीं लगानी चाहिये।

(६) गाड़ियोंपर चढ़ना-उतरना, सीढ़ी चढ़ना, ऊँची जगहपर चढ़ना-उतरना और किसी भारी चीजको उठाना आदि भी बहुत हानिकारक है।

सरला—इन नियमोंके पालन न करनेसे क्या होता है ?

सावित्री—स्वामीके पास जानेसे इन्द्रिय-संयम रहना कठिन है। ऋतुस्रावके समय पुरुष-सङ्गसे स्त्रियोंके बड़ी कठिन बीमारियाँ हो जाती हैं, कमरमें पीड़ा होने लगती है, ऋतु-स्राव बढ़कर कई दिनोंतक जारी रहता है, शरीर कमजोर हो जाता है, उन्मादरोग (हिष्टीरिया) हो जाता है, अनियमित ऋतुसे सन्तान पैदा होनेमें रुकावट पड़ जाती है, प्रदर आदिके बुरे रोग भी प्रायः इसीसे होते हैं। इसके सिवा पुरुषको भी बड़ा नुकसान पहुँचता है, उसके प्रज्ञा, तेज, बल, नेत्र-

शक्ति और आयुका नाश होता है, अनेक प्रकारकी बीमारियाँ घेर लेती हैं। इसी तरह अधिक परिश्रम या चढ़ने-उतरने आदिसे भी ऋतुस्राव बढ़ जाता है।

सर्दी लगने या पेटमें ठण्ढ पहुँचनेसे ऋतुस्राव हठात् बंद हो जाता है जिससे अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं, कमर दुखना, सिरमें चक्कर आना, आँख और सिरका जलना, भूखका बंद हो जाना, आँखोंकी नजर घट जाना, अन्धी-तक हो जाना आदि रोग हो जाते हैं। हमारे त्रिकालदर्शी शास्त्रकारोंने रजस्वला स्त्रीके लिये अलग रहने, किसीको न छूने, अलग सोने, किसीको अपना मुँह न दिखाने आदिकी जो व्यवस्था कर दी है उससे धर्म और स्वास्थ्य-रक्षामें बड़ी भारी मदद मिलती है। उन सब नियमोंका पालन जरूर करना चाहिये।

सरला—अच्छा! अब गर्भकालके नियम भी बतला दो!

सावित्री—गर्भकालमें तो बड़ी सावधानीकी जरूरत है। स्त्रियाँ अगर चाहें और कोशिश करें तो नीरोग रहकर बिना किसी कष्टके भक्त, वीर, धीर सन्तान उत्पन्न कर सकती हैं।

गर्भकालमें क्या नहीं करना चाहिये?

(१) पति-सहवास कभी नहीं करना चाहिये।

(२) पतिके साथ एक बिछौनेपर नहीं सोना चाहिये। स्त्री-पुरुषोंके बिछौने तो साधारण अवस्थामें भी सदा अलग रखनेकी बड़ी जरूरत है। परन्तु गर्भकालमें तो इसकी खास जरूरत है।

(३) बोझ नहीं उठाना चाहिये, कूदना, दौड़ना, जोरसे चढ़ना, उतरना नहीं चाहिये ।

(४) बिना अच्छे वैद्यकी सलाहके कोई दवा नहीं लेनी चाहिये । कब्ज हो तो थोड़ा-सा शुद्ध अरंडीका तैल लेना हानिकर नहीं है ।

(५) चाय, काफी, भाँग आदि कोई भी नशैली चीज नहीं खानी चाहिये ।

(६) कपड़ा हल्का और साफ पहनना चाहिये । कमर कसकर साड़ी नहीं पहननी चाहिये ।

(७) लड़ना, झगड़ना, रोना, चिल्लाना आदिका सर्वथा त्याग करना चाहिये ।

क्या करना चाहिये ?

(१) सादा, हल्का, जल्दी पचनेवाला, पुष्टिकर, अल्पाहार करना चाहिये ।

(२) पानी साफ पीना चाहिये ।

(३) कोठा साफ रखना चाहिये ।

(४) शरीर ठीक हो तो रोज एक दफे नहाना जरूर चाहिये । परन्तु पानी अधिक गर्म या अधिक ठण्ढा न हो ।

(५) घरमें साधु-महात्मा, वीर पुरुषके चित्र रखने चाहिये।

(६) काम, क्रोध, हिंसा, शोक, मोह, लोभ, चोरी, दम्भ, असत्य, भय आदिसे बचकर क्षमा, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, शान्ति, आनन्द, विवेक, सन्तोष, अस्तेय, निष्कपटता, सत्य,

अभय आदि दैवी गुणोंकी भावना सर्वदा करनी चाहिये।

(७) व्यभिचारसम्बन्धी बातें कहने-सुनने और स्मरण रखनेसे सदा बचकर सती स्त्रियोंके चरितोंका श्रवण, मनन करना चाहिये।

(८) हो सके जहाँतक महाभारतके शान्तिपर्व, गीताजी, श्रीमद्भागवतके तीसरे और ग्यारहवें स्कन्ध, तुलसीकृत रामायण और भक्तमाल आदिकी चुनी हुई कथाएँ सुननी और उसकी आलोचना करनी चाहिये।

(९) भगवन्नामका जप सदा करना चाहिये।

(१०) दीनोंपर दयाका भाव सदा ही हृदयमें जाग्रत् रखना चाहिये।

सरला—इन नियमोंके पालनसे क्या होता है ?

सावित्री—परम कल्याण होता है। बहुत विस्तार करनेका तो समय नहीं है, इतना ही कहती हूँ कि यदि कोई बहिन मन लगाकर इन नियमोंको पाले तो ईश्वर-कृपासे वह प्रह्लाद, ध्रुव, नारद, हरिश्चन्द्र, बुद्ध, सीता, सावित्री-सरीखी सन्तानकी जननी होकर अपना और जगत्का बड़ा भारी कल्याण कर सकती है।

सरला—तुमने ये बातें कहाँसे सीखीं ? बहिन !

सावित्री—मेरी माताने ये सब नियम बतलाये थे। हमारे घरोंकी बूढ़ी स्त्रियाँ इन सब विषयोंमें इतनी ज्यादा जानकारी रखती थीं, जितनी अच्छे-अच्छे वैद्योंको नहीं होती। बहुत-से

लोग मेरी माताके पास स्त्रियोंकी बीमारी और बच्चोंके पालन-के सम्बन्धमें सलाह लेने आया करते थे। आजकल स्त्रियोंमें फैशन तो बढ़ रहा है लेकिन जीवन-निर्वाहकी जरूरी बातोंकी तरफ उनका खयाल बिल्कुल नहीं है, इसीसे डाक्टर-वैद्योंकी भरमार हो गयी है!

सरला—बहिन! तुमने बड़ा उपकार किया, अब कृपा कर प्रसूतकाल और बच्चोंके पालनसम्बन्धी कुछ खास-खास नियम और बतला दो।

सावित्री—प्रसव प्रकृतिकी स्वाभाविक क्रिया है। यदि शरीर तन्दुरुस्त हो तो परमेश्वरकी मायासे प्रसवकालमें विशेष कष्ट नहीं होता। किसी कारणवश प्रसवमें कष्ट होता हो तो अच्छे वैद्यकी सलाहसे उपचार करना चाहिये। प्रसूतका घर साफ,सुथरा और हवादार होना चाहिये। कम-से-कम हवा आने-जाने लायक बारियाँ उसमें जरूर होनी चाहिये। कपड़े साफ रखने चाहिये। जेर वगैरह काटनेके लिये जो दायी बुलायी जाय वह तेज, शान्त, धीर, अनुभवी होनी चाहिये। उसके हाथोंके नुँह कटाकर हाथ अच्छी तरह साफ करा देने चाहिये। प्रसूतिको अधिक सर्दी और अधिक गर्मी न लगने देनेका खयाल रखना चाहिये।

स्त्रीको चाहिये कि जबतक फिरसे रजस्वला न होने लगे तबतक पतिके पास न जाय। नहीं तो कम-से-कम चार महीने तो जरूर ही बचना चाहिये। जल्दी पुरुष-सहवाससे

दूध बिगड़ जाता है जिससे बच्चेको बड़ा नुकसान पहुँचता है, साथ ही पुरुष-संगसे स्त्री जल्दी रजस्वला होने लगती है, जिससे उसके रजमें विकार हो जाता है। और जल्दी-जल्दी गर्भ-धारणसे स्त्रीका स्वास्थ्य भी सदाके लिये बिगड़ जाता है।

अब बच्चोंके पालनके कुछ नियम सुनोः—

(१) बच्चेको साफ कपड़ोंमें रखना चाहिये, सर्दी-गर्मीसे बचाना चाहिये। सर्दी बच्चोंके लिये बहुत घातक हुआ करती है। रोज तैल लगाकर गरम पानीमें निचोड़े हुए गमछेसे उसका शरीर धीरे-धीरे पोंछ देना चाहिये।

(२) पहले दिन माताका स्तनपान कराना चाहिये। स्तनोंमें पहले दिन दूध नहीं उतरे तो भी बालकको स्तनपान करानेकी कोशिश करनी चाहिये। स्तनकी बोंटी बच्चेके मुँहमें लेनेसे दूध उतरने लगेगा। भगवान्‌की रचना अनोखी है, स्तनके साथ गर्भाशयका बड़ा सम्बन्ध है, स्तनपानसे इधर बच्चेको पुष्टि मिलती है, उधर माताके गर्भाशयका संकोच होता है जिससे माता रक्तस्रावकी भयानक पीड़ासे बच जाती है। माँका दूध बालकके लिये बड़ा हितकारी है, जिन बच्चोंको माँका दूध मिलता है वे सर्वथा नीरोग, बलवान् और दीर्घ-जीवी हो सकते हैं।

आजकल फेशनके फेरमें पड़कर कुछ शिक्षिता कहलाने-वाली स्त्रियाँ प्रकृतिके इस नियमको कुचलकर बच्चेको स्तनपान करानेमें अपने यौवनकी हानि समझती हैं। पर ऐसा करने-

वाली बच्चे और अपने स्वास्थ्यके प्रति बड़ा अन्याय और भयानक पाप करती हैं।

(३) बिना जरूरत स्तनपान नहीं कराना चाहिये। किस अवस्थामें कितना दूध पिलाना चाहिये, इसकी साधारण तालिका इस प्रकार है, माता और बच्चेके स्वास्थ्यके अनुसार इसमें कम-ज्यादा भी किया जा सकता है। प्रसवसे लेकर दस दिनतक हर दो-दो घण्टेपर एक बारमें आध छटाँक दूध पिलाना चाहिये। इसके बाद डेढ़ महीनेकी उम्रतक हर ढाई घण्टेपर पौन छटाँकसे एक छटाँकतक, फिर छः महीनेकी उम्र-तक तीन या साढ़े तीन घण्टेपर डेढसे दो छटाँकतक, छः महीनेके बाद नौ महीनेकी उम्रतक हर साढ़े तीन घण्टेपर तीन छटाँकतक और दस महीनेकी उम्रमें हर चार घण्टेपर चार छटाँकतक पिलाना चाहिये। बच्चेको वहींतक स्तनपान कराना उचित है जहाँतक रजोदर्शन न हो, रजोदर्शन बहुधा प्रसवसे आठ महीने बाद हुआ करता है। इसके बाद बच्चेको बाहरी खुराक देनी चाहिये।

(४) स्तनपान नियमसे कराना चाहिये। बे-नियम चाहे जब स्तनपान करनेसे बालकको पेटकी बीमारियाँ हो जाती हैं। हमारे शरीर बहुत मजबूत और तन्दुरुस्त हैं परन्तु एक साथ अधिक खाने, बार-बार अनियमितरूपसे खाने या कुपथ्य भोजनसे जब हमलोगोंको अजीर्ण, संग्रहणी और मन्दाग्नि आदि बीमारियाँ हो जाती हैं तब कोमल बच्चोंको बीमारी

होनेमें तो अचरज ही क्या है ? जो माताएँ एक बारमें ज्यादा दूध पिला देती हैं या किसी कारणवश जरा-सा रोते ही बच्चोंको स्तनपान कराने लगती है वे बहुत बड़ी भूल करती हैं। इससे अजीर्ण होकर बच्चोंके पेट फूल जाते हैं, दस्त-कै होने लगते हैं। उनका शरीर सदा रोगी रहने लगता है। बहुत-सी माताएँ तो जब बच्चा अजीर्णके कारण पेट दुखनेसे रोता है तब अज्ञानवश जबरदस्ती उसके मुँहमें स्तनकी बोंटी देकर उसे दूध पिलाने लगती हैं, जिससे उसकी बीमारी और भी बढ़ जाती है। इसलिये दूध नियमित समयपर ही पिलाना चाहिये।

(५) कई स्त्रियाँ एक भारी भूल और करती हैं, बच्चोंका रोना बंद करनेके लिये उन्हें अफीम दिया करती हैं, जिससे उनके शरीरको बड़ा भारी नुकसान पहुँचता है। अतः माताओंको चाहिये कि भूलकर भी बच्चोंको अफीम देकर सुलानेकी आदत न डालें।

(६) सोते समय बच्चेके मुँहमें स्तन नहीं रखना चाहिये इससे दूध चारों तरफ बिखरकर स्तनमें और बच्चेके मुँहपर छाले पड़ जाते हैं।

(७) दूध पिलानेके पहले और पीछे स्तनोंको साफ जलसे धो डालना चाहिये, नहीं तो उनमें छाले पड़ जायँगे।

(८) क्रोध, उत्तेजना या शोकके समय स्तनपान नहीं कराना चाहिये। प्रेम, शान्ति, उत्साह और आनन्दके समयका स्तनपान बच्चेके लिये अमृत और क्रोध, उत्तेजना और शोकके

समयका स्तनपान विष होता है। बड़े प्यारसे जैसे गौ बछड़ेको चाटती हुई स्तनपान कराती है, इसी तरह बच्चेके सिरपर हाथ फेरते हुए उसे स्तनपान कराना चाहिये।

(९) माता बीमार हो तो स्तनपान नहीं करवाना चाहिये, ऐसी अवस्थामें यदि कोई अपनी जातिकी अच्छी नीरोग, शान्त, सुशील, मझले कदकी धाय मिल जाय तब तो अच्छी बात है, नहीं तो गौका ताजा दूध, आधा पानी और थोड़ी-सी चीनी मिलाकर पहले बताये हुए नियमसे पिलाना चाहिये। दूध पिलाते समय हर बार गरम करना चाहिये। ज्यादा गरम और बिल्कुल ठण्ढा दूध नहीं पिलाना चाहिये। चीनी कम डालनी चाहिये नहीं तो कृमि पड़ जायँगे और दूधमें आधा पानी जरूर मिलाना चाहिये। दूध काँच या मिट्टी-के साफ बर्तनमें रखना चाहिये और उसको दूध डालनेके पहले और निकालनेके बाद धोकर साफ कर लेना चाहिये। विलायती दूध पिलाना बहुत हानिकर है।

(१०) लड़के-लड़कीके पालनमें भेद-भाव नहीं रखना चाहिये। समान प्यारसे दोनोंका पालन-पोषण करना चाहिये।

(११) लड़कोंको दवाकी आदत नहीं डालनी चाहिये। सहसा जुलाब नहीं देना चाहिये, माँका स्वच्छ दूध ही उसका कोठा साफ करनेके लिये काफी है।

(१२) बच्चोंको केवल गोदमें ही न रखकर सर्दीसे बचाकर जमीनपर भी लेटने देना चाहिये।

(१३) बच्चोंके सामने माता-पिताको बुरी बातें या कुचेष्टाएँ कभी नहीं करनी चाहिये।

(१४) बच्चोंके रखने और खेलानेके लिये अलग नौकर-नौकरानियाँ रखने पड़ें तो वे बहुत ही सच्चरित्र होने चाहिये, नहीं तो उनके संगसे बच्चोंके हृदयपर बुरे संस्कार पड़ जायँगे।

(१५) बच्चोंको गहने भूलकर भी नहीं पहनाने चाहिये। इससे बच्चोंके शरीर और चरित्र-गठनमें बड़ी बाधा पहुँचती है, जानकी जोखिम तो सदा बनी ही रहती है। तंग कपड़े नहीं पहनाने चाहिये, जहाँतक हो, बच्चोंको नंगे बदन रहनेकी आदत डालनी चाहिये।

बहिन सरला! अब साँझ होनेको आयी, तुम घर जाओ, आज यहींतक! फिर कभी मिलनेसे आगे और बातें भी हो सकती हैं। राम राम!

सरला—बहिन! तुम्हारे इस उपकारका बदला मैं कभी नहीं चुका सकती। तुम-सरीखी बुद्धि हम सब स्त्रियोंकी हो जाय तो आज ही सब तरहसे सुख-शान्ति हो सकती है। मन तो नहीं करता, पर तुम्हारे आज्ञानुसार मैं अभी जाती हूँ। कृपा और प्रेम सदा इसी तरह बनाये रखना। अच्छा, राम राम!

हरिः ॐ तत्सत् हरिः ॐ तत्सत् हरिः ॐ तत्सत्